स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप एवं बी.के महेश भाई, अकाउण्टस् आफिस, पाण्डव भवन, साकार एवं अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहे है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 85 से अधिक विषयों पर साकार एवं अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'ज्वालामुखी योग एवं निराकारी-फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल'** एक है।

प्रस्तावना

अव्यक्त बापदादा ने पहले हमको निराकारी, देवता, पूज्य, ब्राह्मण, फरिश्ता अर्थात् सारे सृष्टि-चक्र के हमारे पाँच स्वरूपों की एक्सरसाइज़ करने के लिए कहा था, फिर हमको अपने निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की एक्सरसाइज़ करने के लिए कहा। बाबा ने हमको अपने निराकारी, साकारी, फरिश्ता स्वरूपों की ड्रिल के विषय में भी कहा है। बाबा ने हमको सारे सृष्टि-चक्र के विभिन्न महिमापूर्ण (Graceful) स्वरूपों का भी ज्ञान दिया है और उनकी ड्रिल करने के लिए कहा है, जिसमें बाबा ने हमको हमारे परमधाम में चमकते हुए स्टार रूप में ज्ञान सूर्य बाबा के साथ का, फिर सतयुग में सर्व सतोप्रधान सुख-साधनों से सम्पन्न देवता स्वरूप का, फिर द्वापर के पूज्य स्वरूप का, फिर सर्वोत्तम ब्राह्मण स्वरूप और अन्त में रिटर्न जर्नी अर्थात् फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल के लिए कहा है। इस तरह से बाबा हमको हमारे विभिन्न स्वरूपों का अनुभव कराता है और उनके अनुभव की अथॉरिटी बनने की प्रेरणा देता है। तो हमको इन सबके विषय में यथार्थ ज्ञान होना, अनुभव होना अति आवश्यक है, तब ही इन सबकी सफलतापूर्वक ड्रिल करके उसका सच्चा सुख अनुभव कर सकेंगे। इसलिए ही यहाँ इसके विषय में कुछ विचार रखे गये है।

ज्वालामुखी योग एवं निराकारी-फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल

विषय सूची

विषय पेज नं.

ज्वालामुखी योग : अव्यक्त बापदादा के महावाक्य 8

निराकारी और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास की ड्रिल 28

संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रॉलब्ध है

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति और उसके गुण-धर्म

Q. निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति कैसी है, उसके गुण-धर्म क्या है?

Q. हम निराकार आत्मा हैं और निराकार शिवबाबा कि शक्ति रूपी किरणें हमारे ऊपर आ रही हैं, उनकी छत्रछाया हमारे ऊपर है - क्या यह स्मृति करना या इस अनुभूति की परिकल्पना करना निराकारी स्थिति की है, ऐसे ही परिकल्पना करना कि बापदादा का हाथ हमारे सिर के ऊपर है, जिससे हमको शक्ति... मिल रही है - यह फरिश्ता स्थिति है?

Q. क्या बाहर जो गीत बज रहा है, उसे सुनते या हेड-फोन से सुन रहे हैं या और कुछ सुन या देख रहे हैं, तो हम निराकारी या फरिश्ता स्थिति की अनुभूति में हैं, उस समय हम निराकारी या फरिश्ता स्थिति का अनुभव कर सकते हैं? 33

Q. क्या शान्ति में स्थित होकर अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप का ध्यान करना या फरिश्ता स्वरूप का ध्यान करना या याद करने की स्थिति बाबा ने जो ड्रिल बताई है, उसका यथार्थ रीति अभ्यास है?

Q. अब हम इस निराकारी और फरिश्ता स्थिति की ड्रिल सारे दिन में 12-12 बार कैसे करें?

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास के लिए साधन और साधना 37

Q. बाबा ने जो ड्रिल बताई, उसके लिए साधन और साधना क्या है अर्थात् उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है?

Q. बाबा ने हमको परम सत्य का ज्ञान दिया है, उसका हमारी इस निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति के अभ्यास में क्या महत्व है और उस ज्ञान को पाकर हमारा कर्तव्य क्या है अर्थात् हमारा पुरुषार्थ क्या है और क्या होना चाहिए? 38

Q. गायन है कि सायंकाल के सन्धिकाल अर्थात् नुमा शाम को फरिश्ते चक्कर लगाते हैं, तो वे फरिश्ते कौन हैं? क्या वे कोई चेतन आत्मायें हैं, जिनका स्वतन्त्र अस्तित्व है या केवल गायन मात्र ही है? इस गायन का भी आधार क्या है अर्थात् इन फरिश्तों की बात कहाँ से निकली है?

Q. सूक्ष्मवतन में फरिश्ते रहते हैं, तो क्या सब आत्मायें फरिश्ता स्वरूप में सूक्ष्मवतन में जायेंगी या केवल ब्रह्मा बाबा का और कुछ निमित्त आत्माओं का ही पार्ट है? 42

Q. बाबा ने कहा है - सारा बोझ बाबा को दे दो और तुम लाइट-माइट स्वरूप फरिश्ता बन जाओ, बाप बच्चों का बोझ लेने के लिए ही आये हैं। तो बोझ बाबा को देने का विधि-विधान क्या है और उसका इस निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति के अभ्यास में क्या महत्व है?

Q. आत्मा पर बोझ क्या है और अपना बोझ बाबा को देने का विधि-विधान क्या है?

निराकारी स्थिति अर्थात् सदा लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति 46
निराकारी स्थिति और साकार तन में निराकारी स्थिति का प्रभाव और दोनों में अन्तर
फरिश्ता स्थिति अर्थात् बापदादा के समान प्रकाशमय काया और बापदादा के साथ की स्थिति... 47
निराकारी-फरिश्ता स्थिति का अभ्यास और विश्व-नाटक का ज्ञान 49
निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति तथा रोग-शोक अर्थात् कर्मभोग ... 50
Q. निराकार और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास का हमारे भूतकाल, वर्तमान और भविष्य से क्या सम्बन्ध है?
Q. निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के सफल अभ्यास के पहले किस अभ्यास को करें, तो दूसरे में सुविधा हो?
Q. निराकार और फरिश्ता स्वरूप का हमारा अभ्यास सफल है या सफल होगा, उसका दर्पण अर्थात् कसौटी **(Test Stone or criteria)** क्या है?
Q. हम दूसरों की स्थिति को और दूसरे हमारी स्थिति को और हम स्वयं भी अपनी स्थिति को सहज परख सकें कि हमारा निराकारी स्थिति का और फरिश्ता स्थिति का अभ्यास सफल है या नहीं है, उसका दर्पण क्या है?
Q. आत्मा पर बोझ क्या है और अपना बोझ बाबा को देने का विधि-विधान क्या है?
निराकार और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन ... 52
निराकार रूप की और फरिश्ता रूप की मूल स्थिति और साकार देह में रहते उस स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन 53

ज्वालामुखी का स्वरूप और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ 55
Q. ज्वालामुखी योग के अभ्यास तथा निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल पर बाबा क्यों जोर देते हैं, उसका हमारे इस जीवन में क्या विशेष महत्व है?
ज्वालामुखी योग और ज्वालामुखी स्थिति 56
Q. क्या ज्वालामुखी योग और ज्वालामुखी स्थिति में कोई अन्तर है? यदि है तो वह अन्तर क्या है?
यथार्थ ज्वालामुखी योग की कसौटी
Q. अब प्रश्न ये है कि ज्वालामुखी योग है क्या और उसका आधार क्या है?
Q. देह और देह की दुनिया भूल जाये और एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद की स्थिति में स्थित हो जायें, उसका आधार क्या है?
Q. ज्वालामुखी योग से फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का क्या सम्बन्ध है?
Q. क्या हेडफोन लगाकर सदा गीत-क्लास आदि सुनते रहना ज्वालामुखी योग है? यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो उसका क्या लाभ है?
Q. विचार करके निर्णय करो क्या निम्नलिखित स्थितियाँ ज्वालामुखी योग की है?
ज्वालामुखी योग के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ 62

स्वमान एवं स्थितियों की अनुभूति और उनकी अथॉरिटी 64
स्वमान 65

अनादि स्वरूप के स्वमान
आदि स्वरूप के स्वमान
मध्यकाल में
A. पूज्य स्वरूप के स्वमान
B. पुजारी स्वरूप के स्वमान
संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप के स्वमान
फरिश्ता स्वरूप अर्थात् रिटर्न जर्नी स्वरूप के स्वमान
विचारणीय तथ्य 71
Q. अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी है तो अभी हमको किन-किन बातों के अनुभव की अथॉरिटी बनना है?
पुरुषोत्तम संगमयुग प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ 73
ज्ञान पक्ष
अनुभूति पक्ष
निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल और ज्वालामुखी योग और अनुभव की अथॉरिटी में सम्बन्ध
विविध प्रश्न और उनके सम्भावित उत्तर 81
Q. बाप समान सम्पन्न स्वरूप क्या है?
Q. सम्पन्न और सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप क्या है?
Q. निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास सफलता पूर्वक हो रहा है? यदि नहीं तो उसका कारण क्या है?
Q. निराकारी स्वरूप और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप की स्थिति और 11.02.10 की अव्यक्त बापदादा की मुरली में क्या सम्बन्ध है?
Q. परमधाम में निराकारी स्थिति, सूक्ष्मवतन की फरिश्ते स्वरूप की स्थिति और मास्टर सर्वशक्तिवान ब्राह्मण स्वरूप की स्थिति की अनुभूति कैसी होगी, उसके गुण-धर्म क्या होंगे?
Q. बाबा ने यह जो ड्रिल बताई और पहले भी इसके सम्बन्ध में अपने पाँच स्वरूपों की ड्रिल बताई, निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल बताई - इन सबका सफलतापूर्वक अभ्यास कौन कर सकता है और कैसे कर सकता है? 84
Q. अव्यक्त बापदादा ने 24.10.10 की मुरली में कहा है - तुमको सर्वात्माओं को किरणें देने की सेवा अवश्य करनी है, तो क्या निराकारी अर्थात् निर्संकल्प स्थिति में आत्मा दूसरी आत्माओं को किरणें दे सकती है या दूसरों से किरणें ले सकती है?
निराकारी-फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल और ज्वालामुखी योग एवं अनुभव की अथॉरिटी
विविध ईश्वरीय महावाक्य 85

ज्वालामुखी योग :

अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

ज्वालामुखी योग

ज्वालारूप देवी

स्नेह को देखते हैं तो ड्रामा याद आ जाता है। ड्रामा जब बीच में आता है तो साइलेन्स हो जाते हैं। स्नेह में आये तो क्या हाल हो जायेगा। नदी बन जायेंगे। लेकिन नहीं, ड्रामा। जो कर्म हम करेंगे वह फिर सभी करेंगे, इसलिए साइलेन्स। अगर सभी साथ होते तो जो अन्तिम कर्मातीत अवस्था का अनुभव था वह ड्रामा प्रमाण और होता। लेकिन था ही ऐसे इसलिए थोड़े ही सामने थे। सामने होते भी जैसे सामने नहीं थे। स्नेह तो वतन में भी है और रहेगा। अविनाशी है ना। लेकिन जो सुनाया कि स्नेह को ड्रामा साइलेन्स में ले आता है। और यही साइलेन्स, शक्ति को लायेगी। फिर वहाँ साकार में मिलन होगा। अभी अव्यक्त रूप में मिलते हैं, फिर साकार रूप में सतयुग में मिलेंगे। वह सीन तो याद आती है ना। खेलेंगे, पाठशाला में आयेंगे, मिलेंगे। आप नूरे रत्न सतयुग की सीनरी वतन में देखते रहते हो। जो बाप देखते हैं वह बच्चे भी देखते रहते हैं और देखते जायेंगे।

अब तो ज्वाला रूप होना है। आपका ही ज्वाला रूप का यादगार है। पता है, ज्वाला देवी भी है, वह कौन है? यह सभी शक्तियों को ज्वालारूप देवी बनना है। ऐसी ज्वाला प्रज्जवलित करनी है। जिस ज्वाला में यह कलियुगी संसार जलकर भस्म हो जायेगा। अच्छा

(02.02.1969)

साक्षात्कार मूर्त - आकारी और अलंकारी

इस ग्रुप में एक तो शक्तिपन का पहला गुण निर्भयता और दूसरा विस्तार को एक सेकण्ड में समेटने की युक्ति भी सिखाना। एकता और एकरस। अनेक संस्कारों को एक शुद्ध संस्कार कैसे बनायें - यह भी इस भट्टी में सिखाना है। कम समय और कम बोलना लेकिन सफलता अधिक हो। यह भी तरीका सिखाना है। सुनना और स्वरूप बन जाना है। सुनना अधिक और स्वरूप बनना कम नहीं। सुनते जाना और बनते जाना। अब साक्षात्कार मूर्त बनकर जाना, वाचा मूर्ति नहीं। जो भी आप सभी को देखे तो आकारी और अलंकारी देखे। सेन्स बहुत है लेकिन अब क्या करना है? ज्ञान का जो इसेन्स है उसमें रहना है। सेन्स को इसेन्स में लगा देना है। तब ही जो बापदादा उम्मीद रखते हैं वह प्रत्यक्ष दिखायेंगे। इसेन्स को जानते हो ना। जो इस ज्ञान की आवश्यक बातें हैं वही इसेन्स है। अगर वह आवश्यक बातें धारण कर लो तो सर्व आवश्यकताएं पूरी हो जायेंगी। अभी कोई-न-कोई आवश्यकताएं हैं। लेकिन इन आवश्यकताओं को सदा के लिए पूर्ण करने के लिए दो आवश्यक बातें हैं। जो

बताई - आकारी और अलंकारी बनना। आकारी और अलंकारी बनने के लिए सिर्फ एक शब्द धारण करना है। वह कौन-सा शब्द है जिसमें आकारी और अलंकारी दोनों आ जायें ? वह एक शब्द है लाइट। लाइट का अर्थ एक तो ज्योति भी है और लाइट का अर्थ हल्का भी है। तो हल्कापन और प्रकाशमय भी। अलंकारी भी और आकारी भी। ज्योति स्वरूप भी, ज्वाला स्वरूप भी और फिर हल्का, आकारी। तो एक ही लाइट शब्द में दोनों बातें आ गई ना। इसमें कर्तव्य भी आ जाता है। कर्तव्य क्या है ? लाइट हाउस बनना। लाइट में स्वरूप भी आ जाता है। कर्तव्य भी आ जाता है।

मन, वाणी, कर्म से सरलता और सहनशीलता यह दोनों आवश्यक हैं। अगर सरलता है सहनशीलता नहीं तो भी श्रेष्ठ नहीं। इसलिए सरलता और सहनशीलता दोनों साथ-साथ चाहिए। अगर सहनशीलता के बिना सरलता आ जाती है तो भोलापन कहा जाता है। सरलता के साथ सहनशीलता है तो शक्ति स्वरुप कहा जाता है। शक्तियों में सरलता और सहनशीलता दोनों ही गुण चाहिए। अभी की रिजल्ट में यही देखते हैं कि कहाँ सहनशीलता अधिक है कहाँ सरलता अधिक है। अब इन दोनों को समान बनाना है। मधुरता भी चाहिए। शक्तिरूप भी चाहिए। देवियों के चित्र बहुत देखते हैं तो उनमें क्या देखा है ? जितना ज्वाला उतनी शीतलता। कर्तव्य ज्वाला का है। सूरत शीतलता की है। यह है अन्तिम स्वरूप।

(05.04.1970)

बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति

क्या इन्तजाम जोर-शोर से कर रहे हो या जैसे दुनियावी लोग कहते हैं, कि जो होगा सो देखा जावेगा, ऐसे ही आप इन्तजाम करने के निमित्त बनी हुई आत्माएँ भी, यह तो नहीं सोचती हो, कि जो होगा सो देखा जावेगा ? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। अब तो इतना बड़ा कार्य करने के लिए खूब तैयारी चाहिए, पता है कि क्या तैयारी चाहिए ? क्या शंकर को कार्य कराना है ? उसको ही तो नहीं देखते हो कि कब शंकर विनाश करावेंगे ? विनाश ज्वाला प्रज्जवलित कब और कैसे हुई ? कौन निमित्त बना ? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने ? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्जवलित करने वाले कौन हुए ? बाप और आप साथ-साथ है न ? तो जो प्रज्जवलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को ? शंकर समान ज्वाला-रुप बन कर प्रज्जवलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। जब कोई एक अर्थी को भी जलाते हैं तो जलाने के बाद बीच-बीच में अग्नि को तेज किया जाता है, तो यह विनाश

ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है। इनको भी सम्पन्न करने के लिए निमित्त बनी हुई आत्माओं को तेज करने के लिए हिलाना पड़े-कैसे हिलावें ? हाथ से व लाठी से ? संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज करना पड़े, क्या ऐसा ज्वाला रुप बन, विनाश ज्वाला को तेज करने का संकल्प इमर्ज होता है या यह अपना कार्य नहीं समझते हो ?

ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है। वह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दु:खी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिए। क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।

अब जितना ही, बेहद के विशाल स्वरुप की सर्विस तीव्र रुप से करते जा रहे हो इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में अल्पकाल के लिए होगी। तो अपने सुख से वैराग्य उत्पन्न करेगी। तब ही वैराग्य के बाद समाप्ति होगी। अपने आप से पूछो कि क्या हमारे अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति रहती है ? जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है ? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे। अब अपने कार्य को समेटना शुरु करो। जब अभी से समेटना शुरु करेंगे तब ही जल्दी सम्पन्न कर सकेंगे। समेटने में भी टाइम लगता है। जब कोई कार्य अथवा दुकान आदि समेटनी शुरु करते हैं, तो क्या किया जाता है ?-सेल करते हैं। जब सेल लिख देते हैं तो वह सामान जल्दी-जल्दी समाप्त हो जाता है। तो यह फेयर भी क्या है ? यह भी सेल लगाया है ना, ताकि जल्दी-जल्दी सबको सन्देश मिल जाए। जो खरीदना है, वह खरीद लो, नहीं तो उल्हना न रह जाए। अभी क्या करना है ? कार्य समेटना अर्थात् स्वयं के लगाव को समेटना है। अगर स्वयं को सर्व तरफ से समेट कर एवर-रेडी बनाया तो आपके एवर-रेडी बनने से विनाश भी रेडी हो जायेगा। जब आग प्रज्जवलित करने वाले ही शीतल हो बैठ जावेंगे तो आग क्या होगी ? तो आग मध्यम पड़ जावेगी ना ? इसलिए अब ज्वाला रुप हो अपने एवर-रेडी बनने के पॉवरफुल संकल्प से विनाश ज्वाला को तेज करो। जैसे दु:खी आत्माओं के मन से यह आवाज शुरु हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे

ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन से यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी, समझा ?

पालना तो की, अब कल्याणकारी बनो और सबको मुक्त कराओ। विनाशकारियों की कल्याणकारी आत्माओं का सहयोग चाहिए। उनके संकल्प का इशारा चाहिये। जब तक आप ज्वालारुप न बने, तब तक इशारा नहीं कर सकते। इसलिये अब स्वयं की तैयारी के साथ-साथ विश्व के परिवर्तन की भी तैयारी करो। यह है आपका लास्ट कर्त्तव्य क्योंकि यही शक्ति स्वरुप का कर्तव्य है। स्वयं तो नहीं घबराते हो न ? विनाश होगा कि नहीं होगा, क्या होगा और कैसे होगा ? यह समझने के बजाए अब ऐसा समझो कि यह हमारे द्वारा होना है। यह जानकर अब स्वयं को शक्ति स्वरुप बनाओ, स्वयं को लाइट हाउस और पॉवर हाउस बनाओ। अच्छा, क्या हर बात में आप निश्चय बुद्धि हो ?

(03.02.1974)

ज्वाला देवी का पार्ट

आप में अब यह नवीनता दिखाई दे। साधारण बोल नजर न आयें, ऊपर से आकाशवाणी हो रही है, बस ऐसा अनुभव हो। इसलिये कहा कि अब ज्वालामुखी बनने का समय है। अब आपका गोपीपन का पार्ट समाप्त हुआ। महारथी जो आगे बढ़ते जा रहे हैं, उनका इस रीति सर्विस करने का पार्ट भी ऑटोमेटिकली बदली होता जाता है। पहले आप लोग भाषण आदि करती थीं और कोर्स कराती थीं। अभी चेयरमैन के रुप में थोड़ा बोलती हो, कोर्स आदि आपके जो साथी हैं, वह कराते हैं। अभी इस समय, कोई को आकर्षण करना, हिम्मत और हुल्लास में लाना, यह सर्विस रह गई है, तो फर्क आ जाता है ना ? इससे भी आगे बढ़ कर यह अनुभव होगा जैसे कि आकाशवाणी हो रही है। कहेंगे यह कोई अवतार हैं-और यह कोई साधारण शरीरधारी नहीं हैं। अवतार प्रगट हुए है। जैसे कि साक्षात्कार में अनुभव करते-करते देवी प्रगट हुई है। महावाक्य बोले और प्राय:लोप। अभी की स्टेज व पुरुषार्थ का लक्ष्य यह होना है। आप लोगों का शुरु में था-शीतला देवी का पार्ट। अभी है-ज्वाला देवी का पार्ट। पहले स्नेह से, समीप सम्बन्ध में आये और अब फिर, शक्ति स्वरुप बनना है। अभी सिर्फ गुण और स्नेह का प्रभाव है या नॉलेज का प्रभाव है, लेकिन साक्षात्मूर्त अनुभव करे कि यह कोई साधारण शक्ति नहीं है। जैसे सूर्य की किरणें फैलती हैं, वैसे ही मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर शक्तियों व विशेषताओं रुपी किरणें चारों ओर फैलती अनुभव करें। 'मैं विघ्न-विनाशक हूँ', इस स्मृति की सीट पर स्थित होकर कारोबार चलायेंगे तो विघ्न सामने तक भी नहीं आवेंगे। अच्छा !

(15.09.1974)

जाना है अर्थात् उपराम अर्थात् साक्षी

विश्व-परिवर्तन के आधारमूर्त स्वयं को परिवर्तन किया हुआ अनुभव करते हो? अगर आधारमूर्त्त सम्पूर्ण परिवर्तन की अभी स्वयं में कमी महसूस करते हैं तो फिर विश्व-परिवर्तन कैसे होगा? आधारमूर्त स्वयं अपने लिये ही कुछ समय की आवश्यकता समझते हैं या विश्व-परिवर्तन के लिये अभी समय चाहिए। यह संकल्प उत्पन्न होता है? आधारमूर्त्त के दृढ़ संकल्प में कभी हलचल के संकल्प रहते हैं तो विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं में कभी जोश, कभी होश आ जाता है। आधारमूर्त्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है। तो अपने-आप से पूछो कि प्रेरक शक्ति-सेना का संकल्प दृढ़ निश्चय-बुद्धि है और स्वयं एवर रेडी हैं? जैसे यज्ञ रचने के निमित ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्जवलित हुई यह जो विनाशज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते, तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है। कारण? क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधारमूर्त्त आत्माएँ अभी स्वयं ही सदा ज्वाला रूप नहीं बनी हैं। ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प स्मृति में नहीं रहता है।

ज्वाला-रूप बनने का मुख्य और सहज पुरुषार्थ कौनसा है? (मेरा तो एक शिव बाबा)। यह स्मृति सदा रहे, इसके लिए भी कौनसा पुरुषार्थ है? अब लास्ट विशेष पुरुषार्थ कौन-सा रह गया है? (उपराम अवस्था)। यह तो है रिजल्ट। लेकिन उसका भी पुरुषार्थ क्या है? (न्यारापन) न्यारापन भी किससे आयेगा - कौन-सी धुन में रहने से? धुन यही रहे कि अब वापिस घर जाना है - जाना है अर्थात् उपराम। जाना है-जहाँ जाना है वैसा पुरुषार्थ स्वत: ही चलता है। जब अपने निराकारी घर जाना है तो वैसा अपना वेश बनाना होता है। तो इस नये वर्ष का विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिए कि वापिस जाना है और सबको ले जाना है। इस स्मृति से स्वत: ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से उपराम, अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी बन जायेंगे व बाप-समान बन जायेंगे। सर्व को सदा ज्वाला-रूप दिखाई देंगे, तब ही यह विनाश ज्वाला भी आपके ज्वाला-रूप के साथ-साथ स्पष्ट दिखाई देगी। जितना स्थापना के निमित्त बने ज्वाला-रूप होंगे उतना ही विनाश-ज्वाला रूप में प्रत्यक्ष होगा। इस दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ तब विनाश-ज्वाला भड़केगी। अभी शीतल रूप में हैं, क्योंकि आधारमूर्त्त भी पुरुषार्थ में शीतल हैं। संगठन रूप का ज्वाला-रूप विश्व के विनाश का कार्य सम्पन्न करेगा।

अल्प आत्माओं का दृढ़ संकल्प अल्पकाल के लिये कहीं-कहीं विनाशज्वाला

भड़काने के निमित्त बना है। लेकिन महाविनाश, और विश्व-परिवर्तन - संगठन के एक श्रेष्ठ संकल्प के सिवाय सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिये इस वर्ष में अपनी लास्ट स्टेज, सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ। तब विनाश के नजारे और साथ-साथ नई दुनिया के नजारे स्पष्ट दिखाई देंगे। सबको इस वर्ष यह पुरुषार्थ करना है। इस लास्ट पुरुषार्थ से ही स्वयं की और विनाश की गति फास्ट होगी।

(16.01.1975)

ज्वाला से ज्वाला प्रज्वलित होगी

संगठित रूप में, ऐसे विशेष पुरुषार्थ की लेन-देन और याद की यात्रा के प्रोग्राम होने चाहिऐं। विशेष पुरुषार्थ अथवा विशेष अनुभवों की आपस में लेन-देन हो। ऐसा संगठन पाण्डवों का होना चाहिए। ऐसे विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहे तो फिर देखो विनाश ज्वाला को कैसे पंखा लगता है। योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी। वह है विनाश-ज्वाला, यह है योग ज्वाला। जो ज्वाला से ज्वाला प्रज्वलित होगी। आप लोगों के योग का साधारण रूप है तो विनाश ज्वाला भी साधारण है। संगठन पॉवरफुल हो। जैसे जब कोई चीज बनती है तो उसमें पानी चाहिए, घी चाहिए और नमक भी चाहिए, नहीं तो वह चीज़ बन न सके। वैसे हर-एक में अपनी-अपनी विशेषता है लेकिन यहाँ तो सर्व की विशेषताओं का संगठन चाहिए। क्योंकि समय भी अब चैलेन्ज कर रहा है ना। अच्छा!

(09.12.1975)

देने वाला दे, लेने वाला थक जाये

प्रेरणा लेने वाले तो तैयार हैं लेकिन प्रेरणा देने वालों का क्या हाल है? वैसे कहावत है - 'देने वाला दे, लेने वाला थक जाये'। लेकिन इस बात में लेने वाले, न मिलने के कारण थक रहे हैं। लेने वाले लेने के लिए तैयार हैं और देने वाले स्वयं में ही अब तक लगे हुये हैं। तो ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों का पोतामेल क्या हुआ है? वो जानते होया सुनायें? ब्राह्मणों के रजिस्टर में विशेषता क्या देखी? विश्व-परिवर्तन व विश्व-कल्याण की शुभ भावना मैजॉरिटी के पास इमर्ज है, लेकिन चलते-चलते जैसे यादवों की स्पीड क्वेश्चन-मार्क्स (?) के कारण तीव्र नहीं होती, ऐसे ब्राह्मणों की श्रेष्ठ भावना का प्रत्यक्ष फल प्राप्त होने वाला ही होता है तो बीच में कोई-न-कोई रॉयल रूप की कामना शुभ कामना को मर्ज कर देती है। तो ब्राह्मणों की गतिविधि में शुभ भावना और रॉयल रूप की कामना - इन दोनों की कलाबाज़ी चल रही है। जैसे पके हुये फल को पंछी समाप्त कर देते हैं वैसे भावना के प्राप्त हुये फल को कामना रूपी

पंछी समाप्त कर देता है। तो ब्राह्मणों के परिवर्तन करने की विधि सिद्धि-स्वरूप न बनने का कारण भावना बदल 'कामना' हो जाना है। इसलिये पुरुषार्थ ज्वाला रूप में नहीं होता है। ब्राह्मणों का ज्वाला-रूप विनाश-ज्वाला को प्रज्वलित करेगा। इसलिये ब्राह्मणों के पोतामेल में अब लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है। यादवों का कार्य जैसे सम्पन्न हुआ ही पड़ा है, पाण्डवों का कार्य सम्पन्न होने वाला है। पाण्डवों के कारण यादव रुके हुए हैं। पाण्डवों की श्रेष्ठ शान, रूहानी शान की स्थिति यादवों के परेशानी वाली परिस्थिति को समाप्त करेगी। तो अपनी शान से परेशान आत्माओं को शान्ति और चैन का वरदान दो। समझा? तीनों का पोतामेल सुना? अच्छा!

(02.02.1976)

ज्वाला-स्वरूप अर्थात् लाइट-हाउस और माइट-हाउस स्थिति

प्रत्यक्षता वर्ष मना रहे हो ना। बाप को प्रत्यक्ष करने से पहले स्वयं में (जो स्वयं की महिमा सुनाई) इन सब बातों की प्रत्यक्षता करो, तब बाप को प्रत्यक्ष कर सकेंगे। यह वर्ष विशेष ज्वाला-स्वरूप अर्थात् लाइट-हाउस और माइट-हाउस स्थिति को समझते हुए इसी पुरुषार्थ में रहो - विशेष याद की यात्रा को पॉवरफुल बनाओ, ज्ञान-स्वरूप के अनुभवी बनो। ऐसा स्वयं की उन्नति के प्रति विशेष प्रोग्राम बनाओ। जिस द्वारा आप श्रेष्ठ आत्माओं की शुभ वृत्ति व कल्याण की वृत्ति और शक्तिशाली वातावरण द्वारा अनेक तड़पती हुई, भटकती हुई, पुकार करने वाली आत्माओं को आनन्द, शान्ति और शक्ति की अनुभूति हो। समझा? अब क्या करना है? सिर्फ सुनाना नहीं है, अनुभव करना है। अनुभव कराने के लिये पहले स्वयं अनुभवीमूर्त बनो। इस वर्ष का विशेष संकल्प लो। स्वयं को परिवर्तन कर विश्व को परिवर्तन करना ही है। समझा? दृढ़ संकल्प की रिजल्ट सदा सफ़लता ही है। अच्छा।

(07.02.1976)

वास्तविक स्टेज में सदा फ्री रहेंगे

विश्व की अधिकतर आत्माऐं बाप की और आप इष्ट देवताओं की प्रतयक्षता का आह्वान ज्यादा कर रही हैं और इष्ट देव उनका आह्वान कम कर रहे हैं। इसका कारण क्या है? अपने हद के स्वभाव, संस्कारों की प्रवृत्ति में बहुत समय लगा देते हो। जैसे अज्ञानी आत्माओं को ज्ञान सुनने की फुर्सत नहीं वैसे बहुत से ब्राह्मणों को भी इस पावरफुल स्टेज पर स्थित होने की फुर्सत नहीं मिलती। इसलिए ज्वाला रूप बनने की आवश्यकता है।

बापदादा हर एक की प्रवृत्ति को देख मुस्कराते रहते हैं कि कैसे टू मच (बहुत ज्यादा) बिजी हो गए हैं। बहुत बिजी रहते हो ना? वास्तविक स्टेज में सदा फ्री रहेंगे। सिद्धि

भी होगी और फ्री भी रहेंगे।

जब साईन्स के साधन धरती पर बैठे हुए स्पेस (अंतरिक्ष) में गए हुए यन्त्र को कन्ट्रोल कर सकते हैं, जैसे चाहे जहाँ चाहे वहाँ मोड़ सकते हैं, तो साईलेन्स के शक्ति-स्वरूप, इस साकार सृष्टि में श्रेष्ठ संकल्प के आधार से जो सेवा चाहे, जिस आत्मा की सेवा करना चाहे वो नहीं कर सकते ? लेकिन अपनी-अपनी प्रवृत्ति से परे अर्थात् उपराम रहो।

जो सभी खज़ाने सुनाए वह स्वयं के प्रति नहीं, विश्व-कल्याण के प्रति यूज (प्रयोग) करो। समझा, अब क्या करना है ? आवाज़ द्वारा सर्विस, स्थूल साधनों द्वारा सर्विस और आवाज़ से परे 'सूक्ष्म साधन संकल्प' की श्रेष्ठता, संकल्प शक्ति द्वारा सर्विस का बैलेन्स प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब विनाश का नगाड़ा बजेगा। समझा ?

(07.01.1977)

कुमार ज्वाला रूप बनकर ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो जायेगा। ऐसी योग की अग्नि तेज़ करो जो विनाश की ज्वाला तेज़ हो जाएं।

(30.11.1979)

प्रश्न-बाप के याद की लगन, अग्नि का काम करती है, कैसे ?

उत्तर-जैसे अग्नि में कोई भी चीज़ डालो तो नाम, रूप, गुण सब बदल जाता है, ऐसे जब बाप के याद की लगन की अग्नि में पड़ते हो तो परिवर्तन हो जाते हो ना ! मनुष्य से ब्राह्मण बन जाते, फिर ब्राह्मण से फरिश्ता सो देवता बन जाते। तो कैसे परिवर्तन हुए ? लग्न की अग्नि से। अपनापन कुछ भी नहीं। मानव, मानव नहीं रहा फरिश्ता बन गया। जैसे कच्ची मिट्टी को साँचे में ढालकर आग में डालते हैं तो ईट बन जाती, ऐसे यह भी परिवर्तन हो जाता। इसलिए इस याद को ही ज्वाला रूप कहा है। ज्वालामुखी भी प्रसिद्ध है, तो ज्वालादेवी वा देवतायें भी प्रसिद्ध हैं।

(12.10.1981)

चैतन्य लाइट हाउस बनो

अभी हर आत्मा शक्ति स्वरुप हो जाए। जिसके भी सम्पर्क में आते हो वह अलौकिकता का अनुभव करे। अभी वह पार्ट चलना है। सुनाया ना अभी अच्छा - अच्छा कहते हैं, लेकिन अच्छा बनना है यह प्रेरणा नहीं मिल रही है। उसका एक ही साधन है - संगठित रुप में ज्वाला स्वरुप बनो। एक - एक चैतन्य लाइट हाउस बनो। सेवाधारी हो, स्नेही हो, एक बल एक भरोसे वाले हो, यह तो सब ठीक है, लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान की स्टेज, स्टेज पर आ जाए तो सब आपके आगे परवाने के समान चक्र लगाने लग जाऐं। अभी सिर्फ

बाप शमा की आर्कषण है और सर्व शमा की आकर्षण हो जाए तो क्या होगा ? शमा तो हो लेकिन अभी स्टेज पर नहीं आये हो। स्टेज पर आओ तो देखो आबू वाले कैसे आपके पीछे - पीछे दौड़ते हैं। आप लोगों को जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी वह स्वयं आकर कहेंगे जी हजूर, कोई सेवा!

(28.11.1981)

ज्वाला का किला बांधो

माया आवे लेकिन माया के वश नहीं होना है। माया का काम है आना और आपका काम है - 'माया को जीतना'। उनके प्रभाव में नहीं आना है। अपने प्रभाव से माया को भगाना है, न कि माया के प्रभाव में आना है। तो समझा कौन-सी प्राइज़ लेनी है। एक भी विघ्न में आया तो प्राइज नहीं क्योंकि साथी हो ना। सभी को एक दो को साथ देते हुए अपने घर चलना है ना। इसके लिए सदा सेवाकेन्द्र का वातावरण ऐसा शक्तिशाली हो जो वातावरण भी सर्व आत्माओं के लिए सदा सहयोगी बन जाए। शक्तिशाली वातावरण कमज़ोर को भी शक्तिशाली बनाने में सहयोगी होता है। जैसे किला बांधा जाता है ना। किला क्यों बांधते हैं कि प्रजा भी किले के अन्दर सेफ रहे। एक राजा के लिए कोठरी नहीं बनाते, किला बनाते थे। आप सभी भी स्वयं के लिए, साथियों के लिए, अन्य आत्माओं के लिए ज्वाला का किला बांधो। याद के शक्ति की ज्वाला हो।

(14.01.1984)

बाप समान पाप कटेश्वर स्वरूप

अनेक भक्तों को जो दर्शन के अभिलाषी हैं, ऐसे दर्शन-अभिलाषी आत्माओं के सामने आप स्वयं दिव्य दर्शन मूर्त प्रत्यक्ष होंगे तब ही सर्व आत्मायें दर्शन कर प्रसन्न होंगी। और प्रसन्ता के कारण आप दिव्य दर्शनीय आत्माओं पर प्रसन्ता के पुष्प वर्षा करेंगी। हरेक आत्मा के द्वारा यही प्रसन्नता के बोल निकलेंगे, जन्म-जन्म की जो प्यास थी वा आश थी कि मुक्ति को प्राप्त हो जाऐं वा एक झलक मात्र दर्शन हो जाऐं, आज मुक्ति वा मोक्ष का अनेक जन्मों का संकल्प पूरा हो गया। वा दर्शन के बजाए दर्शनीय मूर्त मिल गए। हमारे ईष्ट हमें मिल गए। इसी थोड़े समय की प्राप्ति के नशे और खुशी में जन्म-जन्म के दुख दर्द भूल जायेंगे। थोड़े से समय की यह समर्थ स्थिति आत्माओं को यथाशक्ति भावना के फलस्वरूप कुछ पापों से भी मुक्त कर देगी। इसलिए आत्मायें स्वयं को यथा शक्ति हल्का अनुभव करेंगी। इसलिए ही पाप हरो देवा वा पाप नष्ट करने वाली देवी, शक्ति, जगत मां यह बोल जरूर बोलते हैं। किसी भी देवी वा देवता के पास जाते हुए यह भावना वा निश्चय रखते हैं कि

यह हमारे पाप नाश कर ही लेंगे। और अब अन्त में देवताओं के साथ गुरू लोग भी यही टैम्पटेशन देते हैं कि मैं तुम्हारे पाप नाश कर दूँगा। भक्त भी इसी भरोसे से गुरू करते हैं। लेकिन यह रसम आप दिव्य दर्शनीय आत्माओं से प्रत्यक्ष रूप में होने का यादगार चला आ रहा है। ऐसे जल्दी ही यह दिव्य दृश्य विश्व के सामने आया कि आया! अभी अपने आपको देखो कि हम दिव्य दर्शनीय मूर्त दर्शन योग्य, सर्व श्रृंगार सम्पन्न बने हैं? बाप समान पाप कटेश्वर स्वरूप में स्थित हैं? पाप कटेश्वर वा पाप हरनी तब बन सकते, जब याद के ज्वाला स्वरूप बनेंगे-ऐसे बने हैं? दर्शन के लिए पर्दा खोलते हैं, पर्दा हटता और दर्शन होता है। ऐसे सम्पन्न दर्शनीय स्वरूप बने हो जो समय का पर्दा हट जाए और आप दिव्य दर्शनीय मूर्त प्रैक्टिकल प्रत्यक्ष हो जाओ। वा दर्शनीय मूर्त अभी तक सम्पन्न सहज रहे हो? दर्शन सदा सम्पन्न स्वरूप का होता है। तो ऐसे तैयार हो वा होना है! वा यही सोचते हो कि समय आयेगा तब तैयार होंगे! जो समय पर तैयार होंगे तो वह अपनी ही तैयारी में होंगे वा दर्शनीय मूर्त बनेंगे? वह स्व प्रति रहेंगे, न कि विश्व प्रति। वह स्व -कल्याणकारी होंगे और वह विश्व-कल्याणकारी। अन्त का टाइटल विश्व-कल्याणकारी है न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी। स्व-कल्याणकारी सो विश्व-कल्याणकारी, डबल कार्य करनेवाले ही डबल ताजधारी बनेंगे। सिर्फ स्व-कल्याणकारी डबल ताजधारी नहीं बन सकते। राज्य में आ सकते हैं लेकिन राज्य अधिकारी नहीं बन सकते हैं। तो समय प्रमाण अभी पुरूषार्थ की गति तीव्र है! अभी याद की शक्ति और तीव्रगति से बढ़ाओ। अभी साधारण स्वरूप में है। इसलिए कभी भी परिस्थितियों के वश धोखा मिल जायेगा। शक्तिशाली याद की भट्ठी में रहेंगे तो सेफ रहेंगे। सेवा के झंझट से भी परे हो जाओ। जब सेवा में क्या-क्यों, तू-मैं, तेरा-मेरा आ जाता है तो सेवा भी झंझट हो जाती है। तो इस झंझट से भी परे हो जाओ। सेवा के पीछे स्वमान न भूलो। जिस सेवा में शक्तिशाली याद नहीं तो उस सेवा में सफलता कम और स्वयं को, और और को भी परेशानी ज्यादा। नाम की सेवा नहीं-लेकिन काम की सेवा करो। इसको कहा जाता है - शक्ति सम्पन्न सेवा। तो ऐसे नाजुक समय आने हैं, जिसमें याद की शक्ति ही सेफ्टी का साधन है ना। ऐसे याद की शक्ति आपके चारों ओर सर्व शस्त्रधारी सेफ्टी के साधन है। इसलिए सदा स्वयं को, सेवा स्थान को वा प्रवृत्ति के स्थान को और आने वाले सर्व सेन्टर्स के विद्यार्थियों को याद की शक्ति-स्वरूप वृत्ति और वायुमण्डल में लाओ। अभी साधारण याद की स्थिति सेफ्टी का साधन नहीं बन सकती।

सभी टीचर्स हैं ही 'ज्वाला स्वरूप'। इस ज्वाला-स्वरूप के द्वारा अनेक आत्माओं की निर्बलता को दूर करने वाली। टीचर्स अर्थात् शिव शक्ति-कम्बाइन्ड रहने वाली। शिव के

बिना शक्ति नहीं, शक्ति के बिना शिव नहीं। हर सेकण्ड, हर श्वास 'बाप और आप' कम्बाइन्ड। तो ऐसे शिव-शक्ति स्वरूप निमित्त आत्मायें हो ना! कोई भी समय साधारण याद न हो। क्योंकि स्टेज पर हैं ना! तो स्टेज पर हर समय कैसे बैठते हैं? कैसे कार्य करते हैं? अलर्ट होकर करेंगे ना! साधारण एक्टिविटी नहीं करेंगे। सदा अलर्ट होकर हर काम करेंगे। सेवाकेन्द्र स्टेज है, घर नहीं है, स्टेज है। स्टेज पर सदा अटेन्शन रहता है और घर में अलबेले हो जाते हैं। तो यह सेवाकेन्द्र सेवा की स्टेज है। इसलिए सदा ज्वाला-स्वरूप, शक्ति-स्वरूप। स्नेही भी हैं लेकिन स्नेह अकेला नहीं। स्नेह के साथ शक्ति रूप भी हो। अगर अकेला स्नेही रूप है, शक्ति रूप नहीं है तो कभी भी धोखा मिल सकता है। इसलिए स्नेही और शक्ति रूप दोनों कम्बाइन्ड। दोनों का बैलेन्स। इसको कहा जाता है-नम्बरवन योग्य टीचर।

(21.11.1984)

निर्भयता की शक्ति

विनाश ज्वाला की अग्नि से बचने का साधन - निर्भयता की शक्ति है। निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नजारे देखेंगे। उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति-स्वीट होम दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। यह घुँघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य - इस खुशी में नाचते-गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे। सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे! तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? सुनाया ना - विनाश ज्वाला से बचने का साधन है - 'निर्भयता'। ऐसे ही विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है - अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।

(21.02.1985)

अभी महातपस्वी आत्मायें बनो

अब समय प्रमाण सर्व स्नेही, सर्वश्रेष्ठ बच्चों से बापदादा और विशेष क्या चाहते हैं? वैसे तो पूरी सीजन में समय प्रति समय इशारे देते हैं। अब उन इशारों को प्रत्यक्ष रूप में

देखने का समय आ रहा है। स्नेही आत्मायें हो, सहयोगी आत्मायें हो। सेवाधारी आत्मायें भी हो। अभी महातपस्वी आत्मायें बनो। अपने संगठित स्वरूप की तपस्या की रूहानी ज्वाला से सर्व आत्माओं को दु:ख-अशान्ति से मुक्त करने का महान कार्य करने का समय है। जैसे एक तरफ खूने-नाहक खेल की लहर बढ़ती जा रही है, सर्व आत्मायें अपने को बेसहारे अनुभव कर रहीं हैं, ऐसे समय पर सभी सहारे की अनुभूति कराने के निमित्त आप महातपस्वी आत्मायें हो। चारों ओर इस तपस्वी स्वरूप द्वारा आत्माओं को रूहानी चैन अनुभव कराना है। सारे विश्व की आत्मायें प्रकृति से, वायुमण्डल से, मनुष्य आत्माओं से, अपने मन के कमज़ोरियों से, तन से, बेचैन हैं। ऐसी आत्माओं को सुख-चैन की स्थिति का एक सेकण्ड भी अनुभव करायेंगे तो आपका दिल से बार-बार शुक्रिया मानेंगे। वर्तमान समय संगठित रूप के ज्वाला स्वरूप की आवश्यकता है। अभी विधाता के बच्चे विधाता स्वरूप में स्थित रह, हर समय देते जाओ। अखण्ड महान लंगर लगाओ। क्योंकि रॉयल भिखारी बहुत हैं। सिर्फ धन के भिखारी, भिखारी नहीं होते लेकिन मन के भिखारी अनेक प्रकार के हैं। अप्राप्त आत्मायें प्राप्ति के बूँद की प्यासी बहुत हैं। इसलिए अभी संगठन में विधातापन की लहर फैलाओ। जो खजाने जमा किये हैं वह जितना मास्टर विधाता बन देते जायेंगे उतना भरता जायेगा। कितना सुना है। अभी करने का समय है। तपस्वी मूर्त का अर्थ है - तपस्या द्वारा शान्ति के शक्ति की किरणें चारो ओर फैलती हुई अनुभव में आवें। सिर्फ स्वयं के प्रति याद स्वरूप बन शक्ति सेना का मिलन मनाना वह अलग बात है। लेकिन तपस्वी स्वरूप औरों को देने का स्वरूप है। जैसे सूर्य विश्व को रोशनी की और अनेक विनाशी प्राप्तियों की अनुभूति कराता है। ऐसे महान तपस्वी रूप द्वारा प्राप्ति के किरणों की अनुभूति कराओ। इसके लिए पहले जमा का खाता बढ़ाओ। ऐसे नहीं, याद से वा ज्ञान के मनन से स्वयं को श्रेष्ठ बनाया, मायाजीत विजयी बनाया इसी में सिर्फ खुश नहीं रहना। लेकिन सर्व खज़ानों में सारे दिन में कितनों के प्रति विधाता बने ? सभी खज़ाने हर रोज कार्य में लगाये वा सिर्फ जमा को देख खुश हो रहे हैं? अभी यह चार्ट रखो कि खुशी का खज़ाना, शान्ति का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, सहयोग देने का खज़ाना कितना बाँटा अर्थात् कितना बढ़ाया। इससे वह कामन चार्ट जो रखते हो वह स्वत: ही श्रेष्ठ हो जायेगा। समझा - अभी कौन-सा चार्ट रखना है? यह तपस्वी स्वरूप का चार्ट है - विश्व-कल्याणकारी बनना। तो कितने का कल्याण किया! वा स्व-कल्याण में ही समय जा रहा है? स्व-कल्याण करने का समय बहुत बीत चुका। अभी विधाता बनने का समय आ गया है। इसलिए बापदादा फिर से समय का इशारा दे रहे हैं। अगर अब तक भी विधातापन स्थिति का अनुभव नहीं किया तो अनेक जन्म विश्व-राज्य

अधिकारी बनने के पद्मापदम भाग्य को प्राप्त नहीं कर सकेंगे, क्योंकि विश्व-राजन विश्व के मात-पिता अर्थात् विधाता हैं। अब के विधातापन के संस्कार अनेक जन्म प्राप्ति कराता रहेगा, अगर अभी तक लेने के संस्कार, कोई भी रूप में हैं तो नाम लेवता, शान लेवता वा किसी भी प्रकार के लेवता के संस्कार विधाता नहीं बनायेंगे।

(07.04.1986)

विहंग मार्ग की सेवा - सोचा और हुआ

होली अर्थात् सदा पवित्रता की शक्ति से अपवित्रता को सेकण्ड में भगाने वाले। न केवल अपने लिए बल्कि औरों के लिए भी। क्योंकि सारे विश्व को परिवर्तन करना है ना। पवित्रता की शक्ति कितनी महान है, यह तो जानते हो ना! पवित्रता ऐसी अग्नि है जो सेकण्ड में विश्व के किचड़े को भस्म कर सकती है। सम्पूर्ण पवित्रता ऐसी श्रेष्ठ शक्ति है! अंत में जब सब संपूर्ण हो जायेंगे तो आपके श्रेष्ठ संकल्प में लगन की अग्नि से यह सब किचड़ा भस्म हो जायेगा। योग ज्वाला हो। अंत में ऐसे धीरे-धीरे सेवा नहीं होगी। सोचा और हुआ - इसको कहते हैं 'विहंग मार्ग की सेवा'। अभी अपने में भर रहे हो, फिर कार्य में लगायेंगे। जैसे देवियों के यादगार में दिखाते हैं कि ज्वाला से असुरों को भस्म कर दिया। असुर नहीं लेकिन आसुरी शक्तियों को खत्म कर दिया। यह किस समय का यादगार है? अभी का है ना। तो ऐसे ज्वालामुखी बनो। आप नहीं बनेंगे तो कौन बनेगा! तो अभी ज्वालामुखी बन आसुरी संस्कार, आसुरी स्वभाव-सब-कुछ भस्म करो। अपने तो कर लिये हैं ना या अपने भी कर रहे हो? अच्छा!

निर्भय तो बन गये। डरने वाले तो नहीं हो न? ज्वालामुखी हो, डरना क्यों? मरे तो पड़े ही हो, फिर डरना किससे? तो सदा नये राज्य की स्मृति रहे। सभी निर्भय ज्वालामुखी बन प्रकृति और आत्माओं के अंदर जो तमोगुण है उसे भस्म करने वाले बनो। यह बहुत बड़ा काम है, स्पीड से करेंगे तब पूरा होगा। अभी तो व्यक्तियों को ही संदेश नहीं पहुँचा है, प्रकृति की तो बात पीछे है। तो स्पीड तेज करो। गली-गली में सेंटर हों। क्योंकि सरकमस्टांस प्रमाण एक गली से दूसरी गली में जा नहीं सकेंगे, एक-दो को देख भी नहीं सकेंगे। तो घर-घर में, गली-गली में हो जायेगा ना। अच्छा!

(21.12.1989)

तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप

दृढ़ निश्चय रखा कि जाना ही है तो पहुँच गये ना? जाये न जाये - यह सोचने वाले रह गये। अभी तो यह कुछ भी नहीं है, अभी तो होना है। अभी प्रकृति ने फुल फोर्स की

हलचल शुरु नहीं की है। करती है लेकिन फिर आप लोगों को देखकर थोड़ा ठन्डी हो जाती है। वह भी डर जाती है कि मेरे मालिक तैयार नहीं हैं। किसकी दासी बनें? निर्भय हो ना? डरने वाले तो नहीं हो ना? लोग डरते हैं मरने से और आप तो है ही मरे हुए। पुरानी दुनिया से मरे हुए हो ना? नई दुनिया में जीते हो, पुरानी दुनिया से मरे हुए हो, तो मरे हुए को मरने से क्या डर लगेगा? और ट्रस्टी हो ना? अगर कोई भी मेरापन होगा तो माया बिल्ली म्याऊं म्याऊं करेगी। मैं आऊं, मैं आऊं...। आप तो हो ही ट्रस्टी। शरीर भी मेरा नहीं। लोगों को मरने का फिकर होता है या चीजों का या परिवार का फिक्र होता है। आप तो हो ही ट्रस्टी। न्यारे हो ना, कि थोड़ा-थोड़ा लगाव है? बॉडी कान्सेसनेस है तो थोड़ा-थोड़ा लगाव है। इसलिए तपस्या अर्थात् ज्वाला स्वरूप, निर्भय। अच्छा।

(13.02.1991)

एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी

बापदादा के पास 15 दिन के चार्ट का बहुत बच्चों का रिजल्ट आया है। एक बात तो बापदादा ने चारों ओर की रिजल्ट में देखी कि मैजॉरिटी बच्चों का अटेन्शन रहा है। परसेन्टेज़ जितनी स्वयं भी चाहते हैं उतनी नहीं है, परन्तु अटेन्शन है और दिल ही दिल में जो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे हैं वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लक्ष्य से आगे बढ़ भी रहे हैं। और आगे बढ़ते-बढ़ते मंजिल पर पहुंच ही जायेंगे। मैनारिटी अभी भी कभी अलबेलेपन में और कभी आलस्य के वश अटेन्शन भी कम दे रहे हैं। उन्हों का एक विशेष स्लोगन है - हो ही जायेंगे, जायेंगे.... जाना है नहीं, जायेंगे। हो ही जायेगा - यह है अलबेलापन। जाना ही है, यह है तीव्र पुरुषार्थ। साथ-साथ तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ। ज्वालामुखी बनो। समय प्रमाण रहे हुए जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब हैं उसको ज्वाला स्वरूप से भस्म करो। लगन है, इसमें बापदादा भी पास करते हैं लेकिन अभी लगन को अग्नि रूप में लाओ।

विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। आपकी लगन ज्वाला रूप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्जवलित करायेगी। एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा

योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो। जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रूप, महाशक्ति रूप, सर्व शस्त्रधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रूप प्रत्यक्ष करो। चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियां हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। तो ज्ञान गंगायें अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।

साथ-साथ ब्राह्मण आत्माओं में और भी समीप लाने के लिए, हर एक तरफ वा मधुबन में चारों ओर ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने के लिए, चाहे जिसको भट्ठी कहते हो वह करो, चाहे आपस में संगठन में रूहरिहान करके ज्वाला स्वरूप का अनुभव कराओ और आगे बढ़ाओ। जब इस सेवा में लग जायेंगे तो जो छोटी-छोटी बातें हैं ना - जिसमें समय लगता है, मेहनत लगती है, दिलशिकस्त बनते हैं वह सब ऐसे लगेगा जैसे ज्वालामुखी हाइएस्ट स्टेज और उसके आगे यह समय देना, मेहनत करना, एक गुड़ियों का खेल अनुभव होगा। स्वत: ही सहज ही सेफ हो जायेंगे। बापदादा ने कहा ना कि सबसे ज्यादा बापदादा को रहम तब पड़ता है जब देखते हैं कि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे और छोटी-छोटी बातों के लिए मेहनत करते हैं। मोहब्बत ज्वालामुखी रूप की कम है तब मेहनत लगती है। तो अभी मेहनत से मुक्त बनो, अलबेले नहीं बनना लेकिन मेहनत से मुक्त होना। ऐसे नहीं सोचना मेहनत तो करनी नहीं है तो आराम से सो जाओ। लेकिन मोहब्बत से मेहनत खत्म करो। अलबेलेपन से नहीं। समझा - क्या करना है?

(30.03.1999)

मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ

अभी दु:ख बहुत-बहुत बढ़ रहा है, बढ़ता रहेगा। इसलिए मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य एक ही समय में कितनी प्राप्तियाँ कराता है, एक प्राप्ति नहीं कराता। सिर्फ रोशनी नहीं देता, पावर भी देता है। अनेक प्राप्तियाँ कराता है। ऐसे आप सभी इन 6 मास में ज्ञान सूर्य बन सुख की, खुशी की, शान्ति की, सहयोग की किरणें फैलाओ। अनुभूति कराओ। आपकी सूरत को देखते ही दु:ख की लहर में कम से कम मुस्कान आ जाये। आपकी दृष्टि से हिम्मत आ जाये। तो यह अटेन्शन देना है। विधाता बनना है, तपस्वी बनना है। ऐसी तपस्या करो जो तपस्या की ज्वाला कोई न कोई अनुभूति कराये। सिर्फ वाणी नहीं सुनें, अनुभूति कराओ। अनुभूति अमर होती है। सिर्फ वाणी थोड़ा समय अच्छी लगती है सदा याद नहीं रहती। इसलिए अनुभव की अथॉरिटी बन अनुभव कराओ। जो भी सम्बन्ध-

सम्पर्क में आ रहे हैं उन्हों को हिम्मत, उमंग-उत्साह अपने सहयोग से बापदादा के कनेक्शन से दिलाओ। ज्यादा मेहनत नहीं कराओ। न खुद मेहनत करो न औरों को कराओ। निमित्त हैं ना! तो वायब्रेशन ऐसे उमंग-उत्साह का बनाओ जो गम्भीर भी उमंग-उत्साह में आ जाये। मन नाचने लगे खुशी में।

(25.03.2005)

ज्वाला रूप योगी तू आत्मा

कई बच्चों को बाप से रूहरिहान करते कई बच्चे सुनाते हैं कि अमृतवेले सुस्ती का वायब्रेशन थोड़ा होता है। उठते जरूर हैं लेकिन पावरफुल शक्तिशाली रूप से स्व के प्रति वा विश्व के प्रति शक्ति देना, वह थोड़ा सा थकावट की रेखा होती है। उस समय ऐसे नहीं समझो हम अपने सेन्टर के योग के कमरे में बैठे हैं, बाबा के कमरे में बैठे हैं, क्लास रूम में बैठे हैं, लेकिन ऐसे समझो विश्व की स्टेज पर बैठे हैं। हीरो पार्टधारी हैं और स्टेज पर बैठे हैं। अगर हीरो पार्टधारी थका हुआ पार्ट बजायेगा तो कैसा बजायेगा? वायुमण्डल कैसे फैलेगा? तो अमृतवेला भी पावरफुल बनाओ। नियम अच्छा निभाते हो लेकिन सुनाया ना अभी, योग सर्वशक्तियों से पावरफुल हो, योग अग्नि हो। ज्वालामुखी हो। तो यह तीन मास विशेष अमृतवेला भी नोट करना। बातें बहुत अच्छी-अच्छी करते हैं, प्यार के स्वरूप में भी होते हैं लेकिन ज्वालारूप कम होता है। अभी संस्कार का अंश मात्र भी नहीं रहे तब कहेंगे ज्वाला रूप योगी तू आत्मा। और साथ-साथ इस नये वर्ष में जो भी खजाने हैं, ज्ञान का खजाना, शक्तियों का, गुणों का, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना, एक तो सफल करो और दूसरा जमा करो। जमा भी करो, सफल भी करो। क्योंकि आपका टाइटल है, वरदान है सफलता के सितारे। है ना आपका टाइटल सफलता के सितारे? सभी फलक से कहते हो सफलता हमारे गले का हार है। सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो सफलतामूर्त हो, सफल करो और जमा भी करो।

(31.12.2005)

लगाव, तनाव और स्वभाव

स्व-उन्नति के प्लैन बनायेंगे, इसमें स्वयं के चेकर बनकर चेक करना, यह रॉयल मैं तो नहीं आ रही है क्योंकि आज होली मनाने आये हो। तो बापदादा यही संकल्प देते हैं तो आज देह-अभिमान और अपमान की जो मैं आती है, दिलशिकस्त की मैं आती है, इसको जलाके ही जाना, साथ नहीं ले जाना। कुछ तो जलायेंगे ना। आग जलायेंगे क्या! ज्वालामुखी योग अग्नि जलाओ। जलाने आती है? हाँ ज्वालामुखी योग, आता है? कि साधारण योग आता है? ज्वालामुखी बनो। लाइट माइट हाउस। तो यह पसन्द है? अटेन्शन

प्लीज़, मैं को जलाओ। बापदादा जब मैं-मैं का गीत सुनता है ना तो स्विच बन्द कर देता है। वाह! वाह! के गीत होते हैं तो आवाज बड़ा कर देते हैं। क्योंकि मैं-मैं में खिंचावट बहुत होती है। हर बात में खिंचावट करेंगे, यह नहीं, यह नहीं, ऐसा नहीं, वैसा नहीं। तो खिंचावट होने के कारण तनाव पैदा हो जाता है। बापदादा को लगाव, तनाव और स्वभाव, उल्टा स्वभाव। वास्तव में स्वभाव शब्द बहुत अच्छा है। स्वभाव, स्व का भाव। लेकिन उसको उल्टा कर दिया है। न बात की खिंचावट में करो, न अपने तरफ कोई को खिंचाओ। वह भी बहुत परेशानी करता है। कोई कितना भी आपको कहे, लेकिन अपने तरफ नहीं खींचो। न बात को खीचों, न अपने तरफ खींचो, खिंचावट खत्म। बाबा, बाबा और बाबा। पसन्द है ना! तीन बातें या एक मैं को छोड़कर जाना यहाँ, साथ नहीं लेके जाना, ट्रेन में बोझ हो जायेगा। आपका गीत है ना - मैं बाबा की, बाबा मेरा। है ना। तो एक मैं रखो, दो मैं खत्म।

(14.03.2006)

'मैं' की पूंछ को जलाओ

बापदादा को एक बात पर बहुत हंसी आ रही है। कौन सी बात ? हैं महावीर लेकिन जैसे शास्त्रों में हनुमान को महावीर भी कहा है लेकिन पूंछ भी दिखाया है। यह पूंछ दिखाया है मैं-पन का। जब तक महावीर इस पूंछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात् पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो अभी इस मैं, मैं की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी। जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं। ज्वालामुखी याद की आवश्यकता है। इसीलिए ज्वाला देवी की भी यादगार है। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करनाहै ? अब यह मन में धुन लगी हुई हो - समान बनना ही है, समाप्ति को समीप लाना ही है। आप कहेंगे संगमयुग तो बहुत अच्छा है ना तो समाप्ति क्यों हो ? लेकिन आप बाप समान दयालु, कृपालु, रहमदिल आत्मायें हो, तो आज की दु:खी आत्मायें और भक्त आत्माओं के ऊपर हे रहमदिल आत्मायें रहम करो। मर्सीफुल बनो। दु:ख बढ़ता जा रहा है, दु:खियों पर रहम कर उन्हों को मुक्तिधाम में तो भेजो। सिर्फ वाणी की सेवा नहीं लेकिन अभी आवश्यकता है मन्सा और वाणी की सेवा साथ-साथ हो। एक ही समय पर दोनों सेवा साथ हो। सिर्फ चांस मिले सेवा का, यह नहीं सोचो चलते फिरते अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप का परिचय देते हुए चलो। आपका चेहरा बाप का परिचय दे। आपकी चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले। तो ऐसे सदा सेवाधारी भव! अच्छा।

(30.11.2006)

शान्ति की ज्वाला

बच्चों ने कहा आना ही है तो बाप ने कहा हाँ जी। ऐसे ही एक दो के बातों को, स्वभाव को, वृत्ति को समझते, हाँ जी, हाँ जी करने से संगठन की शक्ति साइलेन्स की ज्वाला प्रगट करेगी। ज्वालामुखी देखा है ना। तो यह संगठन की शक्ति शान्ति की ज्वाला प्रगट करेगी। अच्छा।

(18.02.2008)

एक परिवार

बापदादा आज अमृतवेले चारों ओर, चाहे विदेश चाहे देश, चारों ओर चक्र लगाने गये। तो क्या देखा ? योग में अमृतवेले बैठते मैजारिटी हैं लेकिन स्नेह में बैठते हैं, बापदादा से बातें भी करते हैं, आत्मिक स्मृति में भी बैठते, बापदादा से शक्ति भी लेते हैं लेकिन अभी बापदादा आने वाले नये वर्ष में नवीनता चाहते हैं क्योंकि अभी समय दिनप्रतिदिन नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय पर अभी ज्वालामुखी योग चाहिए। वह ज्वालामुखी योग की आवश्यकता अभी आवश्यक है। ज्वालामुखी योग अर्थात् लाइट माइट स्वरूप शक्तिशाली, क्योंकि समय प्रमाण अभी दु:ख, अशान्ति, हलचल बढ़नी ही है इसलिए अपने दु:खी, परेशान आत्माओं को विशेष ज्वालामुखी योग द्वारा शक्तियाँ देने की आवश्यकता पड़ेगी। दु:ख अशान्ति के रिटर्न में कुछ न कुछ शक्ति, शान्ति अपने मन्सा सेवा द्वारा देनी पड़ेगी। जो आपने इस समय की टॉपिक रखी है, एक परिवार। उसके प्रमाण जब एक परिवार है, तो अशान्त आत्माओं को कुछ तो अंचली देंगे इसीलिए बापदादा अगला वर्ष जो आया कि आया उसके लिए विशेष अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि अभी ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। ज्वालामुखी योग द्वारा ही जो भी संस्कार रहे हुए हैं वह भी भस्म होने हैं।

अभी आपकी एडवांस पार्टी के साथी आप सबसे यह चाहते हैं कि अभी समय को, समाप्ति के समय को सामने लाओ। अब रिटर्न जरनी याद रखो। आपकी दीदी याद दिला रही है कि मुझे सदा यह याद रहता था 'अब घर जाना है', अब घर जाना है। आपकी दादी यही याद दिला रही है कि जैसे मुझे याद रहा अभी सम्पन्न बनना है, सम्पूर्ण बनना है, धुन लगी रही। तो आज विशेष अमृतवेले वतन में बापदादा से मिलन मनाते कह रहे थे कि अभी हमारे तरफ से, जो भी दादियां गई हैं सब मिलके कह रही थी अब ज्वालामुखी योग की बहुत आवश्यकता है, चाहे औरों को शक्ति देने के लिए, चाहे अपने ब्राह्मण परिवार को सम्पन्न बनाने के लिए। अभी समय को समीप लाने वाले आप निमित्त हो इसलिए आने वाले वर्ष में क्या करेंगे ? विशेष क्या करेंगे ? एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक सेन्टर, सेवास्थान ज्वालामुखी योग का वायब्रेशन और कर्म में एक दो के स्नेही सहयोगी बन हर एक को आप

अटेन्शन में रखते जो भी कमी है उसमें सहयोग दो। मन्सा द्वारा अन्य आत्माओं की सेवा करो और अपने सहयोग द्वारा ब्राह्मण साथियों की विशेष सेवा करो, तभी हम लोगों की दिल की आश पूरी होगी।

बापदादा ने यह भी कहा कि सभी अपने अन्दर अपने लिए समय निश्चित करो कि कब तक अपने को बाप समान बनायेंगे। अपने अन्दर अपने लिए निश्चित करो। तो निश्चित करना आता है ना? बापदादा तो आज हर बच्चे को देख यही वरदान दे रहे हैं अगले वर्ष में हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी भव। अमृतवेले जब याद में बैठते हो और जब उठने का समय होता है उस समय बापदादा का यह वरदान अपने दिल में याद रखना तीव्र पुरुषार्थी भव। जैसे बापदादा ने दो बातें पहले ही अटेन्शन में दिलाई हैं क्योंकि संगम का समय अचानक समाप्त होना है। तो एक समय, दूसरा संकल्प, दोनों पर हर घड़ी अटेन्शन। बापदादा की यह भी हर बच्चे के प्रति शुभ भावना है कि हर बच्चा इस वर्ष में क्या बनें? क्या बनेंगे? जो भी आपके चेहरे में देखे आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे। फलानी हूँ, फलाना हूँ नहीं। फरिश्ता अनुभव में आवे। इसके लिए ज्वालामुखी योग, कोई व्यर्थ नहीं। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। समर्थ फरिश्ता नज़र आये। जिसको भी देखे, क्योंकि बाप के सिकीलधे बच्चे तो हो। बाप ने आपको खास कहाँ-कहाँ से चुन करके अपना बनाया है। तो लक्ष्य रखो मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। तो अमृतवेले अपनी दिनचर्या में यह याद रखना मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। चलते फिरते फरिश्ता रूप, फरिश्ता स्वरूप तो अच्छा लगता है ना! ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना, फालो फादर।

बापदादा को भी फॉरेन में चक्र लगाने का समय मिलता है। कौन सा समय मिलता है? अमृतवेला। विदेश के भी सेन्टर पर बापदादा चक्र लगाता है लेकिन अभी एडीशन ज्वालामुखी योग। यह ज्वालामुखी योग सभी को समीप लायेगा क्योंकि शक्ति मिलेगी ना। आप भी लाइट माइट रूप बनेंगे। चलते फिरते भी लाइट माइट स्वरूप होंगे तो लोगों को भी वायब्रेशन आयेगा। फिर मेहनत कम और फल ज्यादा निकलेगा।

(31.12.2011)

पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो

बापदादा भी देखते हैं कि स्नेह सबका है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पावरफुल बनाओ, बैठते हैं बापदादा बैठने की मुबारक देते हैं लेकिन जो बैठने का वायुमण्डल शक्तिशाली चाहिए, कोई कैसे बैठता है, कोई कैसे बैठता है। अगर आप फोटो निकालो ना, तो आपको खुद लगेगा कि और कुछ होना चाहिए। जो बापदादा

ने ज्वालामुखी योग कहा, उसके ऊपर अभी और गहरा अटेन्शन देना। पुरुषार्थ करते हैं सभी लेकिन पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो। अभी बापदादा ने हर बच्चे को यह दो मास दिये हैं, इसमें जितना अटेन्शन देंगे तो अटेन्शन के साथ बापदादा भी एकस्ट्रा आपको सहयोग देगा। मन के मालिक, मन को ऐसे चलाओ जैसे पांव और बांह को चलाते हो। जो चाहते हो वह करते हैं ना। अभी आप चाहो यहाँ नहीं यहाँ रखूं तो रख सकते हो ना। ऐसे माइन्ड कन्ट्रोल, जो चाहे वही मन संकल्प करे। रोज़ रात को रिजल्ट देखो आज मन की रूलिंग पावर, कन्ट्रोलिंग पावर कहाँ तक रही ? अभी व्यर्थ को समाप्त जल्दी-जल्दी करना चाहिए अब समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ। बापदादा तो बच्चों का दु:ख दर्द, पुकार सुन करके बच्चों द्वारा अभी जल्दी समाप्ति कराने चाहते हैं। सुनाया ना, पुरुषार्थ सब कर रहे हैं लेकिन अभी एड करो तीव्र। करना ही है, करेंगे, देखेंगे... यह गे-गे नहीं चलेगा।

(18.01.2012)

आदिकाल से रिटर्न जर्नी तक

बापदादा ने देखा सभी अटेन्शन रखते हैं लेकिन नियमित रूप से अपनी दिनचर्या सेट करो। बीच-बीच में यह अपने स्वमान के स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करते हो ऐसे यह स्वमान की स्मृति आदिकाल से रिटर्न जर्नी तक की, बीच-बीच में टाइम फिक्स करो। यह चलते फिरते भी कर सकते हो क्योंकि मन को सीट पर बिठाना है। बापदादा ने देखा, पहले भी कहा है योग सब लगाते हो लेकिन अब आवश्यकता किसकी है ? समय की हालतों को देख पहले भी सुनाया अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा, अभी संस्कारों को मारते हो लेकिन जलाते नहीं हो। मारने के बाद फिर भी कभी-कभी वह जाग जाते हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारा नहीं, जलाया। ऐसे आप भी अपने पुराने संस्कारों को जो बीच-बीच में तीव्र पुरुषार्थ में कमी कर देते हैं, उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। एक स्वयं के लिए और दूसरा ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट रूप होने के कारण, माइट रूप होने के कारण उन्हों को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो। तो अभी सभी ने योग को ज्वालामुखी योग में परिवर्तन किया ? समय अनुसार अभी आत्माओं को आपके सहयोग की आवश्यकता है। बाकी बापदादा तो अमृतवेले हर बच्चे को स्नेह देते हैं।

आज बापदादा बच्चों का रिकार्ड देख रहे थे। तो एक तो ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो जिससे स्वभाव संस्कार परिवर्तन में सहयोग मिलेगा।

(02.02.2012)

निराकारी-फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल एवं अनुभव की अथॉरिटी

"बापदादा ने 24 बारी का होमवर्क दिया था (12 बारी निराकारी स्थिति और 12 बारी फरिश्ता स्थिति में स्थित होने का अभ्यास करना है और एक समय कम से कम 10 मिनट स्थित रहे) वह 10 मिनट कई बच्चों को मुश्किल हो रहा है। ... जितना ज्यादा कर सको, उतनी आदत डालो क्योंकि बहुत काल का वरदान प्रैक्टिकल में अभी कर सकते हो। ... अगर 10 मिनट हो तो अच्छा है। ऐसा समय आयेगा जो आप लोगों को अपने लिए और विश्व के लिए भी किरणें देनी पड़ेंगी।" अ.बापदादा 31.12.09

"दिन-प्रतिदिन समय नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय का सामना करने के लिए अभी से ज्वालामुखी योग चाहिए। ... हर बच्चा फरिश्ता अनुभव में आये। इसके लिए ज्वालामुखी योग चाहिए, कोई व्यर्थ नहीं हो। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। ... सदा फरिश्ता स्वरूप में रहना है, इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी।"

अ.बापदादा 31.12.11

"अमृतवेले स्मृति में बैठते हो लेकिन स्मृति स्वरूप का अनुभव हो। अनुभव की अथॉरिटी का आनन्द बहुत थोड़ा समय होता है। ... लेकिन स्वरूप के स्मृति स्वरूप के अनुभवी मूर्त बनें, अनुभव में खो जायें, उसको अभी और बढ़ाना होगा क्योंकि अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना, इसको कहा जाता है अनुभव। तो स्वरूप की स्मृति के अनुभव में खो जाना है।" अ.बापदादा 2.02.12

संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रॉलब्ध है

निराकारी-फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल, ज्वालामुखी योग का अभ्यास, अपने स्वमानों की स्मृति और उनकी स्थिति में स्थित होना केवल पुरुषार्थ ही नहीं है परन्तु परम-प्राप्ति है क्योंकि इस देह में रहते इस देह से न्यारी निराकारी और फरिश्ता स्थिति आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति और परमानन्द का अनुभव कराने वाली है। ऐसे ही ज्वालामुखी योग आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति प्रदान करता है, आत्मा को हर समय और हर परिस्थिति में सहयोग करता है। स्वमानों की स्मृति और उनमें स्थित होने से आत्मा को परम सुख की अनुभूति होती है, जो इस संगमयुग की ही प्राप्ति है। और सारे कल्प में और तीनों लोकों में ये अनुभूति हो नहीं सकती। संगमयुग पर पुरुषार्थ ही प्रॉलब्ध है क्योंकि पुरुषार्थ में ही परमानन्द की अनुभूति होती है।

निराकारी और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास की ड्रिल

बापदादा ने निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की जो ड्रिल करने के लिए कहा है, उसका सफलतापूर्वक अभ्यास कर सकें, उसके लिए भी मार्ग-प्रदर्शन किया है, जिससे हमारे जीवन में उसका सही लाभ हो और हम इस ड्रिल के अभ्यास में सफल हों।

"बहुतकाल का यह अभ्यास बहुत काल की प्राप्ति का आधार है।... 10 मिनट नहीं हो सकता तो ऐसा न हो कि 10 मिनट के सोच में 5 मिनट भी चले जायें। तो 5 मिनट ही करो, फिर जितना आगे बढ़ा सकते हो, उतना बढ़ाओ।" अ.बापदादा 31.12.09

Q. बाबा ने 12 बार निराकारी और 12 बार फरिश्ता स्वरूप की जो ड्रिल बताई, उसका अभ्यास कैसे हो सकता है?

हर आत्मा वह चाहे मधुबन में हो, सेन्टर में हो या घर-गृहस्थ में रहने वाले हों, सब अपनी दिनचर्या पर विचार करें और हर कर्म करने से पहले 5 या 10 मिनट ये ड्रिल करें तो अपनी दिनचर्या के अनुसार सहज ये ड्रिल कर सकते हैं।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति और उसके गुण-धर्म

Q. निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति कैसी है, उसके गुण-धर्म क्या है?

निराकार शिवबाबा की स्थिति और साकार ब्रह्मा बाबा के पुरुषार्थी जीवन की स्थिति और वर्तमान बाबा की फरिश्ता स्थिति पर विचार करेंगे तो सहज ये स्थितियाँ हमारे सामने स्पष्ट हों जायेंगी और जब स्थितियाँ स्पष्ट होंगी, तब ही हम उनका अपनी दिनचर्या के अनुसार सफल अभ्यास और अनुभव कर सकेंगे।

निराकारी स्थिति अर्थात् शिव बाबा के समान स्थिति अर्थात् निर्संकल्प-बीजरूप स्थिति, जिसमें आत्मा को परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है, विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा से आत्मा को साक्षी-दृष्टा स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखने से परम-सुख की अनुभूति होती है। निराकारी और फरिश्ता स्थिति चिन्तन-मुक्त स्थिति, सूर्य के समान लाइट-हाउस और माइट-हाउस स्थिति, सुख-दुख से न्यारी स्थिति, अपने-पराये, अच्छे-बुरे से भी मुक्त स्थिति है। इसी स्थिति के लिए एक महापुरुष ने कहा है - जहाँ चेतन हो परन्तु चेतना न हो अर्थात् आत्मा शरीर में हो परन्तु संकल्प न हो। इसको ही हठ्ठयोग में निर्संकल्प समाधि के रूप में वर्णन किया है क्योंकि निर्संकल्प समाधि में आत्मा को परम-शक्ति

और परम-शान्ति की अनुभूति होती है। हठयोग में यथार्थ ज्ञान न होने से अल्पकाल के लिए होती है और समयान्तर में गिरती जाती है। ज्ञान मार्ग में यथार्थ ज्ञान होने से ये स्थिति और अनुभूति दीर्घ काल के लिए होती है और समयान्तर में वृद्धि को पाती है क्योंकि ज्ञान मार्ग चढ़ती कला का मार्ग है।

शिवबाबा निराकारी स्थिति का सिम्बल है। विचार करने की बात है - क्या शिवबाबा कभी सोचता है कि हमको क्लास में जाकर क्या सुनाना है या संकल्प करता है कि हमको जाना है या क्या करना है। ड्रामा अनुसार ऑटोमेटिक उनसे समय पर सारे कर्म होते हैं। इस सम्बन्ध में बाबा ने मुरलियों में भी कहा है कि मैं कभी सोचता नहीं हूँ, ड्रामा अनुसार समय पर स्वत: मुरली चलने लगती है। इसके लिए ही शिवबाबा को असोचता कहा जाता है।

फरिश्ता स्थिति अर्थात् ब्रह्मा बाप समान स्थिति अर्थात् ब्रह्मा बाबा साकार में भी सदा ज्ञान के चिन्तन में और विश्व-कल्याण के चिन्तन में रहे और अभी तो वे साक्षात् फरिश्ता रूप में हैं अर्थात् अभी वे ज्ञान और विश्व-कल्याण के चिन्तन से भी मुक्त सदा विश्व-कल्याण में ही तत्पर हैं, विश्व की सर्वात्माओं को शक्ति देने के लिए, उनको दुख-दर्द से मुक्त करने के लिए उनसे लाइट-माइट की किरणें स्वत: फैलती रहती हैं। विचारणीय है कि किसी कार्य के लिए चिन्तन पहले होता है, कार्य करने के समय नहीं। कार्य करने के समय तो कार्य करने की लगन होती है। ब्रह्मा बाबा ये साकार में रहते चिन्तन किया और स्थिति बनाई परन्तु अभी तो वे फरिश्ता स्वरूप में सदा ही विश्व-कल्याण की सेवा में हैं। फरिश्ता स्थिति विकल्प से मुक्त निर्विकल्प स्थिति अर्थात् सदा विश्व-कल्याण में तत्पर स्थिति, विश्व-कल्याण के संकल्प से भरपूर स्थिति है।

गायन है - फरिश्तों के पैर धरती पर नहीं पड़ते क्योंकि वे देहभान और देहाभिमान दोनों से मुक्त होते हैं, इसलिए फरिश्ते सदा उड़ते रहते, फरिश्तों का किससे कोई रिश्ता-नाता नहीं होता अर्थात् वे सबके होते और सब उनके होते हैं, इसलिए फरिश्ते कब कहाँ रुकते नहीं, सदा उड़ते रहते, साकार देह के भान और बोझ से मुक्त होते, वे किसी आधार पर आधारित नहीं होते हैं। जैसे स्पेस में किसी चीज़ की स्थिति होती है।

शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा की स्थिति पर विचार करके निश्चित करें कि हमको इस स्थिति के लिए कैसे ड्रिल करनी है। शिवबाबा तो न चिन्तन करता है और न कुछ सोचता है, ब्रह्मा बाबा साकार में थे तब ज्ञान का चिन्तन करते थे और विश्व-कल्याण के लिए सोचते थे। परन्तु अभी तो वे भी चिन्तन करने और सोचने से परे हैं। विश्व-कल्याण का कार्य उनसे स्वत: ही होता रहता है। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों मिलकर विश्व-कल्याण का कर्तव्य करते

हैं। इसलिए शास्त्रों में नर-नारायण का गायन है, जो सदा ही साथ रहते थे। इसलिए फरिश्ता स्वरूप वाला सदा बापदादा के साथ का अनुभव करता है अर्थात् उनके साथ रहता है।

निराकारी स्थिति अर्थात् परमधाम में हम आत्मायें शिवबाबा के साथ हैं परन्तु साथ रहने की कोई अनुभूति नहीं होती, कोई आभास नहीं होता, वहाँ कोई प्राप्ति नहीं होती है। परन्तु अभी विशेषता ये है कि जब हम देह में रहते देह से न्यारी निराकारी स्थिति अर्थात् अपने मूल स्वरूप में स्थित होते हैं तो हमको परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है। आत्मा सत्, चित्, आनन्द स्वरूप है, उसकी अनुभूति होती है।

ऐसे ही देह में रहते फरिश्ता स्थिति अर्थात् सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप बापदादा के साथ की स्थिति, उनके समान विश्व-कल्याण के संकल्प की स्थिति, जिसमें आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है, अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। वास्तव में तो जब फरिश्ता स्वरूप में होंगे तो वहाँ आनन्द या अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति का भी प्रश्न नहीं रहता है। आत्मा को सर्व प्रकार की अनुभूति इस देह में रहते हुए ही होती है। अभी जब हम इस देह में रहते देह से न्यारे फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में होते हैं, तब ही हमको आनन्द या अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होती है। अभी की फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति, फरिश्ता बनने की अनुभूति से भी श्रेष्ठ है। इसलिए शिवबाबा सदा ही ब्रह्मा बाप की जीवनमुक्त स्थिति अर्थात् सम्पूर्ण-सम्पन्न फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का उदाहरण देकर हमको वैसी स्थिति में स्थित होकर, उसकी अनुभूति में रहने के लिए प्रेरित करते हैं।

फरिश्ता स्वरूप की स्थिति के लिए आदरणीय दादा विश्वरतन जी की एक बात याद आती है, जो वे प्राय: सबको सुनाया करते थे। दादा जी कहते थे - ब्रह्मा बाप समान बनना है तो जब अव्यक्त बापदादा आते हैं तो उनको ध्यान से देखो तो सहज समझ में आयेगा कि फरिश्ता स्थिति क्या होती है और तब ही हम फरिश्ता स्वरूप अव्यक्त बाबा को फॉलो कर सकेंगे अर्थात् फरिश्ता बन सकेंगे। बापदादा कैसे बोलते हैं, कैसे देखते हैं, कैसे मुस्कुराते हैं। हॉल में और स्टेज पर सबकुछ होते हुए देखते भी बाबा की स्थिति कैसी रहती है अर्थात् बाबा हर दृश्य साक्षी होकर देखते हैं परन्तु उससे प्रभावित नहीं होते हैं।

बीजरूप स्थिति, डेड-साइलेन्स की स्थिति, निराकारी स्थिति एक ही स्थिति के पर्यायवाची शब्द हैं। जिसको हठयोग में निर्संकल्प समाधि कहा गया है। ऐसे ही फरिश्ता स्थिति को हठयोग में निर्विकल्प समाधि कहा गया है। बाबा हम बच्चों को सदा सम्पूर्ण और सम्पन्न अर्थात् सदा शान्त, शक्ति-स्वरूप, परमानन्द, परम-सुख में देखना चाहते हैं, जिस स्वरूप में स्थित रहने से जड़, जंगम और चेतन आत्माओं की स्वत: ही सर्विस होती रहेगी

अर्थात् हमारे से मन्सा-वाचा-कर्मणा जो भी कर्म होगा और जो वायब्रेशन प्रवाहित होगा, वह स्वत: सेवा करेगा।

इन्द्रियों के रस, स्वभाव-संस्कार, दैहिक सम्बन्धों की आकर्षण आदि आत्मिक शक्ति को सीमित कर देते हैं। फरिश्ता स्वरूप इन सब बन्धनों से मुक्त होता है। ऐसी मुक्त आत्मा एक ही समय अनेक आत्माओं की और अनेकों स्थानों पर बिना किसी बन्धन के सेवा कर सकती है, कार्य कर सकती है। जैसे निराकार शिवबाबा और अव्यक्त फरिश्ता ब्रह्मा बाबा करते हैं। निराकारी स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप सर्वशक्तियों से सम्पन्न सदा निर्बन्धन है। यह स्थिति और सेवा हमको इस देह में रहते हुए ही करनी है

यह भी विचारणीय है कि बाबा ने हमको निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में स्थित होने के अभ्यास के लिए कहा है, उस स्थिति को याद करने के लिए नहीं। याद करना तो प्रथम स्टेज है, बाबा अभी बच्चों को फाइनल स्टेज अर्थात् बाप समान स्थिति में देखना चाहते हैं क्योंकि समय सम्पन्नता की ओर जा रहा है। इसलिए हमको स्मृति और स्थिति के भेद को भी समझना होगा। स्मृति पुरुषार्थ है और स्थिति मंजिल है। यथार्थ अनुभूति स्थिति में ही होती है, स्मृति में तो केवल उसके लिए आकर्षण होता है।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप सर्व गुण और शक्तियों से सम्पन्न और सम्पूर्ण सूर्य के समान लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थित है, इसलिए निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित आत्मा एक ही समय अनेक स्थानों पर काम कर सकती है। इसलिए बापदादा एक होते हुए भी एक साथ अनेक बच्चों को साथ का अनुभव कराते हैं, उनको सहयोग का अनुभव कराते, अनेक भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करते हैं। अनेक बच्चे और भक्त उसका अनुभव करते हैं।

Q. हम निराकार आत्मा हैं और निराकार शिवबाबा की शक्ति रूपी किरणें हमारे ऊपर आ रही हैं, उनकी छत्रछाया हमारे ऊपर है - क्या यह स्मृति करना या इस अनुभूति की परिकल्पना करना निराकारी स्थिति है, ऐसे ही परिकल्पना करना कि बापदादा का हाथ हमारे सिर के ऊपर है, जिससे हमको शक्ति ... मिल रही है - यह फरिश्ता स्थिति है?

नहीं, निराकारी स्थिति तो संकल्प से भी परे निर्संकल्प अर्थात् बीजरूप स्थिति है, जिसमें किसी प्रकार की चाहना का प्रश्न ही नहीं है और फरिश्ता स्वरूप बापदादा के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण दाता-वरदाता स्वरूप है, इसलिए उसमें भी किसी प्रकार की चाहना या पाने का प्रश्न ही नहीं उठ्ता है। दोनों ही स्थितियाँ मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर नॉलेजफुल, दाता-वरदाता की हैं। जब तक लेने की इच्छा है, तब तक दाता-वरदाता नहीं बना जा सकता है। बाबा ने बच्चों

को अपने समान, सम्पूर्ण और सम्पन्न बनाने के लिए ये अभ्यास करने को कहा है। हम बाबा से ले रहे हैं और आत्माओं को दे रहे हैं - यह स्थिति तो ब्राह्मणपन की है, फरिश्तापन की या निराकारी स्थिति नहीं है। स्मृति और परिकल्पना करना स्थिति नहीं है। स्थिति में उसके गुण स्वत: अनुभव होते हैं। जब हम निराकारी या फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में होंगे तो हम सम्पूर्णता-सम्पन्नता, दाता-वरदाता-विधातापन की अनुभूति करेंगे, बाकी समय ब्राह्मणपन में अर्थात् बाप से लेकर आत्माओं को दे रहे हैं, वह अनुभूति रहेगी। यह भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है कि दोनों ही स्थितियाँ एक-दूसरे की सहयोगी अर्थात् पूरक हैं।

इन दोनों स्थितियों का सफल अभ्यास और अनुभव करने के लिए जितना निराकार शिवबाबा और फरिश्ता स्वरूप ब्रह्मा बाबा के साथ प्यार होगा, सम्बन्ध की निकटता होगी, उनके गुण-धर्मों का ज्ञान होगा, उतना ही अनुभूति होगी। शिवबाबा के साथ प्यार और उनकी निकटता से हम अपने को सदा उनके समान मास्टर बीजरूप, मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर ज्ञान सागर, सदा साक्षी ... अनुभव करेंगे। ब्रह्मा बाबा के साथ प्यार और निकटता से हम उनके समान पुरुषार्थ कर फरिश्ता बन उनके साथ विश्व-कल्याण की सेवा में रहेंगे, उनके समान महादानी-वरदानी बन विश्व-कल्याण की सेवा करेंगे, उनके समान जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहेंगे। दुखी-अशान्त आत्माओं के दुख-दर्द को अनुभव कर, उसके निवारण का यथार्थ पुरुषार्थ कर सकेंगे।

Q. क्या बाहर जो गीत बज रहा है, उसे सुनते या हेड-फोन से सुन रहे हैं या और कुछ सुन या देख रहे हैं, तो हम निराकारी या फरिश्ता स्थिति की अनुभूति में हैं, उस समय हम निराकारी या फरिश्ता स्थिति का अनुभव कर सकते हैं?

नहीं, क्योंकि निराकारी स्थिति में स्थित आत्मा तो सुनने-देखने से भी परे होती है और फरिश्ता को ये सब सुनने-देखने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि वह तो सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण है और सदा विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर है। इस सम्बन्ध में बाबा ने एक मुरली में कहा है - मुरली सुनना भी योग नहीं है, वह तो तुम धन कमाते हो योग में तो सुनना-देखना भी सब बन्द हो जाता है।

जब तक हमारी बुद्धि देखने-सुनने में है तब तक हमारी निराकारी स्थिति हो नहीं सकती अर्थात् जब तक स्थूल इन्द्रियों से कोई रस अन्दर आ रहा है, तब तक वह स्थिति न निराकारी है और न फरिश्ता की स्थिति है। निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति की अनुभूति स्थूल इन्द्रिय रसों की अनुभूति से परे है।

इसी सम्बन्ध में विचारणीय है कि जब तक स्थूल इन्द्रियों से अन्दर आ रहा है, तब

तक हमारा विश्व-कल्याण का संकल्प बाहर कैसे जा सकता है क्योंकि तब तक हमको ही प्राप्ति की इच्छा है, हमारे अन्दर ही खालीपन है, और जब हमारा विश्व-कल्याण का संकल्प बाहर नहीं जा रहा है तो हमारी स्थिति फरिश्ता की कैसे हो सकती है क्योंकि फरिश्ता का समय-संकल्प-शक्ति तो सदा विश्व-कल्याणार्थ ही होता है।

ब्रह्मा बाबा के साकार पुरुषार्थी जीवन पर विचार करें तो क्या उन्होंने अपने पुरुषार्थ के लिए किसी स्थूल माध्यम का आधार लिया। वे सदा ही देह और देह की दुनिया के चिन्तन से मुक्त ज्ञान के चिन्तन में और विश्व-कल्याण के चिन्तन में रहे। इसलिए वे साकार देह में रहते भी देह से उपराम फरिश्ता स्थिति में रहे, और जो भी अन्य आत्मायें उनके सम्बन्ध-सम्पर्क में आई, उनको भी अनुभव कराया और अब तो वे साक्षात् फरिश्ता रूप में ही हैं, इसलिए अभी वे ज्ञान के चिन्तन से भी मुक्त हैं, सदा ही विश्व-कल्याणार्थ सर्वात्माओं के और विशेषकर ब्राह्मण परिवार की आत्माओं एवं एडवान्स पार्टी की आत्माओं को विशेष शक्ति का सहयोग देने के लिए उड़ते रहते हैं क्योंकि फरिश्ता धरती के आकर्षण से मुक्त सदा उड़ती कला की स्थिति में होता है। वह कहाँ भी रुकता नहीं है और न उसको कहाँ रुकने की आवश्यकता है।

बाबा कहते हैं - मैं अमृतवेला बच्चों को विशेष शक्ति देता हूँ। अब विचारणीय है कि कौनसा ऐसा क्षण है, जब सारे विश्व में कहाँ न कहाँ अमृतवेला नहीं है और वहाँ के बच्चे बाबा को याद नहीं कर रहे हैं। इस सत्य पर विचार करें तो स्पष्ट समझ में भी आता है और अनुभव भी होगा कि बाबा कैसे हर क्षण विश्व-कल्याणार्थ उड़ते रहते हैं, कभी भी एक क्षण के लिए रुकते नहीं हैं और रुक भी नहीं सकते हैं।

जब तक स्थूल इन्द्रियों से अन्दर आ रहा है, तब तक इन दोनों स्थितियों की अनुभूति हो नहीं सकती है अर्थात् हमारी वह स्थिति नहीं है। निराकारी स्थिति की अनुभूति और स्थिति के लिए हम देखें तो जब अव्यक्त बापदादा गुल्जार दादी जी के तन में आते हैं और दृष्टि देते हैं, जिससे हम इस साकार देह और सूक्ष्म देह दोनों से मुक्त बीजरूप स्थिति में अपने को अनुभव करते हैं, वही साकार देह में रहते हमारी निराकारी स्थिति का यथार्थ अनुभव है। उस समय गीत भी नहीं बजता है।

ऐसे ही जब आदरणीय जानकी दादी जी योग कराती हैं और योग के बाद दृष्टि देती हैं तो हम उस स्थिति का अनुभव करते हैं। ऐसे ही जब हमारी योग में स्थिति अच्छी होती है तो भी कभी-कभी ऐसा अनुभव होता है।

जब तक स्थूल इन्द्रियों से हमारे अन्दर आ रहा है या हमको कुछ लेने-पाने की

इच्छा है, तब तक इस निराकारी और फरिश्ता स्थिति का अनुभव नहीं हो सकता अर्थात् हमारी यह ड्रिल यथार्थ नहीं है। वह प्राप्त करने की चाहना भले ही शिवबाबा या फरिश्ता रूपधारी बापदादा से ही क्यों न हो। बाबा ने अनेक बार कहा है - तुमको अपनी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की बनानी है। बाबा से भी माँगना नहीं है क्योंकि वह दाता है और बाबा ने हमको सबकुछ दिया है और स्वत: दे रहे हैं, हम उसको देखें और उसका अनुभव करें। बाबा ने कहा है - बाबा से भी अगर माँगते हो तो बाबा को मनुष्य बना देते हो क्योंकि माँगने से देने वाला मनुष्य होता है, मैं तो दाता हूँ, बिना माँगे ही सबकुछ देता हूँ, माँगने की दरकार नहीं है। इस देह में रहते निराकारी और फरिश्ता स्थिति तो दाता-वरदाता की स्थिति है।

यहाँ ये भी विचारणीय है कि स्थिति और स्मृति एक नहीं है, दोनों में महान अन्तर है। स्मृति पुरुषार्थ है, जबकि स्थिति मंजिल है। स्थिति में अनुभूति समाई रहती है अर्थात् स्वत: होती है। यदि कोई समझते है कि हैं अर्थात् उपर्युक्त साधनों को प्रयोग करते हुए ये अनुभूति होती है या हो सकती है तो वह विचारणीय है और यदि समझते नहीं है या नहीं हो सकती, तो कैसे हो, वह भी विचार करना अति आवश्यक है।

Q . क्या शान्ति में स्थित होकर अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप का ध्यान करना या फरिश्ता स्वरूप का ध्यान करना या याद करने की स्थिति बाबा ने जो ड्रिल बताई है, उसका यथार्थ रीति अभ्यास है ?

नहीं, वास्तव में बाबा ने जो ड्रिल बताई है, उसके लिए ये पुरुषार्थ मात्र है परन्तु वह स्थिति नहीं है। बाबा ने निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति की 10-10 मिनट उसकी स्मृति या ध्यान करने के लिए नहीं कहा है बल्कि उस स्थिति में स्थित होने के लिए कहा है। इसकी सत्यता को समझने के लिए हठ्ठयोग के दो शब्द बहुत सहायक सिद्ध होते हैं। हठयोग के अष्टांग योग में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि का वर्णन किया गया है। उसमें सातवीं स्थिति में ध्यान है और उसके बाद समाधि है। बाबा ने जो स्थिति बताई है, वह समाधि की है, ध्यान उस स्थिति के लिए पुरुषार्थ मात्र है। समाधि अर्थात् उस स्थिति में स्थित होकर, उसके गुणों के अनुभूति में खो जाना ही यथार्थ स्थिति है।

Q. अब हम इस निराकारी और फरिश्ता स्थिति की ड्रिल सारे दिन में 12-12 बार कैसे करें ?

हमको इस स्थिति के अभ्यास के लिए सदा विशेष संकल्प रखना होगा कि जब हमारे ट्रैफिक कन्ट्रोल के गीत बजते हैं तो उस समय हमको विशेष ध्यान रखकर इस अभ्यास को बढ़ाना होगा क्योंकि जब तक हमारी बुद्धि, जो गीत बज रहा है, उसको सुनने में, उसके शब्दों में है,

तब तक हम सही रीति से निराकारी और फरिश्ता रूप की स्थिति में स्थित नहीं है। वह गीत हमको इस अभ्यास के लिए स्मृति दिला रहा है, उसको सुनकर अपनी दिनचर्या, स्थान, समय को देखकर इस स्थिति का अभ्यास करने का विशेष पुरुषार्थ करना होगा क्योंकि स्थान और समय को देखकर हम गीत के बाद उस स्थान पर हम 10 मिनट तक खड़े या बैठे रह सकते हैं या नहीं, वह भी देखना होगा और अभ्यास करना होगा। फिर भी जो गीत बजते हैं, उस समय स्मृति रखेंगे और ट्रैफिक कन्ट्रोल का सही रीति संकल्प रखेंगे, उसका अभ्यास करेंगे तो इस निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास में सफलता अवश्य मिलेगी।

इस निराकार और फरिश्ता स्थिति के सफल अभ्यास और मनवान्छित सफलता प्राप्त करने के लिए साकार ब्रह्मा बाबा और अव्यक्त बापदादा के समय-समय पर उच्चारे महावाक्यों को भी ध्यान में रखना होगा।

"यह है अजपाजाप। मुख से कुछ बोलना नहीं है। गीत भी स्थूल हो जाता है। बच्चों को सिर्फ बाप को याद करना है। नहीं तो गीत आदि याद आते रहेंगे। तुमको तो आवाज़ से परे जाना है। बाप का डायरेक्शन है ही - मनमनाभव। बाप थोड़ेही कहते हैं कि गीत गाओ, रड़ी मारो। मेरी महिमा गायन करने की भी दरकार नहीं है।" सा.बाबा 11.11.05 रिवा.

"कहेंगे - हम तो शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे ? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है। अपने को ह्लगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं। याद में देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं। ... अपने को मियां मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना है।"

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"फरिश्ता बनना वा निराकारी कर्मातीत अवस्था बनाने का विशेष साधन है - निरहंकारी बनना। निरहंकारी ही निराकारी बन सकता है। इसलिए बाप ने ब्रह्मा द्वारा लास्ट मन्त्र में निराकारी के साथ निरहंकारी कहा है। (निराकारी स्थिति में देह और देह की दुनिया भूली हुई होती है)" अ.बापदादा 15.12.02

"बापदादा एक सेकण्ड में अशरीरी भव की ड्रिल देखना चाहते हैं। अगर अन्त में पास होना है तो यह ड्रिल बहुत आवश्यक है। इसलिए अभी इतने बड़े संगठन में बैठे एक सेकण्ड में देहभान से परे स्थिति में स्थित हो जाओ। कोई आकर्षण आकर्षित न करे।"

अ.बापदादा 30.11.05

"यह तो सब जानते हैं कि मैं आत्मा हूँ लेकिन मैं आत्मा कौनसी आत्मा हूँ ? मैं करावनहार आत्मा हूँ और ये कर्मेन्द्रियाँ करनहार हैं, यह करावनहार का स्वमान कर्म करते स्मृति स्वरूप

में रहे। ... लेकिन मैं करावनहार हूँ, मालिक हूँ - इस सीट पर अगर सेट हैं तो हर कर्मेन्द्रियाँ आर्डर में रहेगी। बिना सीट पर सेट होते कोई किसका नहीं मानता है।"

अ.बापदादा 18.1.10

विचारणीय है कि यहाँ बाबा ने देहाभिमान नहीं लेकिन देहभान शब्द प्रयोग किया है। यह भी विचारणीय है कि जब अव्यक्त बापदादा मुरली के बीच में ये ड्रिल कराते हैं, तब कोई गीत आदि नहीं बजता है, साइलेन्स में बाबा दृष्टि देते हैं और हम उस स्थिति में स्थित होते हैं, उस समय आत्मायें परम-शान्ति और परम-शक्ति का अनुभव करती हैं।

ब्रह्मा बाबा को साकार जीवन में जिन्होंने देखा या उनके विषय में सुना कि बाबा चलते-फिरते भी अपने सम्पन्न और सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप में जीवनमुक्त स्थिति में रहते भी बीच-बीच में निराकारी स्वरूप में अर्थात् दैहिक कर्मों से परे डीप साइलेन्स की स्थिति में चले जाते थे।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास के लिए साधन और साधना

Q. बाबा ने जो ड्रिल बताई, उसके लिए साधन और साधना क्या है अर्थात् उसके लिए अभीष्ठ पुरुषार्थ क्या है ?

साधन

निश्चय - A. 1. हमको निश्चय हो कि ये केवल पुरुषार्थ ही नहीं है, प्राप्ति भी है अर्थात् इसमें परमानन्द की अनुभूति समाई हुई है अर्थात् आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है, 2. ये पुरुषार्थ समय अनुसार अति आवश्यक है क्योंकि चारो तरफ दुख-अशान्ति का वातावरण है, 3. आने वाले समय में ये अभ्यास हमारी सुरक्षा का साधन बनेगा और भविष्य प्राप्ति का आधार है। 4. बाबा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें निश्चय अर्थात् आत्मा, परमात्मा, ड्रामा और परिवार आदि के विषय में जो गुण-धर्म बताये हैं, उनके विषय में पूरा निश्चय।

B. गायन है निश्चयबुद्धि विजयन्ति। जिसको ये निश्चय होगा कि इस अभ्यास में हम जो समय देंगे, उससे हमारा कोई काम रुक नहीं सकता और न बिगड़ सकता है। बल्कि इस स्थिति के सफल अभ्यास से हमारे सभी काम अच्छे ते अच्छे होंगे और सफलता पूर्वक समय पर सम्पन्न होंगे क्योंकि ये सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमात्मा की श्रीमत है और समय की पुकार है। आज्ञा पालन करने वाले को आज्ञा देने वाले का सहयोग स्वत: मिलता है। इसमें ही हमारा

और विश्व का कल्याण निहित है।

C. निराकार और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास के लिए इस बात का निश्चय होना भी अति आवश्यक है कि इस अभ्यास को करने अर्थात् इसमें समय देने से हमारे किसी काम में बाधा नहीं आ सकती है। और ही इस अभ्यास को करने से हमारे व्यवहारिक कामों में सफलता मिलेगी। निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित होने के अभ्यास करने से आत्मिक शक्ति बढ़ती है, जिससे आत्मा की सर्व आवश्यकतायें स्वत: पूर्ण होती हैं, इसलिए उनको किसी प्रकार की चिन्ता या फिकर करने की आवश्यकता नहीं है। गायन है निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

साधना

1. बापदादा से मिले ज्ञान का मनन-चिन्तन और उसकी यथार्थ रीति धारणा, 2. उस स्वरूप और स्थिति की बार-बार स्मृति, 3. खान-पान की शुद्धि और मात्रा भी अति सूक्ष्म रहे, 4. संग की परहेज़, 5. अन्तर्मुखता की विशेष साधना अर्थात् साकार ब्रह्मा बाबा के समान सुनते-देखते भी देखने-सुनने से परे स्थिति में स्थित होने का अभ्यास और इस अभ्यास के लिए मुख्य साधना है - साकार बाबा के समान देह में रहते, देह से न्यारी स्थिति में स्थित होने का अभ्यास। अव्यक्त बापदादा ने यह भी कहा है कि ब्रह्मा बाबा ने पहले-पहले अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का जो अभ्यास किया, वही उनकी सफलता का मूलाधार है। वह अभ्यास हर पुरुषार्थी के लिए अति आवश्यक है।

बाप और दादा के समान निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास करने और उस स्थिति में स्थित होने के लिए हमको ब्रह्मा बाप समान सुनते-देखते हुए भी उससे परे रहने का अभ्यास करना होगा। शिवबाबा तो है ही निराकार, वह जो भी सुनाता है या कोई कर्म करता है, वह उससे पहले न उसके लिए सोचता है और न बाद में सोचता है, इसलिए वह सोचने और संकल्प से भी परे, सदा ही निर्संकल्प स्थिति में रहता है। शिवबाबा सुनाने और कर्म करने के बाद उसको याद भी नहीं करता है। ड्रामा की सुई अपने समय पर पहुँचती है और शिवबाबा के द्वारा कार्य होता है। निराकारी स्थिति भी ऐसी ही स्थिति है। बाबा हमको भी उस स्थिति के लिए प्रेरित करता है, परन्तु ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा के लिए ज्ञान का मनन-चिन्तन करने के लिए अवश्य कहता है। बाबा ने यह भी कहा है - तुमको न भूतकाल का चिन्तन करना है और न ही भविष्य की चिन्ता करनी है, तुम वर्तमान में बाप की याद में रहेंगे, तो भविष्य स्वत: ही अच्छे ते अच्छा होगा, उसके लिए ही बाबा ने ड्रामा का ज्ञान दिया है।

मनुष्य के दुख का मूल कारण और इस अभ्यास की सफलता में मुख्य विघ्न भविष्य की चिन्ता और अन्धकारमय भविष्य की आशंका से जनित व्यर्थ संकल्प हैं। इस देह और देह की दुनिया से न्यारे होने के अभ्यास और परमात्मा की याद के द्वारा ही हम अपने पूर्व के किये गये विकर्मों के फलस्वरूप आने वाले कर्मभोग को सहन करने में समर्थ होंगे, वर्तमान और भविष्य में कोई विकर्म न हो, उससे बचे रहेंगे, उस स्थिति में रहने से अभी भी परमानन्द की अनुभूति में रहेंगे और अन्त समय भी परमात्मा की याद रहेगी। इससे श्रेष्ठ कर्म की शक्ति आयेगी और जब श्रेष्ठ कर्म करेंगे, तो भविष्य निश्चित ही अच्छा होगा क्योंकि सर्व प्राप्तियों के आधार तो हमारे कर्म ही हैं। जब वर्तमान में हमारे कर्म श्रेष्ठ होंगे तो हमको अन्धकारमय भविष्य की आशंका या चिन्ता हो नहीं सकती। जब आशंका और चिन्ता नहीं होगी तब ही हम समय पर यथार्थ रीति ये अभ्यास कर सकेंगे। शुभाशुभ की आशंका भी हमारे पुरुषार्थ में बड़ा विघ्न है, जिसका मूल कारण अज्ञानता है, जो ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिये गये यथार्थ ज्ञान की धारणा से ही मिट सकती है।

अभी तो ब्रह्मा बाबा फरिश्ता रूप में है और विश्व-कल्याण का कर्तव्य कर रहे हैं, इसके लिए उनको एडवान्स पार्टी, ब्राह्मण आत्माओं की पालना करने, उनको शक्ति देने और साइन्टिस्ट आदि को भी प्रेरित करने के लिए संकल्प तो करना होता है परन्तु उनका कोई भी संकल्प व्यर्थ नहीं होता है। हर संकल्प और हर सेकण्ड विश्व-कल्याण का ही रहता है अर्थात् उनकी स्थिति सदा निर्विकल्प है। विवेक तो ये कहता है कि ब्रह्मा बाबा को भी संकल्प करने की आवश्यकता नहीं होती है, ड्रामानुसार शिवबाबा के समान उनसे भी समय अनुसार सब कार्य स्वत: होते हैं।

निराकारी आत्मिक स्वरूप परम शान्त और सर्व शक्तियों से सम्पन्न है। निराकारी स्थिति में स्थित होने से आत्मा को स्वयं को भी परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है और उसके सानिध्य में आने वाली आत्माओं को भी उससे वह अनुभूति होती है। फरिश्ता स्वरूप परम कल्याणमय और परमानन्दमय स्थिति है। इस स्थिति में स्थित आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है और उसके सानिध्य में आने वाली आत्मायें भी अस्थाई रूप में वह अनुभव करती हैं।

बाबा ने 10-10 मिनट 12 बारी निराकारी और 12 बारी फरिश्ता स्थिति में स्थित रहने के अभ्यास के लिए कहा है, उसको दृढ़ता से करना है। बाबा ने निराकारी या फरिश्ता स्थिति को याद करने के लिए नहीं, उस स्थिति में स्थित होने के लिए कहा है। स्थिति में स्थित होना और स्थिति की याद दोनों अलग-अलग हैं, उसको भी समझना और बुद्धि में रखकर

अभ्यास करना अति आवश्यक है।

बाबा ने ये अभ्यास बीच-बीच में अन्तर देकर करने के लिए कहा है। ऐसे नहीं कि 12-12 बारी, 10-10 मिनट के हिसाब से एक साथ एक ही समय पर 4 घण्टा कर लें तो लक्ष्य पूरा हो जायेगा। बाबा का भाव है कि 12-12 बारी बीच-बीच में अन्तर रखकर ये अभ्यास करने से यह निरन्तर हो सकेगा क्योंकि एक बार के अभ्यास की अनुभूति बहुत समय तक कार्य करती है। इसलिए हमको बीच-बीच में अन्तर रखकर पूरे 24 घण्टे में करना है, जिससे हमारी वह स्थिति निरन्तर हो सके और अन्त समय हम उस स्थिति में देह का त्याग कर सकें।

सार रूप में साधन है यथार्थ ज्ञान और साधना है मनन-चिन्तन कर उस ज्ञान की धारणा और सतत अभ्यास। हमारा अभ्यास सतत रहे, इसके लिए बाबा ने यह 12-12 बार करने के लिए कहा है।

Q. बाबा ने हमको परम सत्य का ज्ञान दिया है, उसका हमारी इस निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति के अभ्यास में क्या महत्व है और उस ज्ञान को पाकर हमारा कर्तव्य क्या है अर्थात् हमारा पुरुषार्थ क्या है और क्या होना चाहिए ?

बाप ने इस विश्व-नाटक के परम सत्य का ज्ञान दिया है, जिसमें सब प्रकार के रहस्यों का ज्ञान समाया हुआ है। उस ज्ञान को पाकर हमारा कर्तव्य यही है कि हम उस ज्ञान को अच्छी रीति समझकर, धारण कर हम जो हैं, अपने उस आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायें। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका से सदा मुक्त होती है अर्थात् उसमें ये सब हो नहीं सकता और जहाँ ये सब नहीं होंगे, तब ही आत्मा अपने निराकारी आत्मिक स्वरूप या फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकेगी। विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थता को देखें तो उसमें राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, किसी प्रकार की आशंका का कोई स्थान ही नहीं है। इनसे मुक्त आत्मा की ही निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति होगी अर्थात् निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की होगी, जो सर्व प्राप्तियों का आधार है और सर्व पुरुषार्थ का मूल है। साकार स्वरूप से ऊपर है फरिश्ता स्वरूप और फरिश्ता से भी ऊपर है निराकारी स्थिति अर्थात् कर्मातीत स्थिति। फरिश्ता स्वरूप और निराकारी स्वरूप सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण है। उस स्थिति में आत्मा में किसी प्रकार से लेने का संकल्प हो नहीं सकता। जब तक कुछ लेने की इच्छा है या लेकर देने की इच्छा है तब तक उसे सम्पूर्ण और सम्पन्न फरिश्ता नहीं कहा जाता है, भले ही वह परमात्मा अर्थात् बापदादा से प्यार, शक्ति पाने

की इच्छा क्यों न हो। क्योंकि फरिश्ता सम्पन्न स्थिति है और निराकारी स्थिति में तो कुछ प्राप्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता है। जब सतयुग में देवतायें, जो साकार रूपधारी हैं, उनको भी किससे कुछ प्राप्त करने की इच्छा-आकांक्षा नहीं होती है, तो फरिश्ता या निराकारी स्थिति वाले को कैसे इच्छा-आकांक्षा हो सकती है। फरिश्ता तो सदा लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्वरूप में स्थित देने वाला स्वरूप होता है। परमात्मा या बापदादा से शक्ति लेकर विश्व की आत्माओं को देने वाले ब्राह्मण होते हैं अर्थात् पुरुषार्थी होते हैं, फरिश्ता या निराकारी स्थिति वाले नहीं क्योंकि निराकारी और फरिश्ता स्थिति सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति है। जो सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति में होगा, वह विश्व की दुखी-अशान्त आत्माओं की सेवा अवश्य करेगा। देने वाले के ज्ञान-गुण-शक्तियों का विकास स्वत: होता है।

Q. गायन है कि सायंकाल के सन्धिकाल अर्थात् नुमाशाम को फरिश्ते चक्कर लगाते हैं, तो वे फरिश्ते कौन हैं? क्या वे कोई चेतन आत्मायें हैं, जिनका स्वतन्त्र अस्तित्व है या केवल गायन मात्र ही है? इस गायन का भी आधार क्या है अर्थात् इन फरिश्तों की बात कहाँ से निकली है?

जैसे शिवबाबा ब्रह्मा तन में आये और फरिश्ता स्वरूप में उनका साक्षात्कार होना आरम्भ हो गया और ब्रह्मा तन में साकार में रहते भी उनसे अनेक प्रकार के भविष्य जीवन के और वर्तमान में सम्पूर्णता के अनेक साक्षात्कार होते रहे। ऐसे ही जब धर्मपितायें अपने धर्म स्थापनार्थ परकाया प्रवेश करते हैं तो उनके भी फरिश्ता रूप में साक्षात्कार होता है, जिसका अनेक धर्मों में गायन है क्योंकि धर्म-पिता की आत्माओं की आत्मायें जिस तन में प्रवेश करती हैं, उसके सूक्ष्म स्वरूप का साक्षात्कार होता है, जिससे उसके प्रति आत्माओं का आकर्षण बढ़ता है। वर्तमान में ब्रह्मा बाबा ऐसे फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो हम आत्माओं को विश्व सेवा के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

भक्ति में प्राय: सभी धर्म वाले प्रात: और सायंकाल को विशेष भक्ति करते हैं क्योंकि इन दोनों सन्धिकाल में आत्मा को एकाग्र होने में वातावरण का विशेष सहयोग होता है। इसलिए धर्म स्थापना के निमित्त बनी हुई वे धर्मपिताओं की आत्मायें और जिनमें वे प्रवेश करते हैं, वे आत्मायें भी सायंकाल के सन्धिकाल में अन्य आत्माओं को प्रेरित करने का पुरुषार्थ अवश्य करते होंगे और आत्माओं को उनका साक्षात्कार होता होगा, इसलिए वहीं से ये बात निकली है। विभिन्न धर्मों की स्थापना में भी ये फरिश्तों के आने की बातें वर्णित हैं। बाबा ने भी दिन-रात के संगम समय अर्थात् अमृतवेले और सायंकाल विशेष योग का अभ्यास करने का नियम बनाकर दिया है। हमारा विश्व-शान्ति का योग भी सायंकाल ही होता है। अनुभव भी

ऐसा कहता है कि उस समय अभ्यास करने से आत्मा को सहज देह से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में होकर परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति करती है। बाबा ने यह भी कहा है कि अमृतवेले ज्ञान का मनन-चिन्तन करो और सायंकाल सूक्ष्म रूप से विश्व में चक्र लगाओ और विश्व-शान्ति के लिए मन्सा सेवा करो।

यह भी देखा गया है और अनुभव में भी आता है कि सन्धिकाल और संगम के स्थान आत्मा को देह और देह की दुनिया को भूलकर भक्ति करने या ज्ञान मार्ग में योगाभ्यास और ज्ञान के चिन्तन के पुरुषार्थ करने में अधिक सहायक होते हैं। जैसे दिन-रात का सन्धिकाल, ऋतुओं का सन्धिकाल, कल्प का सन्धिकाल, साल का सन्धिकाल, नदियों के संगम के स्थान, सागर-नदियों के संगम के स्थान, पहाड़ों और समतल भूमि के संगम के स्थान आदि-आदि। ऐसे स्थानों पर और ऐसे समय पर आत्मा को विशेष शान्ति और शक्ति की अनुभूति होती है। इसलिए भारतीय सभ्यता में ऐसे संगम के स्थानों का विशेष महत्व है और वहाँ पर विशेष तीर्थ स्थल बनाये हैं।

Q. सूक्ष्मवतन में फरिश्ते रहते हैं, तो क्या सब आत्मायें फरिश्ता स्वरूप में सूक्ष्मवतन में जायेंगी या केवल ब्रह्मा बाबा का और कुछ निमित्त आत्माओं का ही पार्ट है?

वास्तव में जैसे ब्रह्मा बाबा सूक्ष्मवतन में फरिश्ते स्वरूप में हैं, वैसे सभी आत्माओं को भी सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में जाना है क्योंकि सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में जाने के बाद ही आत्मायें निराकारी रूप धारण कर परमधाम में जाती हैं अर्थात् हर आत्मा को सूक्ष्मवतन से फरिश्ता स्वरूप में पास करना ही होता है परन्तु वहाँ जाने और रहने का समय किसी का एक सेकण्ड का होता है और किसी का 40-50 साल तक होता है। जैसे ब्रह्मा बाबा 40-45 साल से सूक्ष्मवतन में हैं और वहाँ से नई दुनिया की स्थापना का कर्तव्य कर रहे हैं और कोई आत्मायें जब परमधाम जायेंगी तो एक सेकण्ड के लिए ही उससे पास करेंगी। सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में पार्ट बजाने का आधार भी ब्राह्मण जीवन में साकार में रहते फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास और उस स्थिति में रहकर कर्म करने से है। दोनों स्थितियों का गहरा सम्बन्ध है। ब्रह्मा बाबा ने साकार में पुरुषार्थ करके अपना फरिश्ता स्वरूप दिखाया अर्थात् कर्म करते भी फरिश्ता स्वरूप में रहे, जिसके फलस्वरूप ही वे 40-45 साल से सूक्ष्मवतन में फरिश्ता रूप में रहते पार्ट बजा रहे हैं, नई दुनिया के निर्माण का कर्तव्य कर रहे हैं।

Q. बाबा ने कहा है - सारा बोझ बाबा को दे दो और तुम लाइट-माइट स्वरूप फरिश्ता बन जाओ, बाप बच्चों का बोझ लेने के लिए ही आये हैं। तो बोझ बाबा को देने का विधि-विधान क्या है और उसका इस निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति के अभ्यास में क्या महत्व

है?

Q. आत्मा पर बोझ क्या है और अपना बोझ बाबा को देने का विधि-विधान क्या है?

इस विश्व-नाटक में हर आत्मा को पंच तत्वों से निर्मित पदार्थों या प्रकृति प्रदत्त साधन-सम्पत्ति का उतना ही उपभोग करने का अधिकार है, जिससे उसकी कार्यक्षमता बढ़ती है। यदि कोई आत्मा आवश्यकता से अधिक प्रकृति प्रदत्त साधन-सम्पत्ति का उपभोग करती है या उनका दुरुपयोग करती है तो उससे आत्मा पर बोझ चढ़ता है। यहाँ यह भी विचारणीय है कि सतयुग में भी हम जो प्रकृति के साधन-सम्पत्ति का उपभोग करते हैं, उससे भी आत्मा का जमा का खाता कम अवश्य होता है परन्तु वह आत्मा पर बोझ नहीं होता है क्योंकि आत्माओं का संगम पर किये गये पुरुषार्थ से खाता जमा है, आत्माओं को बाप का वर्सा मिला हुआ है और वहाँ प्रचुर साधन-सामग्री होते भी कोई आत्मा आवश्यकता से अधिक उपभोग नहीं करती है। द्वापर से जब आत्मायें देहाभिमान में आकर राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका के वशीभूत व्यर्थ संकल्प करते, विकर्म करते तो आत्मा पर बोझा अधिक चढ़ता है।

जो आत्मा सच्चे दिल से बाबा को अपने दिल में बिठाता है अर्थात् याद करता है, वह सहज ही अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाता है और सारा ज्ञान समय पर उसकी बुद्धि में इमर्ज होता रहता है, जिससे वह सदा ही अपने जीवन में हल्केपन की अनुभूति करता है क्योंकि आत्मिक स्वरूप तो हल्का ही है, उसमें किसी तरह का कोई बोझ है ही नहीं और यथार्थ ज्ञान की धारणा वाले को यह दुनिया एक खेल अनुभव होता है, इसलिए उसके जीवन में कोई बोझ अनुभव नहीं होता है।

निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि की सिद्धि अर्थात् निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के सफल अभ्यास से आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति होती है। ऐसे ही निराकारी स्थिति में स्थित आत्मा को शान्ति और शक्ति की अनुभूति होती है, जिससे आत्मा निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प स्थिति का अनुभव करती है। सूक्ष्म फरिश्ता स्वरूप में बापदादा के साथ सेवा करने से आत्मा को हल्केपन और आनन्द की अनुभूति होती है। विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझकर साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखने और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाने से आत्मा को परम सुख की अनुभूति होती है, इसलिए आत्मा सदा हल्केपन की अनुभूति करती है।

आत्मिक स्वरूप राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका से सदा मुक्त परमानन्दमय है। ड्रामा के यथार्थ ज्ञान की धारणा हमको

इन सबसे मुक्त बना देती है। परमपिता परमात्मा हमको इन सबसे मुक्त होने के लिए ही ज्ञान देता है और शक्ति देता है तथा पुरुषार्थ कराता है, जो करता है, वह पाता है अर्थात् वही संगमयुग के यथार्थ सुख अर्थात् अतीन्द्रिय सुख को अनुभव करता है।

जो दिल से बाबा को याद करता है, उसको बाबा की मदद स्वत: मिलती है, उसे माँगने की भी आवश्यकता नहीं रहती है।

व्यर्थ संकल्पों का आत्मा पर सबसे बड़ा बोझ है, जो आत्मिक शक्ति को तीव्रता से नष्ट करते हैं, जिससे आत्मा अपने को थका हुआ अनुभव करती है। आत्मा-परमात्मा-ड्रामा का ज्ञान और परमात्मा का अव्यभिचारी साथ आत्मा को व्यर्थ से मुक्त कर सदा समर्थ बनाता है।

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा की यथार्थता पर विचार करें तो आत्मा को किसी तरह से बोझ उठाने की आवश्यकता नहीं है अर्थात् आत्मा पर किसी प्रकार का बोझ नहीं है क्योंकि आत्मिक स्वरूप स्वत: में अति हल्का परमानन्दमय है और विश्व-नाटक भी परमानन्दमय है, परमात्मा ने तो ये सत्य ज्ञान दिया ही है और सब तरह से बच्चों की मदद कर ही रहा है। आवश्यकता है आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की। जो बाबा के इन महावाक्यों पर निश्चय करके उनको दिल से याद करेगा, वह सहज ही हल्केपन का अर्थात् निराकारी आत्मिक स्वरूप या फरिश्ता स्वरूप का अनुभव करेगा

फरिश्ता कभी भी बोझ नहीं उठाता है और बोझ वाले कब फरिश्ता नहीं बन सकते हैं अर्थात् बोझ वाली आत्मायें फरिश्ता स्वरूप का अनुभव नहीं कर सकती हैं। निराकारी या फरिश्ता स्वरूप स्वरूप में तो बोझ उठाने का प्रश्न ही नहीं उठता है। इसलिए तन-मन-धन-जन और सम्बन्ध-सम्पर्क सब प्रकार के आकर्षण के बोझ से मुक्त आत्मा ही निराकारी स्वरूप और फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकती है अर्थात् दोनों स्वरूपों का सफलतापूर्वक अभ्यास कर सकती है और दोनों स्वरूपों से प्राप्त होने वाले आनन्द, शान्ति-शक्ति का अनुभव कर सकती है।

आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के ज्ञान की यथार्थता पर विचार करें तो आत्मा को किसी तरह का बोझ है ही नहीं और न ही किसी तरह का बोझ उठाने की आवश्यकता है क्योंकि आत्मिक स्वरूप सब प्रकार के बोझ से मुक्त परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक भी परमानन्दमय है तथा परमात्मा तो है ही परमानन्द का दाता। परमात्मा ने तो ये सत्य ज्ञान हमको दिया ही इसलिए है और अभी भी सब तरह से बच्चों की मदद कर ही रहा है। आवश्यकता है आत्मा को अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की, जिसके लिए बाबा पुरुषार्थ

की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बता रहा है और ये निराकारी और फरिश्ता रूप का अभ्यास भी उस पुरुषार्थ के लिए ही एक युक्ति है। जो आत्मा, परमात्मा और इस विश्व-नाटक के राज़ को समझकर यथार्थ रीति इस अभ्यास को करेगा, वह निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित होकर परमानन्द को अभी भी अनुभूति करेगा और भविष्य में आने वाली परिस्थितियों में भी उसको इससे सहयोग मिलेगा। ड्रामा के ज्ञान की यथार्थता पर विचार करें तो आत्मा पर किसी प्रकार का बोझ है ही नहीं क्योंकि ये विश्व-नाटक एक खेल है और खेल में आत्मा आनन्द का अनुभव करती है। आवश्यकता है इसके राज़ को समझकर अपने मूल स्वरूप में स्थित हो साक्षी होकर इसको देखने और ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाने की। इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को भूलकर, आत्मायें विभिन्न प्रकार के बोझ को उठाती हैं और उस बोझ के कारण थक जाती हैं। इस विश्व-नाटक के यथार्थ रहस्य को समझने वाली आत्मा तो इसको साक्षी होकर देखती है और देख-देख कर आनन्दित होती है क्योंकि ये विश्व-नाटक अनेकानेक गुह्य-गोपनीय और आश्चर्यजनक रहस्यों से परिपूर्ण है।

इन्द्रियों के रस, आत्मा के अपने स्वभाव-संस्कार, लौकिक सम्बन्धों के आकर्षण का बन्धन, आदि-आदि अनेक प्रकार के बोझ हैं, जो आत्मा को निराकारी और फरिश्ता स्थिति में स्थित होने नहीं देते हैं। जो आत्मायें इसकी यथार्थता को जानकर इनसे विरक्त होंगे, वे सहज इस अभ्यास को कर सकेंगे। बाबा ने इन स्थितियों में स्थित होने के अभ्यास के लिए कहा है, उसमें क्या-क्या बाधायें आती हैं, उनको समझकर उनको दूर करना हमारा पुरुषार्थ है, उसके लिए बाबा मददगार है परन्तु उसकी मदद लेना हमारा पुरुषार्थ है। विश्व-नाटक के ज्ञान की अच्छी समझ और उसकी धारणा से ये सब बाधायें स्वत: दूर हो जायेंगी और जब ये बाधायें दूर हो जायेंगी तो निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति का अभ्यास सहज और सफलतापूर्वक होगा।

साकार में आये परमात्मा को यथार्थ रीति पहचान कर उनका बन जाना और तन-मन-धन-जन से उन पर बलिहार जाना अर्थात् सच्चे दिल से समर्पित होकर सब उनका समझ लेना और उनकी श्रीमत पर ट्रस्टी बनकर सब कार्य करना ही बोझ बाप को दे देना है।

"बाप के प्यार की निशानी है कि बच्चों को जीवन में जो चाहिए, वह दे देता है, सर्व मनोकामनायें पूर्ण कर देता है।... सुख के भण्डार का मालिक बना देता है। कोई अप्राप्ति है? फिर यह नहीं कहना कि थोड़ी सी शक्ति दे दो। "दे दिया", इसलिए "दे दो" कहने की आवश्यकता ही नहीं है। बाप ने तो दे दिया सिर्फ उसको कार्य में लगाने की विधि चाहिए।"

अ.बापदादा 17.11.94

"बाप कहते हैं - अभी मैं तुमको कितना ज्ञान रत्नों से श्रृंगारता हूँ, फिर तुम लक्ष्मी-नारायण बनते हो। ... जैसे बाबा सवेरे उठकर विचार सागर मन्थन करते हैं, बच्चों को भी फॉलो करना है। तुम बच्चे जानते हो कि यह हार-जीत का वण्डरफुल नाटक बना हुआ है, इसको देखकर बहुत खुशी होती है। कब किससे घृणा नहीं आती।" सा.बाबा 19.01.10 रिवा.

"बाप के वर्से के अधिकारी सर्व फिकरों से फारिग और बाप द्वारा मिले हुए खज़ाने में सदा रमण करते रहते हैं, उनको दूसरा कोई अन्य संकल्प करने की भी फुर्सत नहीं रहती क्योंकि वह बाप द्वारा मिले खज़ाने को स्वयं में धारण करने व सर्व आत्माओं के प्रति बाँटने में ही बिज़ी रहते हैं। सबसे बड़े-ते-बड़ा धन्धा, बड़े-ते-बड़ा दान या बड़े-ते-बड़ा पुण्य यही है।"

अ.बापदादा 2.05.74

"यह है क़यामत का समय, अभी सबको हिसाब-किताब चुक्तू कर वापस घर जाना है। इसमें कोई तो योगबल से अपना हिसाब-किताब चुक्तू करते हैं और कोई फिर सज़ायें खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करते हैं। पाप का हिसाब-किताब सबको चुक्तू कर, पावन होकर ही वापस जाना है। ... बाप कहते हैं - मैं सबकी ज्योति जगाकर वापस ले जाऊंगा, फिर सबको अपने समय पर आकर अपना-अपना पार्ट बजाना है।" सा.बाबा 31.01.12 रिवा.

निराकारी स्थिति अर्थात् सदा लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति

निराकारी स्थिति और साकार तन में निराकारी स्थिति का प्रभाव और दोनों में अन्तर

विचारणीय है कि परमधाम में जब आत्मा अपनी निराकारी स्थिति में स्थित है तो उसमें कोई प्लस या माइनस नहीं होता है परन्तु जब साकार तन में रहते निराकारी स्थिति अर्थात् लाइट-हाउस, माइट-हाउस की स्थिति है, तो उससे लाइट-माइट फैलती है और वातावरण को प्रभावित करती है क्योंकि जब तक आत्मा देह में है, तब तक उसमें सूक्ष्म संकल्प रहता ही है, भले उसे निर्संकल्प स्थिति या निर्संकल्प समाधि के रूप में कहा गया है परन्तु परमधाम की निराकारी स्थिति में कोई संकल्प नहीं होता है इसलिए उसका व्यक्ति या वातावरण पर कोई प्रभाव नहीं होता है, इसलिए उसमें कोई प्लस-माइनस नहीं होता है। साकार देह में रहते निराकारी स्थिति में आत्मा को परमशान्ति और शक्ति की अनुभूति होती है, जिस अनुभूति के आधार पर वातावरण में वायब्रेशन जाता है और उसका वातावरण पर प्रभाव होता है और अन्य आत्मायें भी उससे प्रभावित होती हैं। इसलिए आत्मा में प्लस होता है अर्थात् आत्मिक शक्ति में वृद्धि होती है, जो परमधाम में नहीं होती है और जब आत्मा देहाभिमान के

वशीभूत विकर्म करती है तो अपने विकर्मों के कारण आत्मा का जमा का खाता माइनस होता है।

यह भी विचारणीय है कि सतयुग में आत्मायें कोई विकर्म नहीं करती हैं, फिर भी आत्मा का जमा का खाता माइनस होता है। वास्तव में आत्मा देह धारण कर इस जगत के जो भी साधन-सम्पन्ति का उपभोग करती है, उससे उसकी आत्मिक शक्ति का खाता घटता ही है अर्थात् माइनस होता ही है। जब आत्मा द्वापर से साधन-सम्पत्ति अनुचित उपभोग करती है या उनका दुरुपयोग करती हैं या अपने व्यवहार से अन्य आत्माओं को दुख देती है, तो ये माइनस की गति तीव्र हो जाती है, इसलिए सतयुग-त्रेता आधे कल्प आत्मिक शक्ति की 4 कलायें कम होती है, जबकि आगे के आधे कल्प में 12 कलायें कम हो जाती हैं।

फरिश्ता स्थिति अर्थात् बापदादा के समान प्रकाशमय काया और बापदादा के साथ की स्थिति

सूक्ष्मवतन की फरिश्ता स्थिति और साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का प्रभाव और दोनों में अन्तर

सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्थिति सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति है अर्थात् वह स्थिति साकार जगत के पार्ट से सम्पूर्ण अर्थात् साकार देह से कर्मातीत स्थति है, उसमें आत्मा को कोई चाहना नहीं होती है परन्तु आत्मा में विश्व-कल्याण का संकल्प होता है, जो लाइट-हाउस, माइट-हाउस के रूप में सारे विश्व में फैलता है और आत्मायें उस संकल्प से अपनी स्थिति और आवश्यकता अनुसार वायब्रेशन ग्रहण करते हैं अर्थात् लाभान्वित होते हैं। जैसे सूर्य की शक्ति से विभिन्न कार्य होते हैं यथा वह फलों को पकाती है, कीटाणुओं को मारती है, मनुष्यों को जीवनशक्ति प्रदान करती है... आदि-आदि। इसी प्रकार फरिश्ता स्वरूप से जो वायब्रेशन फैलता है, उससे वैज्ञानिक अपने अनुसार वायब्रेशन या प्रेरणा पाते हैं; ब्राह्मण अपने हिसाब से प्रेरणा या वायब्रेशन पाते हैं; एडवान्स पार्टी वाले अपने हिसाब से वायब्रेशन, प्रेरणा और शक्ति प्राप्त करते हैं, जिससे वह वायब्रेशन फैलाने वाली आत्मा में प्लस होता है क्योंकि उससे जो विश्व-कल्याण का कर्तव्य होता है, उसके आधार पर उस आत्मा में आत्मिक शक्ति का विकास अवश्य होगा, उसका प्रॉलब्ध का खाता जमा होता है।

फरिश्ता सदा उड़ता रहता है और उसके साथ परमात्मा या बापदादा सूक्ष्म में सदा साथ रहता है। जैसा कि नर-नारायण का गायन है परन्तु वहाँ नर रूप में अर्जुन और नारायण रूप में परमात्मा को दिखाया है। जो ब्राह्मण आत्मायें इस फरिश्ता स्वरूप में स्थित होती हैं, बापदादा उन सभी ब्राह्मण आत्माओं के साथ रहता ही है, उनको समय पर सहयोग देता ही है।

साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है, उसमें जो विश्व-कल्याण का वायब्रेशन फैलता है, उससे विश्व की सर्व आत्मायें अपने अनुसार प्रेरणा पाती हैं परन्तु उस समय आत्मा को आनन्द की अनुभूति होती है क्योंकि उस समय आत्मा साकार देह में है और उसका प्रभाव उसके सम्पर्क में आने वाली अन्य आत्माओं के ऊपर स्पष्ट रूप में पड़ता है, जिससे वे भी उसका अनुभव करते हैं। जैसे साकार बाबा से मिलने वाले करते थे। उस समय आत्मा को शिवबाबा से विभिन्न गुणों और शक्तियों की प्राप्ति की भी अनुभूति होती है परन्तु उसकी स्थिति इच्छामात्रम् अविद्या की होती है अर्थात् वह आत्मा अपने को भरपूर अनुभव करती है।

शिवबाबा या ब्रह्माबाबा से शक्ति लेना और फिर देना है ब्राह्मणपन की स्थिति। ब्राह्मण जीवन में लेना और देना दोनों काम होते हैं। ब्राह्मण जीवन मास्टर ज्ञान सागर, मास्टर सर्वशक्तिवान ... की स्थिति की अनुभूति होती है। ब्राह्मण जीवन सबसे महत्वपूर्ण जीवन है, जिसमें निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का अनुभव विशेष है, जो परमधाम की निराकारी स्थिति में और सूक्ष्मवतन की फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में नहीं हो सकता है। साकार में फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में विश्व-कल्याण का संकल्प अवश्य रहता है परन्तु सूक्ष्मवतन में स्वभाविक रूप से विश्व-कल्याण का कर्तव्य होता है, वहाँ संकल्प करने की भी आवश्यकता नहीं होती है।

भक्त अर्थात् माँगना। भक्तों की स्थिति परमात्मा से माँगने की होती है, दूसरों को देने की नहीं। जो परमात्मा के बन जाते हैं अर्थात् ब्राह्मण बन जाते हैं, वे माँगने अर्थात् भक्तपने से छूट जाते हैं क्योंकि वे परमात्मा को पहचान लेते हैं, जिससे उनका परमात्मा के साथ सम्बन्ध जुट जाता है, जिससे उनको परमात्मा से बिना माँगे ही सबकुछ मिलता है। उनको अपने आत्मा के, परमात्मा के, विश्व-नाटक के गुण-धर्मों का ज्ञान हो जाता है और परमात्मा से विश्व-कल्याण के लिए जो संकल्प मिलता है, वह संकल्प और कर्तव्य भी उनको विश्व-कल्याण के कर्तव्य को करने के लिए अवश्य प्रेरित करता है।

निराकारी-फरिश्ता स्थिति का अभ्यास और विश्व-नाटक का ज्ञान

वास्तविकता को देखा जाये तो विश्व-नाटक का ज्ञान ही हमको इन दोनों स्थितियों में सहज स्थित होने की शक्ति प्रदान करता है क्योंकि निराकार आत्मायें ही इस विश्व-नाटक में पार्टधारी हैं, देह तो एक वस्त्र मात्र है, इसलिए जिसको विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा होगी, वह सहज ही निराकारी स्थिति में स्थित हो जायेगा या रहेगा और निराकारी स्थिति के बाद फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का अभ्यास सहज होगा अर्थात् निराकारी स्थिति के सफल अभ्यास वाले की फरिश्ता स्थिति अवश्य ही होगी क्योंकि जब तक आत्मा इस देह में है, देह द्वारा पार्ट बजा रही है, तब उसके साथ सूक्ष्म शरीर तो होगा ही। इसके लिए ही परमात्मा ने आत्मा, परमात्मा के साथ विश्व-नाटक का भी ज्ञान दिया है। ये विश्व-नाटक का ज्ञान हम आत्माओं को परमात्मा का परम-उपहार है।

विश्व-नाटक का ज्ञान परमात्मा ने ही दिया है, इसलिए उसके साथ परमात्मा की याद भी अवश्य रहेगी। ऐसे ही ज्ञान सागर परमात्मा को यथार्थ रीति याद करेंगे तो विश्व-नाटक का ज्ञान बुद्धि में अवश्य इमर्ज होगा। विश्व-नाटक के गुण-धर्मों की धारणा सहज ही हमको देह, देह के सम्बन्ध और देह की दुनिया भुला देती है क्योंकि विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से आत्मा सहज ही नष्टोमोहा-स्मृति स्वरूप हो जाती है, जिससे आत्मा सहज ही राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, इच्छा-आकांक्षा, शुभाशुभ की आशंका से मुक्त हो जाती है, जो व्यर्थ संकल्पों के मूल कारण हैं और व्यर्थ संकल्प ही इस स्थिति में स्थित होने में बाधक भी होते हैं।

विश्व-नाटक का ज्ञान ही हमको इस नाटक के अन्त और आदि की याद दिलाता है अर्थात् घर जाने के समय की याद दिलाता है क्योंकि कल्पान्त में ही सभी आत्मायें परमात्मा के साथ घर जाती हैं और फिर नये कल्प में नम्बरवार पार्ट बजाने आती हैं। घर में तो आत्मा निराकार रूप में ही जायेगी और उसके पहले सूक्ष्मवतन से पास होना ही पड़ेगा, जिससे फरिश्ता स्वरूप भी याद आता ही है। इसलिए विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा वाला सहज ही निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकता है।

जो आत्मा देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने निराकार स्वरूप या फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास में होगी, उसकी मन-बुद्धि परमात्मा के साथ अवश्य होगी, जिससे उसकी बुद्धि में विश्व-नाटक के ज्ञान की भी अवश्य ही धारणा होगी, ड्रामा के गुह्य राज़ उसकी बुद्धि में सहज स्पष्ट होते रहेंगे।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति तथा रोग-शोक अर्थात् कर्मभोग

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के सफल अभ्यास वाले को या तो रोग-शोक होता ही नहीं है और यदि भूतकाल के कर्मों के फलस्वरूप कोई कर्मभोग होता भी है तो उसमें उसको सहन करने या उनका सामना करने की शक्ति होती है। परन्तु ये शक्ति रोग-शोक के समय पुरुषार्थ से नहीं आयेगी और न ही उस समय आत्मा इसका अभ्यास कर सकेगी। उसके लिए अभ्यास तो पहले से ही करना होगा और जो इस अभ्यास को पहले से करके अपने में आत्मिक शक्ति को संचित करेगा, उसको ही उस समय वह शक्ति काम आयेगी।

यदि कोई आत्मा अपने फरिश्ता स्वरूप अर्थात् सूक्ष्म देह में स्थित होकर परमात्मा पिता की याद में अपने कर्मभोग के ऊपर शुभ-भावना की किरणें डाले तो वह उस रोग-शोक से मुक्त हो सकता है अर्थात् उसमें राहत अनुभव करेगा और समयान्तर में मुक्त भी हो जायेगा।

Q. निराकार और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास का हमारे भूतकाल, वर्तमान और भविष्य से क्या सम्बन्ध है?

इस अभ्यास से हम अपने भूतकाल में किये गये पुरुषार्थ को और भूतकाल की स्थिति को भी समझ सकते हैं और वर्तमान में क्या पुरुषार्थ करना है, उसकी दिशा-दशा और गति को निश्चित कर सकते हैं।

निराकार स्थिति में स्थित होने के अभ्यास के लिए बाबा ने जो कहा है, उसकी वास्तविकता पर पर विचार करें और इसका अनुभव करें तो ये वर्तमान में परमशान्ति, परम-शक्ति को देने वाली स्थिति है और परमानन्द को अनुभव कराने वाली है और यही अभ्यास भविष्य में आने वाली परिस्थितियों का सामना करने और उनको सहन कर परमानन्द में रहने का साधन बनेंगा। इस अभ्यास के आधार से ही हम भविष्य नई दुनिया में स्थूल प्राप्तियाँ प्राप्त करेंगे। निराकार स्थिति का सफल अभ्यास करने वाला ही फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो सकता है। इस सम्बन्ध में बाबा ने तीन शब्द भी याद दिलाये हैं - अचानक, एवर-रेडी और बहुतकाल।

फरिश्ता सदा देने वाला होता है, उसको किससे लेने की कोई इच्छा नहीं होती है क्योंकि वह सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति में है। उसको परमात्मा से भी लेने या माँगने का संकल्प नहीं होता है। वह तो बाप समान स्थिति में होता है, सदा बाप के समान साथी होता है

परन्तु साकार देह में अर्थात् अभी इस पुरुषार्थी जीवन में जब आत्मा उस स्थिति में स्थित होती है तो भी परमात्मा से प्राप्ति होती है या हो रही है, उसका सूक्ष्म अनुभव होता है। निराकारी और फरिश्ता स्वरूप स्थिति के सफल अभ्यास वाले की मन-बुद्धि सदा श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत्त होती है, जिससे उसका भविष्य निश्चित ही अच्छा होगा, जो निश्चय वर्तमान में भी उसको निश्चिन्त रखता है।

Q. निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के सफल अभ्यास के पहले किस अभ्यास को करें, तो दूसरे में सुविधा हो ?

पहले निराकारी स्थिति में स्थित होने के अभ्यास में सफल होंगे, तब ही फरिश्ता स्थिति का अभ्यास कर सकेंगे। इसलिए हठयोग में पहले निर्संकल्प समाधि की सफलता बताई है, उसके बाद ही निर्विकल्प समाधि सिद्ध होती है। वैसे भी पहले निराकारी दुनिया में जाना है, फिर देवता बनना है, जहाँ विकल्प का भी ज्ञान नहीं होता है और स्वभाविक शुद्ध संकल्प होता है।

ब्रह्मा बाबा ने भी आदि में अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का, आत्मा को देह से अलग देखने और अनुभव करने का, उस स्थिति में स्थित रहने का सफलतापूर्वक अभ्यास किया, जिस अभ्यास से ही वे साकार में रहते भी फरिश्ता स्वरूप में रहे, जिसको उनके सम्पर्क में आने वाले सभी ने अनुभव किया। वे ही पहले मानव हैं, जो साकार से सम्पूर्ण और सम्पन्न अव्यक्त फरिश्ता बनें।

Q. निराकार और फरिश्ता स्वरूप का हमारा अभ्यास सफल है या सफल होगा, उसका दर्पण अर्थात् कसौटी (Test Stone or criteria) क्या है ?

Q. हम दूसरों की स्थिति को और दूसरे हमारी स्थिति को और हम स्वयं भी अपनी स्थिति को सहज परख सकें कि हमारा निराकारी स्थिति का और फरिश्ता स्थिति का अभ्यास सफल है या नहीं है, उसका दर्पण क्या है ?

जो आत्मा इन दोनों स्थितियों के सफल अभ्यास में होगी या जिसका ये अभ्यास सफलतापूर्वक चलता होगा, उसको तन-मन-धन-जन, सम्बन्ध-सम्पर्क सब में सन्तुष्टता होगी। वह स्वयं भी स्वयं से सदा सन्तुष्ट होगी और दूसरों से भी सदा सन्तुष्ट होगी। दूसरे भी उससे सन्तुष्ट होंगे और उसकी सन्तुष्ट स्थिति से प्रेरणा लेंगे। सन्तुष्टता का आधार सम्पूर्णता अर्थात् सर्व प्राप्तियों में सम्पन्नता है। निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति सर्व प्राप्तियों से भरपूर सम्पूर्ण और

सम्पन्न स्थिति है। इस स्थिति के अभ्यास वाली आत्मा अपने जीवन में सदा सन्तुष्टता का अनुभव करेगी, जिससे वह सदा हर्षित रहेगी। वह स्वयं भी खुश रहेगी और दूसरों को भी खुशी बांटती रहेगी।

निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति के सफल अभ्यास वाले की मन-बुद्धि सदा एकाग्र होगी, जिससे उसको आने वाली घटनाओं या विघ्नों का स्वत: पहले से ही आभास होगा, जिससे उसको किसी घटना को देखकर न आश्चर्य होगा और न वह किसी विघ्न से घबरायेगा। विघ्न भी उसको खेल अनुभव होंगे। पहले तो उसके सामने कोई विघ्न आयेंगे ही नहीं और आते भी हैं तो वह उन विघ्नों से बचने का सहज प्रबन्ध कर लेगा अर्थात् उसको विघ्न, विघ्न अनुभव नहीं होंगे। विघ्नों से भी शिक्षा लेकर आगे बढ़ता रहेगा।

निराकार और फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

देह में रहते निराकार स्थिति है लाइट-माइट हाउस की स्थिति और फरिश्ता स्वरूप में आत्मा लाइट-माइट हाउस के साथ-साथ सर्च-लाइट का भी काम करती है। फरिश्ता स्वरूप की स्थिति चल स्थिति है क्योंकि फरिश्ता सदा विश्व-कल्याण के कार्य अर्थ लाइट-माइट फैलाते हुए उड़ता रहता है, कब स्थिर होकर नहीं रहता है, उसे सर्व आत्माओं को देने का संकल्प रहता है। साकार में रहते आत्मा के निराकार स्थिति में स्थित होने से जो लाइट-माइट फैलाती है, वह सूर्य के समान होती है, उससे हर आत्मा अपने कर्तव्य और स्थिति के अनुसार लाइट-माइट प्राप्त करती है, जिसकी उसको भी अनुभूति होती है। फरिश्ता स्वरूप की स्थिति में सर्च-लाइट का भी अनुभव होता है। विचारणीय यह है कि जब आत्मा निराकारी रूप में परमधाम में रहती है, तब उससे कोई लाइट-माइट नहीं फैलती है। लाइट-माइट जब देह में रहते निराकारी रूप में होती है, तब ही फैलती है क्योंकि लाइट-माइट तब ही फैलती है, जब आत्मा में संकल्प जागृत होता है परन्तु फरिश्ता रूप में जब आत्मा सूक्ष्मवतन में है, तब भी लाइट-माइट फैलती है क्योंकि सूक्ष्मवतन तक आत्मा को सूक्ष्म देह रहती ही है, जिससे उसमें संकल्प होता ही है।

निराकारी स्थिति बीजरूप निर्संकल्प परम-शान्त और परम-शक्ति सम्पन्न स्थिति है परन्तु फरिश्ता स्थिति निर्विकल्प शान्ति और शक्ति से सम्पन्न परमानन्दमय स्थिति है।

निराकार रूप की और फरिश्ता रूप की मूल स्थिति और साकार देह में रहते उस स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

परमधाम में आत्मा का निराकार स्वरूप उसके गुण-धर्म	साकार देह में रहते निराकारी स्थिति के गुण-धर्म और अनुभव
प्रकाशमय बिन्दुरूप, शान्त और शक्ति परन्तु निर्संकल्प, अनुभव रहित, इसलिए प्लस-माइनस से रहित एकरस अर्थात् प्रभावरहित स्थिति।	निर्संकल्प, शान्ति और शक्ति सम्पन्न स्वरूप परन्तु शान्ति और शक्ति की सूक्ष्म निष्क्रिय स्थिति, अनुभूति क्योंकि आत्मा देह में है. इसलिए सूक्ष्म में संकल्प रहता ही है। देह से न्यारी लाइट-माइट स्वरूप की अनुभूति, लाइट-माइट का वातावरण पर प्रभाव और उसका वातावरण में प्रवाह।
परमात्मा के साथ रहते भी परमात्मा के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति।	साथ की भी अनुभूति नहीं, परमात्मा के स्थिति. शान्ति और शक्ति के साथ परमात्मा के साथ की सूक्ष्म में अनुभूति।
निराकारी दुनिया में निराकारी स्थिति में कोई प्लस-माइनस नहीं होता है।	अभी साकार देह में रहते निराकारी स्थिति में आत्मिक शक्ति में प्लस-माइनस होता है क्योंकि उसका आत्माओं और वातावरण पर प्रभाव पड़ता है।
सूक्ष्मवतन का फरिश्ता स्वरूप की उसके गुण-धर्म	**साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप स्थिति, उसके गुण-धर्म और अनुभव**
प्रकाशमय काया, धरती से ऊपर उड़ती कला में, लाइट-माइट हाउस स्वरूप, र्सदा विश्व-कल्याण का संकल्प और कर्तव्य, निर्बन्धन, सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति। आत्मिक शक्ति में प्लस होता है, माइनस नहीं। क्योंकि फरिश्ता का संकल्प सदा विश्व-कल्याण का ही रहता,वह राग-द्वेष,भय-चिन्ता,दुख-अशान्ति, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त निराधार, ब्रह्मा बाप के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति, आन्तरिक खुशी की अनुभूति।	परमानन्दमय स्थिति, देह और देह की दुनिया के आकर्षण से मुक्त उपराम, विश्व-कल्याण का संकल्प, निर्बन्धन, सम्पन्नता और सम्पूर्णता का अनुभव, इच्छामात्रम् अविद्या, मुदित और आनन्दमय स्थिति, रहमभाव, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, इच्छा-आकांक्षा से मुक्त ब्रह्मा बाप के समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति के अनुभव में, आन्तरिक खुशी की अनुभूति। साकार देह में ये स्थिति

फरिश्ता स्वरूप में परमात्मा से भी लेने की इच्छा नहीं।

सदा सम्पन्न अर्थात् परमात्मा से भी कुछ लेने की इच्छा नहीं, सदा ही देने का संकल्प होता है। फरिश्ता आया, कर्म किया और अन्तर्ध्यान, आवाज़ से परे इशारों से कर्म करने वाले, फरिश्ता अथक होता है, उस पर संकल्पों आदि का कोई बोझ नहीं होता, इसलिए उनको कब कोई थकावट नहीं होती।

निर्विकल्प स्थिति

सदा नहीं रहती, इसलिए जब यह स्थिति नहीं है तो माइनस भी होता है।

लेने और देने दोनो का संकल्प होता है। साकार में रहते फरिश्ते स्वरूप वाले बहुत कम और धीमी आवाज़ से बात करने वाले होते, उन पर भी व्यर्थ संकल्पों आदि का बोझ नहीं होता है, इसलिए उनको थकावट बहुत कम होती।

निर्विकल्प स्थिति

ब्राह्मण बनने के बाद भले हम निराकारी स्वरूप के अभ्यास में हैं या फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास में हैं परन्तु वह भी ब्राह्मणपन की ही स्थिति है। सुख-शान्ति, आनन्द की अनुभूति देह में रहते ब्राह्मण जीवन में ही होती है। ब्राह्मण जीवन में ही परमात्म-प्राप्तियों और ज्ञान-गुण-शक्तियों की अनुभूति करना और उस ज्ञान-गुण-शक्तियों को अन्य आत्माओं प्रति देने की अर्थात् सेवा में लगानेकी स्थिति है। ब्राह्मणपन में ही परमात्म छत्रछाया की अनुभूति, आत्मा और परमात्मा को याद करने की स्थिति, ब्राह्मणपन में परमात्मा और अव्यक्त बापदादा से शक्ति आदि लेने की सूक्ष्म इच्छा-आकांक्षा रहती ही है।

नोट:- सूक्ष्मवतन भी आकाश तत्व और ब्रह्मतत्व के संगम से बना एक स्पेस है, जहाँ आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ स्वत: उड़ती रहती है या चलती रहती है अर्थात् फरिश्ता कब स्थिर नहीं रहता है और उसको चलने की भी मेहनत नहीं करनी होती है। सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में संकल्प और कर्म होता है, इसलिए उसमें प्लस होता है।

जब तक ये ब्राह्मण जीवन है, तब तक निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति में स्थित होते भी सूक्ष्म में बाबा की याद रहती है, उनकी अनुभूति रहती है परन्तु निराकारी दुनिया में और सूक्ष्मवतन में साथ रहते भी अनुभूति की बात नहीं रहती है अर्थात स्वभाविक साथ रहते हैं।

सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में वे आत्मायें ही जाती हैं, जिनका इस साकार सृष्टि में इस कल्प का पार्ट पूरा हो गया है, इसलिए वे सूक्ष्मवतन के ऊपरी भाग अर्थात् ब्रह्मतत्व के साथ के भाग में विचरण करते हैं।

ज्वालामुखी का स्वरूप और उसके लिए अभीष्ट पुरुषार्थ

Q. ज्वालामुखी योग के अभ्यास तथा निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल पर बाबा क्यों जोर देते हैं, उसका हमारे इस जीवन में क्या विशेष महत्व है ?

ज्वालामुखी योग के अभ्यास तथा निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की हमको क्या आवश्यकता है और क्या आवश्यकता होगी, वह भी बाबा ने बताया है, जो हमारी बुद्धि में स्पष्ट होना अति आवश्यक है। ज्वालामुखी योग अर्थात् देह और देह की दुनिया भूलकर एक बाप की अव्यभिचारी याद और ज्वालामुखी स्थिति अर्थात् अपने मूल स्वरूप अर्थात् निराकारी आत्मिक स्वरूप में स्थिति, जो परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न निर्संकल्प, निर्भय, निश्चिन्त स्थिति है। ज्वालामुखी योग से हमारी जो ज्वालामुखी स्थिति बनेंगी, उससे हम अचानक आने वाली परीक्षाओं में सहज पास हो सकेंगे।

ज्वालामुखी स्थिति का सफल अभ्यास होगा तो अन्त समय सहज देह का त्याग कर सकेंगे अर्थात् मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त रहेंगे।

ज्वालामुखी स्थिति में हम अभी भी मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव में रहेंगे और भविष्य में भी मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त करेंगे। ज्वालामुखी स्थिति से ही हम अन्य आत्माओं को भी मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करा सकेंगे अर्थात् उनको दुख-अशान्ति से मुक्त परम सुख-शान्ति का अनुभव करा सकेंगे। ज्वालामुखी योग के सफल अभ्यास से आत्मा को अभी परमानन्द की अनुभूति होती है और भविष्य में कर्मभोग को सहन करने की शक्ति प्राप्त होती है।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल का जितना हम सफलतापूर्वक पुरुषार्थ करेंगे, उतना ही हमारा ज्वालामुखी योग सफल होगा और हमारी ज्वालामुखी स्थिति बनेंगी अर्थात् हम अपने सम्पन्न और सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित हो सकेंगे। अन्त में हमको सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर ही घर वापस जाना है और उससे पहले सूक्ष्मवतन से भी अवश्य गुजरना होगा, साथ ही अन्त समय इस विश्व-नाटक का अन्तिम दृश्य देखने और उस समय के कर्तव्य को सम्पन्न करने के लिए भी ये स्थिति अति आवश्यक है। इसलिए ही बाबा अभी से हमको इस अभ्यास के लिए भिन्न-भिन्न रूप से प्रेरित करते रहते हैं।

अन्त समय जब विनाश होगा, उस समय विश्व में बहुत हाहाकार होगा, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति का वातावरण होगा, उस दुख-अशान्ति के समय हम स्थिर रह सकें, उसके लिए अभी, जब शान्ति का समय है, ये ज्वालामुखी योग का अभ्यास करना अति आवश्यक है।

ज्वालामुखी योग और ज्वालामुखी स्थिति

आत्मा का निराकारी स्वरूप ज्वाला स्वरूप ही है क्योंकि आत्मा लाइट-माइट स्वरूप है। उस स्थिति को बनाने या उसमें स्थित होने के लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। ज्वालामुखी स्थिति बनाने के लिए ज्वालामुखी योग अति आवश्यक है।

"दिन-प्रतिदिन समय नाज़ुक आना ही है। तो ऐसे समय का सामना करने के लिए अभी से ज्वालामुखी योग चाहिए। ... हर बच्चा फरिश्ता अनुभव में आये। इसके लिए ज्वालामुखी योग चाहिए, कोई व्यर्थ नहीं हो। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। ... सदा फरिश्ता स्वरूप में रहना है, इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी।"

अ.बापदादा 31.12.11

बाबा के उपयुक्त महावाक्यों पर विचार करें तो पुराने देहाभिमान के संस्कारों को भस्म कर इस संगमयुगी ईश्वरीय जीवन की परम-प्राप्तियों को अनुभव करने के लिए, भविष्य में आने वाली परिस्थितियों का सामना करने के लिए और विश्व की दुखी-अशान्त आत्माओं को सहारा देने के लिए वर्तमान में ज्वालामुखी योग की परमावश्यकता है।

योग केवल पुरुषार्थ नहीं है लेकिन योग स्वयं में एक विशेष प्राप्ति है, जो आत्माओं को पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही प्राप्त होती है, जब परमपिता परमात्मा इस धरा पर आते हैं और यथार्थ योग का ज्ञान देते हैं और योग सिखलाते हैं। योग से आत्मा को अतीन्द्रिय सुख या परमानन्द की अनुभूति होती है, जो सारे कल्प में नहीं हो सकती। ज्वालामुखी योग की स्थिति में आत्मा परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति करती है, जिससे आत्मा में सारे कल्प पार्ट बजाने की शक्ति संचित होती है और आधे कल्प के पापों का बोझा भस्म होता है, जिससे आत्मा हल्की होकर परम-शान्ति की अनुभूति करती है।

जैसे ज्वाला में पड़ने से किसी चीज का रूप परिवर्तन हो जाता है। जैसे ज्वाला में सोने के पड़ने से उसकी खाद जल जाती है और वह सच्चा सोना बन जाता है। ज्वाला का प्रभाव चारो ओर फैलता है अर्थात् वातावरण स्वत: गर्म हो जाता है।

"जब से स्थापना के कार्य-अर्थ यज्ञ रचा, तब से ही स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्ज्वलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-साथ हैं ना! तो जो प्रज्ज्वलित करने वाले हैं, उनको ही सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को। शंकर समान ज्वाला-रूप बनकर प्रज्ज्वलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है।... संकल्प से इस विनाश-ज्वाला को तेज करना पड़े। क्या ऐसा ज्वालारूप

बन, विनाश ज्वाला को तेज करने का संकल्प इमर्ज होता है ?" अ.बापदादा 3.02.74

"विनाशकारी आत्माओं को भी कल्याणकारी आत्माओं का सहयोग चाहिए। उनको आपके संकल्प का इशारा चाहिए। जब तक आप ज्वालारूप न बनें, तब तक इशारा नहीं कर सकते। ... विनाश होगा, कि नहीं होगा, क्या होगा और कैसे होगा - यह समझने के बजाये अब ऐसा समझो कि वह हमारे द्वारा ही होना है। यह जानकर हर बात में निश्चयबुद्धि होकर अब स्वयं को शक्ति स्वरूप बनाओ, स्वयं को लाइट-हाउस और पॉवर-हाउस बनओ।"

अ.बापदादा 3.02.74

Q. क्या ज्वालामुखी योग और ज्वालामुखी स्थिति में कोई अन्तर है ? यदि है तो वह अन्तर क्या है ?

ज्वालामुखी योग अर्थात् एक परमप्रिय परमात्मा की अव्यभिचारी याद, परन्तु ज्वालामुखी याद के बाद जो स्थिति बनती है, वह है ज्वालामुखी स्थिति, उसमें कोई संकल्प नहीं चलता है। आत्मा परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति में खो जाती है। याद में परमात्म-प्यार की अनुभूति होती है परन्तु ज्वालामुखी स्थिति जब बन जाती है तो उसमें आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति होती है। याद पुरुषार्थ है, स्थिति मंजिल है। ज्वालामुखी स्थिति में कुछ याद नहीं रहता है। जिसके लिए अव्यक्त बापदादा एक मिनट या तीन मिनट के लिए मुरली के बीच में अनुभव कराते हैं और बाबा कहते हैं - कोई संकल्प न चले। अन्त में यह स्थिति ही काम आयेगी। स्थिति से विशेष वायब्रेशन उत्पन्न होता है। परमात्मा को याद करते-करते जब आत्मा ज्वालामुखी स्थिति अर्थात् निर्संकल्प स्थिति में जाती है तो परमात्मा की याद सूक्ष्म में रहती ही है क्योंकि आत्मा उस याद में निर्संकल्प हुई है। परमपिता परमात्मा की अव्यभिचारी याद अर्थात् ज्वालामुखी योग में आत्मा को खुशी अनुभूति होती है, जबकि ज्वालामुखी स्थिति में आत्मा को परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है। दोनो स्थितियाँ एक सिक्के के दो पहलू हैं अर्थात् एक-दूसरे के पूरक हैं।

आत्मा परमात्मा की याद में रहते हुए जब अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है, तो आत्मा को सब कुछ भूल जाता है, आत्मा निर्संकल्प होती है परन्तु निर्संकल्प होते समय परमात्मा पिता की जो याद होती है, वह आत्मा को सदा ही चढ़ती कला में रखती है अर्थात् परमात्मा का सूक्ष्म में साथ होता ही है। जबकि भक्ति मार्ग में हठयोग से निर्संकल्प स्थिति में जाते हैं तो निर्संकल्प होते समय न इस विश्व-नाटक का ज्ञान होता है और न ही परमात्मा की यथार्थ याद होती है, इसलिए निर्संकल्प समाधि में होते भी आत्मा की उतरती कला ही होती है। "बापदादा एक सेकेण्ड में अशरीरी भव की ड्रिल देखना चाहते हैं। अगर अन्त में पास होना

है तो यह ड्रिल बहुत आवश्यक है। इसलिए अभी इतने बड़े संगठन में बैठे एक सेकण्ड में देहभान से परे स्थिति में स्थित हो जाओ। कोई आकर्षण आकर्षित न करे।"

अ.बापदादा 30.11.05

ज्ञान का चिन्तन भी यथार्थ योग नहीं हैं। ... सेवा में ही अपनी उन्नति समझ लेना अपने को ठगना है।

दादी जानकी 6.5.81

"बाप समान वाले की निशानी है - एक सेकण्ड में जहाँ और जैसे चाहें, जो चाहें, वह कर सकते हैं व करते हैं। ... समान वाले ज्ञानदान, गुणदान... के महत्व को जानने वाले ज्ञान-स्वरूप होते हैं। जितनी वाणी सुनने और सुनाने की जिज्ञासा रहती है, तड़प रहती है, चान्स बनाते भी हो, क्या ऐसे ही वाणी से परे स्थिति में स्थित होने का चान्स बनाने और लेने के जिज्ञासु हो?... ऐसी आत्मा को, इस अनुभूति की स्थिति में मगन रहने के कारण कोई भी विभूति व कोई भी हर की प्राप्ति की आकर्षण उन्हें संकल्प तक भी छू नहीं सकती।"

अ.बापदादा 23.5.74

ज्वालामुखी योग और ज्वालामुखी स्थिति के सफल अभ्यास के लिए स्मृति और स्थिति का भेद समझना भी आवश्यक है। स्मृति पुरुषार्थ है परन्तु स्थिति पुरुषार्थ की सफलता है। ज्वालामुखी स्थिति में स्थित आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति होगी, जिसको बाबा लाइट-हाउस, माइट-हाउस की स्थिति कहते हैं, परन्तु सर्च लाइट स्थिति इससे अलग है। सर्च-लाइट में कोई न कोई संकल्प करना ही होता है।

यथार्थ ज्वालामुखी योग में आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति होती है और उसके वायब्रेशन जो वातावरण का निर्माण करते हैं, उससे अन्य आत्माओं को भी शान्ति-शक्ति की अनुभूति अवश्य होती है।

Q. अब प्रश्न ये है कि ज्वालामुखी योग है क्या और उसका आधार क्या है?

वास्तविकता पर विचार करें तो देह और देह की दुनिया को भूल एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही ज्वालामुखी योग है और जब आत्मा एक निराकार ज्योतिबिन्दु रूप परमात्मा को याद करते-करते अपने निराकारी स्वरूप में स्थित होती है तो वह ज्वालामुखी स्थिति है, जिस स्थिति में आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द की अनुभूति होती है और उसका वायब्रेशन सारे वातावरण में फैलता है, जो अन्य आत्माओं को भी लाभान्वित करता है।

ज्वालामुखी योग अर्थात् देह और देह की दुनिया भूली हुई हो और एक बाप की अव्यभिचारी याद हो अर्थात् एक बाप की ही आकर्षण हो, जिससे आत्मा के पुराने तमोगुणी

संस्कार-स्वभाव भस्म होंगे और आत्मा अपनी ज्वालामुखी स्थिति में स्थित होगी, जिस स्थिति में आत्मा की सोई हुई शक्तियाँ जागृत होती हैं, जिससे आत्मा अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान अनुभव करती है, जिससे आत्मा जिस समय जिस स्थिति में स्थित होना चाहे हो जाती है, जिससे उसको हर संकल्प और कार्य में सफलता की सिद्धि प्राप्त होती है।

"जैसे बापदादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप समान साकार होते हुए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो ? यह अनुभव निरन्तर होने से इस साकारी तन और इस पुरानी दुनिया से स्वत: ही उपराम हो जायेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसेकि ऊपर-ऊपर से साक्षी हो इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देख रहे हैं। ऐसी स्टेज पर स्थित हुई आत्मा देखने में क्या दिखाई देगी ? लाइट-हाउस और पॉवर-हाउस।" अ.बापदादा 3.02.74

"ऐसी लाइट-हाउस, माइट-हाउस आत्मायें बाप समान विश्व कल्याणकारी कही जाती हैं। जो भी सामने आये हर एक लाइट और माइट को प्राप्त करता जाये। ... ऐसे महादानी, वरदानी, सर्वगुण दानी, सर्वशक्तियों के दानी, संग से रुहानी रंग लगाने वाले, नज़र से निहाल करने वाले, अन्धों को तीसरा नेत्र देने वाले, ... सुख-शान्ति-आनन्द मूर्त बनाने वाली आत्मा बने हो ? क्या इस निशाने के नशे में रहते हो ?" अ.बापदादा 3.02.74

Q. देह और देह की दुनिया भूल जाये और एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद की स्थिति में स्थित हो जायें, उसका आधार क्या है ?

ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको जो दिया है अर्थात् जो आत्मा-परमात्मा और ड्रामा का ज्ञान दिया है और जो अनुभव कराया है, वे सभी संगमयुगी ईश्वरीय प्राप्तियाँ हमारी बुद्धि में इमर्ज रहें और इस विश्व के पदार्थों और सम्बन्धों से आत्मा को जो घाटा हुआ है, वह अनुभव भी बुद्धि इमर्ज रहे तो सहज उससे बुद्धि हट जायेगी और परमात्मा की अव्यभिचारी याद सहज रहेगी अर्थात् हमारा योग ज्वालामुखी अवश्य होगा।

संगमयुग पर परमात्मा से प्राप्त ज्ञान और अनुभूतियों में खो जाने से हमारा योग ज्वालामुखी होता है और उस ज्वालामुखी योग से हमारे विकर्मों का खाता अर्थात् देहाभिमान नष्ट होता है। ज्वालामुखी योग की स्थिति में हमारे से जो वृत्ति और वायब्रेशन पैदा होता है

वह जड़ जंगम चेतन तीनों प्रकृतियों को पावन करता है जो सबसे श्रेष्ठ कर्म है। इसी को हठयोग में निर्संकल्प समाधि कहा गया है और यही यथार्थ मुक्ति की अनुभूति है परन्तु हठयोग में आत्मा को यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इसलिए वह स्थिति केवल कहने मात्र ही होती

है अर्थात् अल्पकाल के लिए होती है। जब आत्मा मुक्तिधाम में है तो वहाँ आत्मा को कोई अनुभूति नहीं होती और न ही वहाँ आत्मा से कोई वृत्ति-वायब्रेशन प्रवाहित होता है। अनुभूति आत्मा को शरीर के साथ ही होती है और वृत्ति-वायब्रेशन भी तब ही प्रवाहित होता है, जब आत्मा को संकल्प उठता है।

ज्वालामुखी योग से हमारी स्थिति ज्वालामुखी बनती है, जिस ज्वाला स्वरूप स्थिति में स्थित आत्मा के सम्बन्ध-सम्पर्क में आने से अन्य आत्मायें भी अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द की अनुभूति करती हैं। ज्वाला स्वरूप के अभ्यासी आत्मा की मन्सा का प्रभाव दूर बैठी आत्माओं को भी अनुभव होता है अर्थात् वह प्रभाव उन आत्माओं को भी उसकी तरफ आकर्षित करता है।

Q. ज्वालामुखी योग से फरिश्ता स्वरूप की स्थिति का क्या सम्बन्ध है?
फरिश्ता स्वरूप और साकार में ड्रामा का ज्ञान धारण कर स्वराज्य अधिकारी बन स्वमान में स्थित हो साक्षी स्थिति में कर्म करते तो उससे हमारे सुकर्म होते है जिससे सतुयगी-त्रेतायुगी जीवनमुक्त प्रॉलब्ध बनती है। सतयुग-त्रेता की जीवनमुक्त स्थिति में होते भी आत्मा की उतरती कला होती है, इसलिए उस स्थिति का कोई विशेष महत्व नहीं है, महत्व इस समय की जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव का है, इसलिए अव्यक्त बापदादा ने 2010-11 में ब्रह्मा बाप समान जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहने के लिए कहा है। इस स्थिति को हठयोग में निर्विकल्प समाधि कहा गया है, परन्तु निसंकल्प समाधि इससे अलग है। निर्संकल्प समाधि ही निर्विकल्प समाधि का आधार है। ऐसे ही कहेंगे कि निर्संकल्प स्थिति और निर्विकल्प स्थिति एक-दूसरे के पूरक हैं।

Q. क्या हेडफोन लगाकर सदा गीत-क्लास आदि सुनते रहना ज्वालामुखी योग है? यदि है तो कैसे और यदि नहीं है तो उसका क्या लाभ है?
गीत-क्लास आदि हेड फोन लगाकर सुनना न धन कमाना है और न यथार्थ योग है। यह केवल व्यर्थ से बचने का साधन मात्र है। विचारणीय है कि जब तक देखने-सुनने आदि से अन्दर जा रहा है, तब तक न अपना चिन्तन चलेगा और न मन्सा सेवा होगी, तो यह योग कैसे है और इससे क्या सेवा होगी, परन्तु न से ये भी अच्छा है। गीत-क्लास आदि सुनकर उस पर चिन्तन करना यथार्थ पुरुषार्थ है, जिससे ज्ञान की वृद्धि होती है और उससे जो वृत्ति-वायब्रेशन पैदा होता है, उससे मन्सा सेवा होती है। ये अवश्य कहेंगे कि इनको सुनने से जो उस समय खुशी होती

है, उस वायब्रेशन का वातावरण पर कुछ प्रभाव जरूर होता है, परन्तु वह अनुभूति और वायब्रेशन अस्थाई अर्थात् नाममात्र है। साकार बाबा ने स्पष्ट कहा है - मुरली सुनना योग नहीं है, वह तो तुम धन कमाते हो। योग में तो सुनना, देखना सब भूल जाता है।

"कहेंगे - हम तो शिवबाबा को ही याद करते थे परन्तु सचमुच याद में थे ? बिल्कुल साइलेन्स में रहने से फिर यह दुनिया भी भूल जाती है। अपने को ठगना नहीं है कि हम तो शिवबाबा की याद में हैं। याद में देह के सब धर्म भूल जाने चाहिए। हमको शिवबाबा कशिश कर सारी दुनिया भुलाते हैं। ... अपने को मियां मिट्ठू समझ ठगी नहीं करना है।"

सा.बाबा 7.5.04 रिवा.

"फरिश्ता बनना वा निराकारी कर्मातीत अवस्था बनाने का विशेष साधन है - निरहंकारी बनना। निरहंकारी ही निराकारी बन सकता है। इसलिए बाप ने ब्रह्मा द्वारा लास्ट मन्त्र में निराकारी के साथ निरहंकारी कहा है। (निराकारी स्थिति में देह और देह की दुनिया भूली हुई होती है)"

अ.बापदादा 15.12.02

ज्वालामुखी योग को अनुभव कराने के लिए ही अव्यक्त बापदादा मुरली के बीच में या मुरली के अन्त में कभी एक मिनट, कभी तीन मिनट के लिए बिन्दुरूप का अभ्यास कराते हैं और कहते ऐसी स्थिति में बैठ जाओ, जो ज़रा भी कोई संकल्प न चले। ब्रह्मा बाबा के विषय में भी जो अनुभव सुनते हैं कि बाबा बात करते-करते गुम हो जाते थे। अव्यक्त बापदादा हमको भी कर्म करते बीच-बीच में यह अभ्यास करने को कहते हैं।

Q. विचार करके निर्णय करो क्या निम्नलिखित स्थितियाँ ज्वालामुखी योग की है ?

ज्ञान का मनन-चिन्तन ज्वालामुखी योग है ?

परिकल्पना करना कि परमधाम से शिवबाबा की शक्ति-शान्ति की किरणें मुझ आत्मा के ऊपर आ रही हैं और हम शान्ति-शक्ति का अनुभव कर रहे हैं। "(यह परिकल्पना सत्य है ?)

फरिश्ता स्वरूप अर्थात् अपने सूक्ष्म देह में स्थित होना "

कास्केट के बिन्दु पर या ब्रह्मा बाबा के फोटो पर ध्यान "

केन्द्रित करना हेडफोन आदि से क्लास-गीत आदि सुनना "

ये सब भी ज्वालामुखी योग रूपी मंजिल पर पहुँचने के लिए आवश्यक पुरुषार्थ जरूर है परन्तु ज्वालामुखी योग नहीं है क्योंकि बिना स्टेप्स चढ़े कोई मंजिल पर नहीं पहुँच सकता परन्तु स्टेप्स को ही मंजिल समझ लेना भूल है। इस ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए भावना और विवेक दोनों का सन्तुलन (Balance) परमावश्यक है।

यथार्थ ज्वालामुखी योग की कसौटी

भिन्न-भिन्न समय पर किया गया ज्वालामुखी योग का योग (जोड़) अगर एक घण्टे भी होता है तो उसके प्रभाव से आत्मा राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका-जनित व्यर्थ संकल्पों से मुक्त रहेगी और उसकी स्थिति मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, प्राप्ति-अप्राप्ति, यश-अपयश, अपने-पराये में समान रहेगी। उसको समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आयेगा और उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वभाविक होगी। इसलिए वह भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से सदा मुक्त रहेगी। जब आत्मा इनसे मुक्त होती है, तब ही उसको परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख की अनुभूति अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति होती है, जो संगमयुग की परम-प्राप्ति है।

भले परमधाम में आत्मा निर्संकल्प होती है, परन्तु वहाँ आत्मा से शान्ति-शक्ति का कोई वायब्रेशन प्रवाहित नहीं होता है और न ही आत्मा को वहाँ कोई अनुभूति होती है। परन्तु जब आत्मा देह में रहते देह से न्यारी निर्संकल्प स्थिति में स्थित होती है तो आत्मा को परम-शान्ति, परम-शक्ति की अनुभूति होती है और उससे शान्ति-शक्ति के वायब्रेशन्स का जो प्रवाह होता है, वह वातावरण में फैलता है, जिसको अन्य आत्मायें भी अनुभव करती हैं। यह बात भी समझना आवश्यक है कि परमधाम में आकर्षण और मूवमेन्ट तो है परन्तु संकल्प नहीं है, जिसके आधार पर ही आत्माओं को जब उनका पार्ट और साकार दुनिया में निर्मित पिण्ड और आत्माओं की आकर्षण आत्मा को खींचती है, तो वह आकर पिण्ड में प्रवेश करती है। ऐसे ही जब हम बापदादा को याद करते हैं, उनका आह्वान करते हैं तो वे परमधाम से ब्रह्मा बाबा के फरिश्ता स्वरूप में प्रवेश होकर आते हैं।

ज्वालामुखी योग के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ

संगमयुग पर पुरुषार्थ भी प्रॉलब्ध है अर्थात् पुरुषार्थ में ही प्राप्ति का अनुभव होता है। ज्वालामुखी योग के पुरुषार्थ और स्थिति से आत्मा को परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है, जो सारे कल्प की प्राप्तियों का अधार है। ज्वालामुखी योग के सफल अभ्यास के लिए - निश्चय - आत्मा, परमात्मा और इस विश्व-नाटक के गुण-धर्मों में, इसके कर्म-सिद्धान्त का ज्ञान और अनुभव एवं बाबा के महावाक्यों पर निश्चयबुद्धि हो उस अनुसार

अभ्यास करना। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उस सबका मनन-चिन्तन कर अच्छी तरह उनका अनुभव करना। ज्ञान सागर परमात्मा के द्वारा दिया गया ज्ञान हम आत्माओं के लिए परमात्मा का सबसे बड़ा वरदान है और सर्व सफलताओं का आधार है।

ज्वालामुखी योग और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास में व्यर्थ बहुत बड़ा विघ्न, जो विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान अर्थात् उसके गुण-धर्मों के निश्चय और उसकी धारणा से ही खत्म होता है। विश्व-नाटक के ज्ञान पर अगर हम विचार करें तो भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता का कोई स्थान नहीं है। जिसका वर्तमान सफल हो रहा है, उसका भविष्य निश्चित ही अच्छा होगा।

अमृतवेले के योग को विशेष पॉवरफुल करने का ध्यान रखना।

खान-पान बहुत सूक्ष्म और सन्तुलित रखना क्योंकि खान-पान का हमारे योग से घनिष्ट सम्बन्ध है।

हम सूक्ष्म कर्मेन्द्रियों से भी जो ग्रहण करते हैं, वह भी हमारे योगाभ्यास पर प्रभाव डालता है, इसलिए उसका परहेज भी अति आवश्यक है।

आत्मा स्वत: में प्रकाश स्वरूप परम-शान्ति, परम-शक्ति सम्पन्न बाप समान ही है। आवश्यकता है यथार्थ ज्ञान को धारण कर देह और देह की दुनिया की आकर्षण से मुक्त हो अपने मूल स्वरूप में स्थित होने की।

परमात्म-प्यार की अग्नि इतनी तेज हो जो देह और देह की दुनिया भूल जाये, उसके लिए आत्मा को परमात्मा द्वारा प्राप्त संगमयुग की प्राप्तियों का ज्ञान, उनकी अनुभूति और उसके महत्व का अनुभव अति आवश्यक है।

आत्मा को परमात्मा की और घर की इतनी आकर्षण हो, जो देह और देह की दुनिया भूल जाये। आत्मिक स्वरूप में स्थित हो शान्ति और शक्ति की अनुभूति करने की इतनी लगन हो, जो देह और देह की दुनिया भूल जाये। इसके लिए आत्मिक स्वरूप में स्थित होने की अनुभूति और इन्द्रिय सुखों से होने वाले घाटे का ज्ञान होना अति आवश्यक है। ईश्वरीय कर्तव्य को सम्पन्न कर सम्पूर्ण और सम्पन्न बनने की इतनी लगन हो, जो देह और देह की दुनिया भूल जाये। इसके लिए कर्म करते बीच-बीच में इसका अभ्यास करना अति आवश्यक है।

विश्व-नाटक की यथार्थता को समझकर बेहद के वैरागी बनकर 5 विकारों, 5 तत्वों और हद की विभूतियों की आकर्षण से संकल्प में भी मुक्त रहना।

"कोई विभूति या कोई हद की प्राप्ति अगर संकल्प में भी छू लेती है तो छोटे-मोटे पाप बनते

जाते हैं और ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊंच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं क्योंकि पाप अर्थात् बोझ, वह फरिश्ता बनने नहीं देते, बीजरूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते। ... अमृतवेले की रूह-रुहान में प्रश्न पूछते कि पॉवरफुल स्टेज जो होनी चाहिए, वह क्यों नहीं होती। इसका कारण यह सूक्ष्म पाप हैं, जो बाप समान बनने नहीं देते।"

अ.बापदादा 23.5.74

स्वमान एवं स्थितियों की अनुभूति और उनकी अथॉरिटी

"अमृतवेले स्मृति में बैठते हो लेकिन स्मृति स्वरूप का अनुभव हो। अनुभव की अथॉरिटी का आनन्द बहुत थोड़ा समय होता है। ... लेकिन स्वरूप के स्मृति स्वरूप के अनुभवी मूर्त बनें, अनुभव में खो जायें, उसको अभी और बढ़ाना होगा क्योंकि अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना, इसको कहा जाता है अनुभव। तो स्वरूप की स्मृति के अनुभव में खो जाना है।"

अ.बापदादा 2.02.12

"आवाज में आने और आवाज़ से परे होने में कितना अन्तर है, क्या सभी इसके अनुभवी बन चुके हो ? ... यन्त्र में जरा भी खिट-खिट है तो ऐसी आवाज़ पसन्द नहीं करते हो ना!
ऐसे ही आपका यह यन्त्र मुख भी माइक है। इस मुख द्वारा भी जब कभी यथार्थ व युक्ति-युक्त बोल नहीं निकलते हैं, तो उसी समय सबको क्या अनुभव होगा, क्या उस समय आपको यह मालूम पड़ता है क्या।"

अ.बापदादा 27.5.74

विचारणीय यह है कि परमधाम में आत्मा चमकती हुई बाप के साथ होती है परन्तु उसकी अनुभूति वहाँ नहीं होती है।

सतयुग में सर्व प्राप्तियाँ होती हैं, प्रकृतिजीत होते हैं अर्थात् प्रकृति दासी होती है, जीवनमुक्त अमर होते हैं ... परन्तु उसकी यथार्थ अनुभूति नहीं होती है क्योंकि उसके विपरीत स्थिति का न उस समय ज्ञान होता है और न ही आत्मा में उसका अनुभव संचित होता है क्योंकि आत्मा परमधाम से आती है तो उसमें अनुभव संचित होने की बात नहीं होती है। अनुभव तो जब इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाते हैं, तब आत्मा करती है और वह बीजरूप में उसके संस्कारों में संचित रहता है।

द्वापर से लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम की मूर्तियाँ मन्दिरों में स्थापन करके, उनकी विधि पूर्वक पूजा करते हैं, उनसे भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण होती हैं परन्तु विचारणीय है कि क्या उन मूर्तियों को यह अनुभूति होती है कि हमारी पूजा हो रही है, उनको कोई खुशी होती है।

भले ही उनकी मूर्तियाँ और चित्र प्रसन्न मुद्रा में बनाते हैं, उनके नैन-चैन प्रेम स्वरूप, शक्ति स्वरूप बनाते हैं। उनकी जो महिमा करते हैं, वह वास्तव में सतयुग की नहीं करते हैं, परन्तु वह महिमा संगम पर परमात्मा जो ज्ञान देते हैं, अनुभव कराते हैं, विश्व कल्याण की सेवा करते हैं। देखा जाये तो वे चित्र सतयुग के हैं परन्तु कर्तव्य और महिमा संगमयुग की है।

अभी जब संगमयुग पर परमात्मा अपना बनाकर अर्थात् ब्राह्मण बनाकर हमको ज्ञान देते हैं, जिससे हम अपने स्वमान को पहचान कर मास्टर सर्वशक्तिवान, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, स्वदर्शन चक्रधारी, ... बनकर भृकुटी के तख्तनशीन स्वराज्य अधिकारी बनकर परमात्मा के साथ विश्व-कल्याण का कार्य करते हैं। परमधाम से लेकर रिटर्न जर्नी तक की सारी अनुभूतियाँ अभी इस ब्राह्मण जीवन में ही होती है। इसलिए बाबा ने कहा है कि इन अनुभूतियों की अथॉरिटी बनना है और जब स्वयं बनेंगे, तब ही औरों को भी बना सकेंगे। सतयुग के देवतायें न किसी की मनोकामनायें पूर्ण करते हैं और न किसी को ऐसी कोई कामना होती है। कामना होना और उसको पूर्ण करने की बात अभी संगमयुग पर ही है और वह कर्तव्य अभी हमको करना होता है।

भले ही हमारी रिटर्न जर्नी विनाश के बाद आरम्भ होती है क्योंकि वहाँ से ही आत्मा सूक्ष्मवतन जाकर परमधाम जाती है, साकार में सृष्टि रंगमंच पर पार्ट पूरा होता है परन्तु उसका ज्ञान और उसकी यथार्थ अनुभूति अभी ही होती है, जब आत्मा इस साकार देह में रहते फरिश्ता स्वरूप में स्थित होती है।

स्वमान

बाबा ने हमको स्वमान में रहने और अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है, तो सारे कल्प में हमारे मुख्य-मुख्य स्वमान क्या-क्या हैं, वह ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट होगा, तब ही हम उन स्वमानों में रह सकेंगे और अनुभव की अथॉरिटी बन सकेंगे। भिन्न-भिन्न समय पर हमारे स्वमान क्या हैं, उस पर विचार करना भी आवश्यक है।

अनादि स्वरूप के स्वमान

परमधाम में परमात्मा पिता के साथ चमकता हुआ सितारा लकी स्टार
हम आत्मा परम-शान्ति और परम-शक्ति सम्पन्न हैं
हम आत्मा परम-पवित्र हैं

आदि स्वरूप के स्वमान

सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण देवता
मर्यादा पुरुषोत्तम
विश्व-राज्य अधिकारी
प्रकृतिपति
धन-धान्य से सम्पन्न
अमरत्व को प्राप्त अर्थात् मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त
योगबल से जन्म - कंचन काया
सतयुग में सतोप्रधान प्रकृति का सुख होगा, परस्पर प्यार (Love and affection) होगा।

मध्यकाल में

A. पूज्य स्वरूप के स्वमान
मन्दिरों में मूर्ति रूप में पूजा
मूर्ति रूप में भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करने वाले
भक्तों के इष्टदेव
स्नेह और शक्ति के प्रतिरूप

B. पुजारी स्वरूप के स्वमान
अव्यभिचारी भक्त - परमात्मा के प्रति श्रृद्धा-भावना रखने वाले।
भगवानुवाच - मैं पुराने भक्तों को ही पहले आकर मिलता हूँ।
परमात्मा के प्रति श्रृद्धा-भावना, भगवानुवाच - मैं आकर पहले-2 पुराने भक्तों से ही मिलता हूँ, उनको ही ज्ञान देता और उनको ही पहले-2 वर्सा मिलता है।

संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप के स्वमान

सबसे महत्वपूर्ण संगमयुग के स्वमान हैं, जिन पर सारे कल्प के स्वमानों का आधार है और जो सारे कल्प के स्वमानों की अनुभूति के आधार हैं।
सच्चिदानन्द स्वरूप
ज्ञान-ज्ञानेश्वर अर्थात् मास्टर ज्ञान का सागर

मास्टर सर्वशक्तिवान
हम आत्मा परम-शान्ति सम्पन्न आत्मा हैं
कर्मेन्द्रियों के मालिक स्वराज्य अधिकारी
त्रिनेत्रधारी
त्रिकालदर्शी
त्रिलोकीनाथ अर्थात् तीनों लोकों को जानने वाले
प्रजापिता ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण
परमात्मा के डायरेक्ट सन्तान
ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनने वाला
स्वदर्शन चक्रधारी
राजयोगी
मास्टर दाता-विधाता-वरदाता
महादानी-वरदानी
परमपिता परमात्मा के दिल तख्तनशीन बालक सो मालिक आत्मा
अकाल तख्तनशीन अर्थात् भृकुटी के तख्त पर विराजमान
विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी
इस विश्व-नाटक में हमारा परमात्मा के साथ पार्ट है
विश्व-नाटक के साक्षी-दृष्टा और ट्रस्टी हो पार्ट बजाने वाले
शिवशक्ति-पाण्डव सेना के सेनानी
मास्टर विश्व-कल्याणकारी
मास्टर विश्व-परिवर्तक
मास्टर पतित-पावन
परमपिता परमात्मा के उम्मीदों के सितारे
बेग़मपुर के बादशाह
परमात्मा की मदद के पात्र और परमात्मा के मददगार
विश्व की सर्वात्माओं के पूर्वज
शुभ-चिन्तक मणी
परमात्म-सन्देश वाहक
इन्द्र परमात्मा के दरबार के सदस्य

कल्प-वृक्ष के फाउण्डेशन मास्टर बीजरूप
कल्प-कल्प के विजयी
खुदा के दोस्त
कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा
गॉडली स्टूडेण्ट
विश्व में लाइट-माइट फैलाने वाले लाइट-माइट हाउस
परमात्म-दुआओं के पात्र
हमको ही परमात्मा से बात करने का सौभाग्य प्राप्त है
सच्ची सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव
हम ही स्वर्ग के अधिकारी बनते हैं

फरिश्ता स्वरूप अर्थात् रिटर्न जर्नी स्वरूप के स्वमान

प्रकाशमय काया के साथ प्रकाशमय जगत से विश्व कल्याणार्थ सारे भूमण्डल पर लाइट-माइट की किरणें फैलाता हुआ बापदादा के साथ स्वतन्त्रता से विचरण करता हुआ।

परमपिता परमात्मा के साथ समान साथी बनकर घर जाना। धर्मराज भी सम्मान से आगे जाने देता है।

निर्भय और निर्विकल्प स्थिति स्वरूप

"बच्चों के दिल में है कि बेहद का पारलौकिक बाप आया है हमको वापस घर ले जाने के लिए और हमको सुख देने के लिए। जिनको ये निश्चय नहीं है, वे यहाँ आ नहीं सकते। तुम हो ईश्वरीय औलाद। यह सृष्टि ईश्वरीय सम्प्रदाय और आसुरी सम्प्रदाय का एक खेल है इसमें हर एक मनुष्य मात्र को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है।" सा.बाबा 4.2.12

"आवाज़ में आने और आवाज़ से परे होने में कितना अन्तर है, क्या सभी इसके अनुभवी बन चुके हो ? ... यन्त्र में ज़रा भी खिट-खिट है तो ऐसी आवाज़ पसन्द नहीं करते हो ना ! ऐसे ही आपका यह यन्त्र मुख भी माइक है। इस मुख द्वारा भी जब कभी यथार्थ व युक्ति-युक्त बोल नहीं निकलते हैं, तो उसी समय सबको क्या अनुभव होगा, क्या उस समय आपको यह मालूम पड़ता है क्या।" अ.बापदादा 27.5.74

बाबा ने सभी स्वमानों की स्मृति दिलाई है, उनका कुछ विचार यहाँ किया गया है परन्तु उन सबके अनुभव करने, अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए उन सबकी वास्तविकता

को विचार करना अति आवश्यक है। विचार करने, उनका मनन-चिन्तन करने पर ही उन सबकी अनुभूति होगी और उस अनुभूति की अथॉरिटी और उनके नशे के आधार पर दूसरों को भी बता सकेंगे।

Q. आत्मिक स्वरूप के स्वमान, देवता स्वरूप के स्वमान, पूज्य स्वरूप के स्वमान, ब्राह्मण स्वरूप के स्वमान, रिटर्न जर्नी अर्थात् फरिश्ता स्वरूप के स्वमान में क्या अन्तर होता है, पाँचों की तुलनात्मक स्थिति क्या है?

परमधाम में बिन्दु रूप में आत्मा चमकती हुई परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न परमात्मा के समान उनके साथ रहती है, परन्तु वहाँ कोई अनुभूति नहीं होती है, इसलिए अथॉरिटी का भी कोई प्रश्न नहीं उठता है।

स्वर्ग में देव स्वरूप में आत्मा जीवनमुक्त होती है, उस समय उसको सतोप्रधान प्रकृति, सतोप्रधान सम्बन्ध, सतोप्रधान सुख-साधन उपलब्ध होते हैं, उनका सुख होता है परन्तु उस समय भी आत्मा की उतरती कला होती है, उसको जो सुख-साधन, सम्बन्ध मिले, उसका आधार क्या है, उसका कोई ज्ञान नहीं होता है। इसलिए उसकी अथॉरिटी का भी कोई प्रश्न नहीं उठता है।

द्वापर से पूज्य स्वरूप में भल उनके मन्दिर बनते हैं, पूजा-अर्चना होती है, भक्त महिमा गाते हैं, भक्तों की यथा शक्ति मनोकामनायें पूर्ण होती हैं, परन्तु विचारणीय है कि क्या उन मूर्तियों को उसकी कोई अनुभूति होती है? मूर्तियाँ तो जड़ ही हैं, इसलिए उनको अनुभूति का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। वास्तविकता को देखा जाये तो उन जड़ मूर्तियों का चित्र अर्थात् रूप देवता जीवन का है, परन्तु उनका चरित्र जो गाते हैं, वह संगमयुग के ब्राह्मण जीवन का या संगम पर परमात्मा ने जो कर्तव्य किया, उसकी उन जड़ मूर्तियों में परिकल्पना करके महिमा गाते हैं। बाबा ने कहा कि देवताओं का जन्म योगबल से होता है, इसलिए उनकी जड़ मूर्तियाँ बनाकर पूजा होती है परन्तु देवताओं में संगम के समान यथार्थ ज्ञान नहीं होता है।

सबसे अच्छा जीवन ये संगमयुग का ब्राह्मण जीवन है, जिसमें हमको अपने भविष्य देव स्वरूप का भी ज्ञान है, और भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप का भी ज्ञान है। फरिश्ता बनने का पुरुषार्थ कर रहे हैं, उसका भी ज्ञान है तो परमधाम में हम कैसे रहते हैं, उसका भी ज्ञान है। इसलिए अभी ही हम पाँचों समय का यथार्थ अनुभव करते हैं और उनकी अथॉरिटी बन सकते हैं और जो जितना इन पाँचों स्वरूपों के स्वमान की अथॉरिटी बनेगा, वह उतना ही इस ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य को सम्पन्न करने में सफल होगा, जिससे उसका पाँचों समय पर उनका पद,

मान-शान श्रेष्ठ होगा। इसलिए बाबा हमको अपने पाँचों स्वरूपों के स्वमान की स्मृति दिलाकर उनकी अथॉरिटी बनने के लिए कहते हैं।

अभी हम अपनी स्थिति और सेवा से यह भी समझ सकते हैं कि भविष्य सतयुग में कौन-कौन हमारे निकट सम्बन्धी होंगे और पूज्य स्वरूप में कौन-कौन हमारे भक्त होंगे। सतयुग में हमारे महल कैसे होंगे और पूज्य स्वरूप में हमारे मन्दिर कैसे बनेंगे।पाँचों स्वरूपों में सबसे शानदार (Graceful) जीवन ये संगमयुगी ब्राह्मण जीवन ही है, जो इसके महत्व को अनुभव करता है, वह इस जीवन के सच्चे सुख को अनुभव करता है। यथार्थ में आत्मिक शक्ति की चढ़ती कला इस जीवन में ही होती है, और तो सारे कल्प उतरती कला ही है। रिटर्न जर्नी के समय भी फरिश्ता स्वरूप में सूक्ष्मवतन में कोई विशेष चढ़ती कला या अनुभूति नहीं होगी। उसका अनुभव भी अभी ही है।

Q. स्वदर्शन चक्रधारी बन 5 स्वरूपों की एक्सरसाइज़ और स्वमानों की अथॉरिटी में क्या अन्तर है?

स्वदर्शन चक्रधारी बन 5 स्वरूपों की एक्सरसाइज़ में चढ़ती कला और उतरती कला दोनों का आभास होता है परन्तु स्वमानों पाँचों समय अर्थात् परमधाम, स्वर्ग, भक्ति-मार्ग, संगम पर ब्राह्मण जीवन और रिटर्न जर्नी में फरिश्ता स्वरूप के स्वमानों में उतरती कला के विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है और न ही उसका आभास होता है।

Q. फरिश्तों और भूतों में क्या अन्तर है?

Q. फरिश्तों और धर्म-पिताओं में क्या अन्तर है?

फरिश्ते सूक्ष्मवतन के अपर रेन्ज अर्थात् ब्रह्म तत्व के साथ के क्षेत्र में विचरण करते हैं क्योंकि उनका इस धरती से बुद्धियोग हट गया होता है, यहाँ का इस कल्प का पार्ट पूरा हो जाता है, इसलिए उनको अब घर वापस अर्थात् परमधाम जाना होता है। फरिश्ते रूप में कुछ सेवा का पार्ट होता है, वह सम्पन्न करते हैं।

भूत-प्रेत आदि सूक्ष्म लोक के लोअर रेन्ज अर्थात् आकाश तत्व के साथ के क्षेत्र में विचरण करते हैं क्योंकि वे पतित आत्मायें होती हैं, इसलिए उनको अपना कर्मभोग पूरा कर कर्मों अनुसार फिर जन्म लेना होता है, इसलिए उनको इस धरती के वस्तु और व्यक्तियों का आकर्षण रहता है। भूत-प्रेत व्यक्तियों के साथ के अपने हिसाब-किताब पूरा करते हैं। वे अधिकांश आत्माओं को दुख ही देते हैं, सुख नाममात्र ही देते हैं।

धर्म-पिताओं की आत्मायें परमधाम से पावन आती हैं और आकर परकाया प्रवेश

करती हैं, इसलिए उनका साक्षात्कार भी फरिश्तों के समान ही होता है, लेकिन वे भी सूक्ष्मलोक के लोअर रेन्ज में ही विचरण करती हैं क्योंकि जिस तन में प्रवेश करती हैं, वह पतित बीज से उत्पन्न होता है और उनको अपना धर्म स्थापन कर यहाँ जन्म लेकर उसकी पालना का कार्य करना होता है। परन्तु वे भूत-प्रेतों से अच्छी स्थिति में रहती हैं, साक्षात्कार में भी उनकी चमक अच्छी होती है, वेष-भूषा भी अच्छी होती है।

विचारणीय तथ्य

"याद करो - अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है। ... एक तो बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं। बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही हैं। ... सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। ... प्रकृति भी कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। ... फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है। ... सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती है। ... अब आओ संगम में, सब चक्र लगा रहे हो ? तो संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। ... पवित्रता की जायदाद अभी बाप से प्राप्त होती है और पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है।" अ.बापदादा 2.02.12

यद्यपि परमधाम में अपने अनादि स्वरूप में आत्मा परम-शक्ति और परम-शान्ति सम्पन्न है परन्तु वहाँ आत्मा को शान्ति-शक्ति की कोई अनुभूति नहीं है। शान्ति-शक्ति का अनुभूति अभी जब बाबा हमको ज्ञान देते हैं और वह ज्ञान हमारी बुद्धि में इमर्ज रहता है और हम देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न अनादि स्वरूप में स्थित होते हैं अर्थात् इस ब्राह्मण जीवन में ही वह अनुभूति होती है। परमात्मा का सानिध्य प्राप्त करना भी बड़े भाग्य और स्वमान की बात है परन्तु परमधाम में आत्मा भल परमात्मा के पास ही रहे परन्तु उसको परमात्मा के साथ की न अनुभूति होती है और न ही साथ से कोई लाभ होता है। यथार्थ लाभ अभी जब साकार में आये परमात्मा के सानिध्य में आते हैं तब ही होता है।

बाबा ने आत्मा के अनादि स्वरूप की तुलना आकाश में चमकते हुए तारो से करके

बताया है कि तुम ब्रह्माण्ड के चमकते हुए सितारे हो और वहाँ परमात्मा के साथ रहते हो परन्तु ये बात भी विचारणीय है कि कई तारे सूर्य-चाँद से दूर होते भी पास रहने वालों से अधिक चमकते हैं। इस सम्बन्ध में साकार बाबा ने भी कहा है कि बापदादा के साथ रहने का इतना महत्व नहीं है, जितना दूर रहते भी बाबा की सेवा में तत्पर रहने और बाप समान स्थिति बनाने का महत्व है। इसका मतलब ये नहीं कि साथ में रहने का कोई महत्व नहीं है परन्तु पुरुषार्थ है बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने और ईश्वरीय सेवा का कर्तव्य करने का। साकार बाबा और अव्यक्त बापदादा भी इस सृष्टि रंगमंच पर चमकते हुए ऐसे सितारों को विशेष याद करते हैं और यह दैवी परिवार भी उनके महत्व को अनुभव करता है।

रहमदिल बनने वाला ही विश्व-कल्याण का कर्तव्य कर सकता है परन्तु किसी आत्मा पर रहम तब ही आता है, जब आत्मा को अपने में दुख-अशान्ति की अनुभूति संचित होती है। इसलिए कहावत है - जाके पैर न गई बिंवाई, वो क्या जाने पीर पराई। इसलिए सतयुग में या परमधाम में रहम आदि की कोई बात ही नहीं होती है। इसलिए देवताओं को भी रहमदिल नहीं कहेंगे। वे सम्पन्न और सम्पूर्ण अवश्य हैं परन्तु रहमदिल का संस्कार संगमयुग पर ब्रह्मा और ब्राह्मणों का है।

द्वापर से हम खुद ही अपने चित्र बनाकर उनकी पूजा करते हैं, इसलिए गायन है आपही पूज्य और आपही पुजारी। देवताओं की मूर्तियाँ बनाकर पूजते हैं परन्तु यदि द्वापर से जिन मूर्तियों आदि अर्थात् लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता आदि की मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं, उनकी बायोग्राफी पर विचार करें तो उनमें दो समय की और दो प्रकार कर्तव्यों का समावेश है। एक तो शरीर सतयुग-त्रेता का अर्थात् योगबल से जन्म लेने वालों का है और कर्तव्य संगमयुग का अर्थात् परमात्मा और ब्राह्मणों का गायन करते हैं। इसलिए महत्व इस समय के कर्तव्य का है।

रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान और अनुभव अभी संगमयुग पर ही है, अन्त में जब सूक्ष्मवतन से फरिश्ता रूप में पास होंगे अर्थात् रिटर्न जर्नी में होंगे तो उस समय उस स्वरूप को सोचने का भी समय और संकल्प नहीं होगा। ब्रह्मा बाप के फरिश्ता स्वरूप के विषय में विचार करें तो उनको अभी सूक्ष्मवतन में यह ज्ञान है क्योंकि अभी वे फरिश्ता स्वरूप से विश्व-कल्याण का कर्तव्य कर रहे हैं, साकार वतन में आते-जाते हैं। अन्त में तो सूक्ष्म शरीर से सूक्ष्मवतन से सेवा नहीं होगी क्योंकि उस समय परमधाम जाने का होगा अर्थात् रिटर्न जर्नी होगी।

ध्यान में रहे कि स्मृति में रहना और स्मृति-स्वरूप रहना दोनों में महान अन्तर है।

स्मृति-स्वरूप स्थिति है और स्मृति में रहना पुरुषार्थ है। इसलिए बाबा ने जो अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है और अपने स्वमानों की स्मृति दिलाई है, उनकी अनुभूति का अभी ही समय है, अभी ही उसका महत्व है और अभी ही हमको अनुभव की अथॉरिटी बनने से हमको सेवा में सहज सफलता मिलेगी। सच्ची सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव अभी संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा में सारा ज्ञान इमर्ज है, सारे कल्प के सुख-दुख का अनुभव आत्मा में संस्कार रूप में संचित है और आत्मा देह में रहते अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है। परमात्मा द्वारा अभी की प्राप्तियों की अनुभूति ही आधे कल्प की प्राप्ति का आधार है और आधे कल्प की भक्ति का आधार बनती हैं।

Q. अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी है तो अभी हमको किन-किन बातों के अनुभव की अथॉरिटी बनना है ?

जब हमको पता होगा कि हमको किन-किन बातों की अथॉरिटी बनना है, तब ही हम उस अथॉरिटी के अनुभव में स्थित हो सकेंगे अर्थात् उस अनुभव की अथॉरिटी बन सकेंगे और उस अथॉरिटी से किसको भी समझा सकेंगे। आत्मा-परमात्मा-ड्रामा का जो भी ज्ञान बाबा ने दिया है, उन सबके गुण-धर्मों के अनुभव की अथॉरिटी

आत्मा के विभिन्न स्वमानों और परमात्मा से प्राप्त वरदानों के अनुभव की अथॉरिटी

बाबा ने जो ज्ञान-गुण-शक्तियाँ दी हैं अर्थात् स्मृति दिलाई है, उन सबकी अथॉरिटी

परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभव की अथॉरिटी

पुरुषोत्तम संगमयुग के सच्चे सुख के अनुभव की अथॉरिटी

पुरुषोत्तम संगमयुग प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ

अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए परमात्मा से प्राप्त ज्ञान और अनुभूतियों के विषय में जानना अति आवश्यक है, इसलिए संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों के विषय में कुछ वर्णन यहाँ किया गया है। बाबा ने हमको अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है, जिससे हम संगमयुग के सच्चे सुख को अनुभव कर सकें और दूसरों को करा सकें। बाबा ने कहा है - संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों की लिस्ट निकालो तो वह सतयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों से कई गुणा बड़ी हो जायेगी। इसलिए परमात्मा से प्राप्त ज्ञान के विविध विषयों और अनुभूतियों के विषय में विचार किया गया है।

ज्ञान पक्ष

बाबा ने हमको विशेष रूप से जिन विषयों का ज्ञान दिया है और उन सबके गुण-धर्मों के विषय में बताया है, उनमें मुख्य विषय हैं -

1. आत्मा का ज्ञान
2. परमात्मा का ज्ञान
3. विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान
4. सृष्टि-चक्र का ज्ञान
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प वृक्ष का ज्ञान
7. कर्मों की गुह्य गति के ज्ञान की प्राप्ति
8. योग का यथार्थ ज्ञान
9. पवित्रता का ज्ञान और जीवन में उसके महत्व का ज्ञान
10. इसके अतिरिक्त ज्ञान सागर परमात्मा ने इस विश्व-नाटक के अनेकानेक अन्य गुह्य और गोपनीय रहस्यों का ज्ञान दिया है और उनका अनुभव भी कराया है।

अनुभूति पक्ष

* आत्मा के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति
* सच्ची सुख-शान्ति-पवित्रता की अनुभूति
* निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि, ... जय-पराजय में समान स्थिति का अनुभव
* यथार्थ रीति से साक्षीपन का अनुभव
* विश्व-नाटक के सुख का अनुभव
* विश्व-नाटक के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* विश्व-नाटक के गुण-धर्मों और नियम-सिद्धान्तों का अनुभव
* मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ और सुखद अनुभव
* परमात्मा के अवतरण अर्थात् परकाया प्रवेश का अनुभव
* परमात्म-मिलन और परमात्मा के सानिध्य का सुखद अनुभव
* ज्ञान सागर परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का अनुभव
* परमात्म-प्यार और पालना का अनुभव

* परमात्मा के मात-पिता के रूप में पालना और प्यार का सुखद अनुभव
* विचित्र परमात्मा को चित्ररूप अर्थात् साकार रूप में देखने और उनके दिव्य चरित्रों का अनुभव
* परमात्मा से सर्व प्राप्तियों की अर्थात् सर्वप्राप्ति सम्पन्न स्थिति की अनुभूति
* परमात्मा से मदद का अनुभव और परमात्मा की मदद का अनुभव
* परमात्मा की मदद और उसके विधि-विधान का यथार्थ अनुभव
* परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों की यथार्थ अनुभूति
* खुदा दोस्त का अनुभव
* ईश्वरीय पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का अनुभव
* ईश्वरीय गोद का अनुभव
* परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का अनुभव
* परमपिता परमात्मा के ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात् ईश्वरीय वर्से की अनुभूति
* परमपिता परमात्मा का वारिस बनने और बनाने का अनुभव

Q. परमात्मा का यथार्थ वर्सा क्या है, वह किसको एवं कब मिलता है ?

* परमात्मा के सौदा ार स्वरूप का अनुभव
* डायरेक्ट परमात्मा को देने और परमात्मा से लेने का अनुभव
* परमात्मा के खिवैया स्वरूप का अनुभव
* निराकार आत्मा को निराकार बाप के प्यार का साकार में अनुभव
* आत्मा आशिक को परमात्मा माशूक के प्यार का यथार्थ अनुभव
* परमात्म के गरीब-निवाज स्वरूप का अनुभव
* परमात्मा के सानिध्य से पवित्रता की धारणा और दिव्य शक्तियों की प्राप्ति तथा उनकी अनुभूति
* अमरत्व का अनुभव
* बच्चों का बाप पर और बाप का बच्चों पर बलिहार जाने का अनुभव
* श्रेष्ठ भाग्य और भाग्यविधाता परमात्मा के भाग्य-विधाता स्वरूप का अनुभव
* त्याग में भी भाग्य अनुभव
* पुरुषार्थ में प्रालब्ध का अनुभव
* परमात्मा की छत्रछाया और उनके हाथ और साथ का अनुभव
* परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का अनुभव

* परमात्मा के दिल-तख्त का सुखद अनुभव
* परमात्मा के दिल-तख्त और उसकी विशालता का सुखद अनुभव
* ईश्वरीय राज-दरबार अर्थात् इन्द्र-सभा का अनुभव
* परमात्मा के शिक्षक स्वरूप का अनुभव
* गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ का अनुभव
* वसुधैव कुटुम्बकम् का अनुभव
* विश्व-परिवार और परिवार के पूर्वजपन का अनुभव
* आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम (Sampeling) और विभिन्न धर्मों की स्थापना का अनुभव
* कर्म और फल के विधि-विधान का अनुभव
* कर्मयोग और कर्मभोग तथा दोनों के अन्तर का अनुभव
* धर्मराज और धर्मराज पुरी के विधि-विधान का अनुभव
* विभिन्न धर्मों के अस्तित्व और धर्म-ग्रन्थों के सार का अनुभव
* लव एण्ड लॉ के बैलेन्स के सन्तुलन का अनुभव
* राजा जनक के समान विदेही स्थिति का अनुभव
* स्वराज्य अधिकारीपन का अनुभव
* अहंकार और हीनता से मुक्त जीवन का अनुभव
* खुदा दोस्त का अनुभव
* बेफिकर बादशाह का अनुभव
* बाप के हाथ और साथ का अनुभव
* बालकपन और मालिकपन का अनुभव
* मास्टर सर्वशक्तिवान का अनुभव
* आत्मा के लाइट-माइट स्वरूप का अनुभव
* गार्डन आफ अल्लाह अर्थात् खुदा के बगीचे का अनुभव
* कमल पुष्प सम जीवन का अनुभव
* परमात्मा के करन-करावनहार स्वरूप का ज्ञान और अनुभव

अभी हमको सारे कल्प का ज्ञान है, इसलिए हमको कलियुग के तमोप्रधान सुखों का, भक्ति मार्ग का ज्ञान भी है तो सतयुग के सतोप्रधान सुखों के विषय में भी ज्ञान और उस ज्ञान के आधार पर आत्मा में सूक्ष्म अनुभव भी है। इसलिए हम सारे कल्प के सुख-दुख का अन्तर

समझकर संगमयुग के सच्चे सुख का अनुभव करते हैं। अतीन्द्रिय सुख, परमानन्द, मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का यथार्थ अनुभव आत्मा को अभी ही होता है, जब आत्मा को परमात्मा से आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान मिलता है। ज्ञान परमपिता परमात्मा का आत्माओं को सबसे श्रेष्ठ वरदान है, जो सब वरदानों, प्राप्तियों और अनुभूतियों का आधार है।

स्वमान, वरदान, संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों में अन्तर

Q. स्वमान, वरदान, संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों में अन्तर क्या है?
आत्मा-परमात्मा एक ही वंश के वंशधर हैं, इसलिए आत्मा में भी वे सभी गुण-धर्म-शक्तियाँ हैं, जो परमात्मा में हैं परन्तु हर आत्मा का पार्ट अपना-अपना है। आत्मायें जब अपना पार्ट बजाने आती हैं तो माता के गर्भ से जन्म लेती हैं और जन्म-मरण में आती हैं, इसलिए वे अपने गुण-धर्म-शक्तियों को भूल जाती हैं। परमात्मा कब माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, इसलिए वे कभी जन्म-मरण में नहीं आते हैं, इसलिए उनके गुण-धर्म-शक्तियाँ सदा स्थिर रहते हैं। फिर कल्पान्त में जब परमात्मा आकर आत्माओं को ज्ञान देते हैं, आत्मा के गुण-धर्म-शक्तियों अर्थात् स्वमानों की स्मृति दिलाते हैं तो आत्मायें अपने स्वमानों को पहचानती हैं और उनकी अनुभूति करती हैं।

वरदान दूसरों से प्राप्त होता है। परमात्मा आकर आत्माओं को अनेक प्रकार के वरदान देकर, उनको अपने गुण-धर्म-शक्तियों को जागृत करने में सहयोग देते हैं। परमात्मा का आत्माओं को सबसे बड़ा वरदान है - मनमनाभव-मध्याजी भव अर्थात् योगी बनो, पवित्र बनो। संगमयुग परमात्म प्राप्तियों और उनकी अनुभूतियों का युग है। परमात्मा से इस विश्व-नाटक के अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान मिलता है और अनेक प्रकार का अनुभव होता है, जिससे आत्मा का परमात्मा के प्रति प्यार बढ़ता है, परमात्मा की याद स्थिर होती है, जिससे आत्मा को उस ज्ञान की धारणा होती है, स्वमान जागृत होते हैं।
"ऐसे सच्चे साथी का साथ मिल गया तो साथ लेने के बाद कभी-कभी साथी से किनारा क्यों कर लेते हो? ऐसा खेल क्यों करते हो? लेकिन इस खेल में गँवाते क्या हो, वह जानते हो? खेल-खेल में बाप से मिलन को गँवा देते हो... यह भी जानते हो कि यह मेल कितने दिन का है, कितने थोड़े समय का है?... साक्षी होकर अपने आपको देखो कि क्या सच्चा साथी, श्रेष्ठ सम्पर्क व संग सदा प्राप्त है?" अ.बापदादा 20.5.74

Q. अव्यक्त बापदादा ने 2.02.12 की में जो हमको जो तीनों कालों और तीनों लोकों के हमारे स्वमानों अर्थात् महानताओं (Graceful Stage) की स्मृति दिलाई और उनकी अनुभूति करने के लिए ड्रिल कराई और उसको सदा करने के लिए श्रीमत दी, उसमें और स्वदर्शन चक्रधारी बनने में क्या अन्तर है?

बापदादा ने तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों को अनुभव करके अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए जो ड्रिल कराई, उसमें बाबा ने हमको तीनों कालों और तीनों लोकों में हमारी क्या स्वमान अर्थात् सम्मानीय स्थिति होती है, उसको अनुभव कराया और उसके अनुभव की अथारिटी बनने की प्रेरणा दी, उसका अनुभव कराया। स्वदर्शन चक्रधारी बनने में हमको हमारी महानता का भी अनुभव होता है तो गिरती कला में जाने की भी स्मृति आती है, जिससे उसका भी सूक्ष्म अनुभव होता है। इसलिए भक्ति मार्ग अर्थात् द्वापर से हमारा क्या स्वमान है, वह भी बाबा ने अनुभव कराया।

"अगर अपने पास सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा नहीं होगा तो वह सर्वात्माओं को सन्तुष्ट करने वाली सन्तुष्ट मणी नहीं बन सकेंगे।... अगर अभी विश्व की सर्वात्माओं द्वारा विश्व-कल्याणी, माननीय नहीं बनेंगे, तो माननीय के बिना पूज्यनीय भी नहीं बन सकेंगे। सन्तुष्टमणी बनने के बिना बापदादा के मस्तक की मणियाँ नहीं बन सकते हो। ऐसी महीनता की चेकिंग करनी है।"

अ.बापदादा 18.6.74

Q. स्वदर्शन चक्रधारी और स्वमानधारी बनने में अन्तर क्या है और बाबा का भाव क्या है?

स्वदर्शन चक्र फिराने में पूज्य और पुजारी, सुख और दुख दोनों का ज्ञान समाया रहता है, उसका आभास होता है। स्वमानधारी की ड्रिल दुख या गिरती कला की बात नहीं है, उसमें अपनी सम्मानीय स्थिति का ही आभास होता है।

Q. अव्यक्त बापदादा ने 2.02.12 की में जो हमको जो तीनों कालों और तीनों लोकों के हमारे स्वमानों अर्थात् महानताओं (Graceful Stage) की स्मृति दिलाई और उनकी अनुभूति करने के लिए ड्रिल कराई और उसको सदा करने के लिए श्रीमत दी है, उन सब स्वमानों में सबसे श्रेष्ठ स्वमान अर्थात् महानता किस समय की है और क्यों और उसका आधार क्या है?

वास्तव में संगमयुग का स्वमान ही सर्वोच्च स्वमान है, जो तीनों कालों और तीनों लोकों के स्वमानों अर्थात् महानताओं की अनुभूतियों का आधार है। वास्तविकता तो ये है कि वर्तमान ब्राह्मण जीवन के स्वमान की अनुभूति ही यथार्थ अनुभूति है और वही तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों की यथार्थ अनुभूति है और सर्व स्वमानों का आधार है। क्योंकि अभी ही हमको अपने तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों अर्थात् महानताओं का ज्ञान है, जिसके

कारण ही हम उन महानताओं को अनुभव करते हैं। परमधाम में तो आत्मा को कोई अनुभूति ही नहीं होगी। सतयुग में भले सतोप्रधान प्रकृति और सतोप्रधान सम्बन्धों का सुख होगा परन्तु विचार करो कि वहाँ उसकी अनुभूति क्या होगी। ऐसे ही द्वापर से मन्दिरों में हमारे मन्दिर बनेंगे, हमारी मूर्तियों की पूजा-अर्चना होगी, उनसे भक्तों को वरदानों की अनुभूति होगी, उनकी मनोकामनायें पूर्ण होंगी परन्तु उन मूर्तियों को क्या अनुभूति होगी और उस समय हमको क्या अनुभूति होगी। ऐसे ही रिटर्न जर्नी के समय सूक्ष्मवतन में भी आत्मा को क्या अनुभूति होगी, यह भी विचारणीय है। यथार्थ अनुभूति अभी है, जो इस अनुभूति को करता है, इसकी अथॉरिटी बनता है, उसका जीवन ही स्वमानपूर्ण अर्थात् महान (Graceful) है और वही औरों को भी यह अनुभव करा सकता है। परन्तु बिडम्बना ये है कि ये विश्व-नाटक सतत गतिशील और सतत परिवर्तनशील है, इसलिए इसमें कोई भी दृश्य या स्थिति सदा काल नहीं रह सकती है, इसलिए ये संगमयुग की यह महानतम स्थिति भी सदा काल रहने वाली नहीं है, इसलिए अभी हम इसकी महानताओं का जितना अनुभव करें और करायें, वही हमारा परम कर्तव्य है। भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता या प्लानिंग वाला कभी भी इस अनुभूति को नहीं कर सकता है। जो अचानक के पाठ को ध्यान में रखकर वर्तमान में यह अनुभूति करेगा, वही इसमें सफल होगा। वर्तमान में इस अनुभूति में रहने वाले का भविष्य स्वत: अच्छा होगा।

बाबा ने भी कहता है कि सब अचानक होना है अर्थात् विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार ये स्थिति भी अचानक परिवर्तन होनी है, इसलिए अभी ही हम सम्पन्न-सम्पूर्ण मूल स्वरूप में स्थित होकर सर्व अनुभूतियों की अथॉरिटी बनकर सर्व अनुभूतियों को करते हुए जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करें। अभी अनुभव की हुई यह स्थिति ही आगे हमारे काम में आयेगी। उसके लिए ही बाबा कहते हैं कि एवर-रेडी बनो।

ये भी अटल सत्य है कि परमधाम जाने से पहले सारे कल्प के हिसाब-किताब पूरे करने ही हैं और उसका भी समय अभी ही है, इसलिए कर्मभोग भी अवश्य सम्भावी है, इसलिए उसके लिए भी हमको पहले से ही तैयार रहना है। इसलिए ये अनुभव भी अभी जब कर्मभोग नहीं है, तब ही कर सकते हैं और वह अनुभव और स्थिति ही कर्मभोग के समय भी सहयोग देगी।

Q.बापदादा ने हमको तीनों कालों और तीनों लोकों के हमारे स्वमानों अर्थात् महानताओं (Graceful Stage) की स्मृति दिलाई है, उनका आधार क्या है ?

संगमयुग पर हमने ज्ञान-योग का पुरुषार्थ करके जितना जड़-जंगम प्रकृति को पावन बनाया,

उस अनुसार हमको सतयुग में प्रकृति का सतोप्रधान सुख मिलेगा और ब्राह्मण परिवार की आत्माओं की जो सेवा की या सेवा ली, उस अनुसार सतयुग में परिवार मिलेगा, आत्माओं से सम्मान मिलेगा।

संगमयुग पर हमने अपनी चलन-चेहरे और वाणी से जिन आत्माओं को बाप का सन्देश दिया, सहयोग दिया, यज्ञ की तरफ आकर्षित किया या किसी तरह से सेवा में सहयोगी बनाया, वे द्वापर से भक्त बनकर हमारी पूजा-अर्चना करेंगे। आपही पूज्य और आपही पुजारी के सिद्धान्त अनुसार हम भी मन्दिर बनायेंगे परन्तु अपने से बड़ों के अर्थात् जिनसे हमको संगमयुग पर प्राप्तियों की अनुभूति हुई है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने ही पहले-पहले शिवबाबा का मन्दिर बनाकर उनकी पूजा शुरू की। अभी के पुरुषार्थ और सेवा से हम अपनी स्वर्गिक प्राप्तियों और द्वापर से भक्तों द्वारा मिलने वाले स्वमान की स्थिति को देख सकते हैं। ऐसे ही अभी संगमयुग पर हम जितना शिवबाबा के साथ फेथफुल बनकर ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनते हैं, उस अनुसार ही हमारी यहाँ महिमा होती है अर्थात् हमारी चमक होती है और उसी अनुसार परमधाम में भी हमारी आत्मिक स्वरूप की चमक होगी।

रिटर्न जर्नी के समय सूक्ष्म वतन में भी जब हम धर्मराज के सामने से पास होंगे तो अभी संगम किये गये पुरुषार्थ, कर्मों, सेवा के आधार पर ही धर्मराज के द्वारा या धर्मराज पुरी या सूक्ष्मवतन में हमारा सम्मान होगा।

इस प्रकार इन सत्यों पर विचार करके देखें तो संगमयुग के स्वमान ही महान हैं और सारे कल्प अर्थात् तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों का आधार हैं। जितना हम अभी अपने स्वमानों को अनुभव करेंगे, उनके अनुभव की अथॉरिटी बनेंगे, उस अनुसार ही हमारे कर्म-संस्कार होंगे, हमारे से सेवा होगी, जो सारे कल्प अर्थात् तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमान का आधार बनेंगे।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल और ज्वालामुखी योग और अनुभव की अथॉरिटी में सम्बन्ध

विविध प्रश्न और उनके सम्भावित उत्तर

Q. बाप समान सम्पन्न स्वरूप क्या है ?

निराकार बाप समान गुण-धर्मो को धारण करना और जब चाहें तब उस निराकारी स्वरूप में स्थित होकर परम-शक्ति और परम-शान्ति की अनुभूति करें।

ब्रह्मा बाप समान गुण-धर्मों को धारण करना अर्थात् सदा सम्पन्न फरिश्ता स्वरूप में रहकर सदा जीवनमुक्त स्थिति में स्थित होकर परमानन्द का अनुभव करना और निरन्तर विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर रहना।

इस स्थिति को बनाने के लिए निराकार बाप और ब्रह्मा बाप के गुण-धर्मों का यथार्थ रीति ज्ञान होना अति आवश्यक है।

सर्व ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न बाप को याद कर स्वराज्य अधिकारी की सीट पर सेट हो किसी भी शक्ति को आर्डर करें तो शक्ति आर्डर अवश्य मानेगी।

Q. सम्पन्न और सम्पूर्ण फरिश्ता स्वरूप क्या है ?

जब हमको फरिश्ता स्वरूप का ज्ञान होगा, तब ही हम निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल सफलतापूर्वक कर सकेंगे।

हर आत्मा का देह धारण करते ही सूक्ष्म शरीर निर्मित हो जाता है, इसलिए हर आत्मा सदा ही सूक्ष्म शरीर होता है, परन्तु फरिश्ता आत्मा का वह सूक्ष्म शरीर है, जिसका सूक्ष्म शरीर पवित्र होता है अर्थात् जब आत्मायें वापस परमधाम जाती हैं तो सभी आत्मायें पावन बनकर ही जाती हैं, इसलिए अन्त में जब आत्मायें सूक्ष्मवतन से पार करती हैं तो फरिश्ता स्वरूप में ही पार करती हैं। जब इस धरा पर पार्ट बजाने के लिए परमधाम से आत्मायें आती हैं तो भी सूक्ष्मवतन से तो पार करना ही होता है क्योंकि सूक्ष्मवतन का वह क्षेत्र तो खत्म नहीं होता है परन्तु उस समय आत्मा को सूक्ष्म शरीर नहीं होता है क्योंकि आत्मा निराकारी स्वरूप से आती है और साकार सृष्टि पर आकर शरीर धारण करती हैं। आत्मा के शरीर में प्रवेश होते ही उसकी उतरती कला आरम्भ हो जाती है, इसलिए उस समय उनके सूक्ष्म शरीर को फरिश्ता नहीं कहा जा सकता है। फरिश्ता अर्थात् चढ़ती कला का सूक्ष्म शरीर और आत्मा।

और सब धर्म स्थापक जिस तन में प्रवेश करते हैं, उसके सूक्ष्म शरीर के साथ ही वे विचरण करते हैं, इसलिए उसके सूक्ष्म शरीर का ही आत्माओं को साक्षात्कार होता है। इसलिए अन्य धर्मों में भी फरिश्तों का गायन है। विचारणीय यह है कि उस समय वे धर्मपितायें गर्भ में प्रवेश नहीं करते हैं, इसलिए उनका अपना सूक्ष्म या स्थूल शरीर नहीं होता है, इसलिए वे पवित्र आत्मायें जिसमें प्रवेश करते हैं, वह सूक्ष्म शरीर तेजस्वी होता है।

Q. निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास सफलता पूर्वक हो रहा है? यदि नहीं तो उसका कारण क्या है?

आत्मा निराकार है, इसलिए जब उसका मूल स्वरूप ही निराकार है तो उस स्थिति में स्थित होने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए और जब आत्मा इस देह में प्रवेश करती है, तब से ही उसके साथ सूक्ष्म शरीर तो रहता ही है, इसलिए उसमें स्थित होना भी कठिन नहीं होना चाहिए और सूक्ष्म शरीर का ही शुद्ध-पवित्र रूप फरिश्ता है, परन्तु आवश्यकता है इसके सफल अभ्यास की। वास्तविकता को देखें तो खान-पान और संग तथा उससे जनित व्यर्थ संकल्प ही इस अभ्यास में मुख्य बाधा है। योग के इस अभ्यास की सफलता के लिए खान-पान न अधिक हो और न बिल्कुल कम हो अर्थात् भोजन शुद्ध और सन्तुलित हो। ऐसे ही स्थूल और सूक्ष्म संग भी अच्छा हो अर्थात् बुद्धि में सदा ज्ञान का चिन्तन रहे और स्थूल संग भी अच्छा रहे तो ये अभ्यास निश्चित ही सहज और सफल होगा।

जब तक आत्मा में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता की भावना और शुभाशुभ की आशंका से ग्रसित है, तब तक निराकारी स्थिति और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप का सफल अभ्यास नहीं हो सकता अर्थात् हम उस स्थित में स्थित नहीं हो सकते क्योंकि इनके कारण हमारी बुद्धि में किसी न किसी व्यक्ति की याद आती ही रहेगी, व्यर्थ चिन्तन चलता रहेगा और जब किसी व्यक्ति या वस्तु की याद बुद्धि में होगी, व्यर्थ चिन्तन होगा तो निराकारी स्थिति या अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप की स्थिति कैसे हो सकती है। शुभाशुभ की आशंका से उत्पन्न व्यर्थ संकल्प भी इसके लिए बड़ी बाधा हैं।

"मैं जो हूँ, जैसा हूँ, वैसा मुझे यथार्थ रीति कोई नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं। ... विचार करना है कि मैं आत्मा बहुत छोटी बिन्दी हूँ, हमारा बाबा भी बहुत छोटा बिन्दी है, ऐसे याद रहता है।... बाप को यथार्थ रीति याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।" सा.बाबा 9.02.10 रिवा.

इस सत्य को समझने और धारण करने वाला ही निराकारी स्थिति और फरिश्ता

स्वरूप में स्थित हो सकेगा अर्थात् उसका सफलतापूर्वक अभ्यास कर सकेगा।।

Q. निराकारी स्वरूप और अव्यक्त फरिश्ता स्वरूप की स्थिति और 11.02.10 की अव्यक्त बापदादा की मुरली में क्या सम्बन्ध है ?

काम-क्रोध के अंशमात्र से भी प्रभावित आत्मा कब अपने निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित नहीं हो सकती है क्योंकि काम-क्रोध से प्रभावित आत्मा को किसी न किसी व्यक्ति की याद आती ही रहेगी, इसलिए वह कभी भी निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति अर्थात निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो नहीं सकता।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास 12-12 बारी 10-10 मिनट करना है अर्थात् 24 बार करना होगा तो जब हर घण्टे में 10 मिनट करेंगे तो हर घण्टे का 50 मिनट बचता है, उसमें हम कर्मयोगी बनकर रहेंगे, तब ही निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का अभ्यास करते समय उस स्थिति में स्थित हो सकेंगे क्योंकि उन 50 मिनट में हम जो करते हैं, उसका भी प्रभाव इस अभ्यास पर पड़ता है। अन्यथा उस अभ्यास के समय हम निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित नहीं हो सकेंगे, उसमें स्थित होने के पुरुषार्थ करने में ही 5-10 मिनट का समय निकल जायेगा।

अभी कर्मयोग का समय है, सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्थिति होगी, फिर निराकारी बनकर निराकारी वतन में जायेंगे और फिर सतयुग में कर्मयोगी जीवन का फल प्राप्त करेंगे। निराकारी - फरिश्ता - कर्मयोगी - फरिश्ता - निराकारी का ये एक चक्र है, जिसमें एक स्थिति दूसरी स्थिति पर आधारित है अर्थात् एक-दूसरे का आधार है और एक-दूसरे को प्रभावित करती है।

11.02.10 की मुरली में बाबा ने क्रोध पर विजय प्राप्त करने पर जोर दिया है और क्रोध-मुक्त बनने का संकल्प भी कराया है। इसका निराकारी और फरिश्ता स्वरूप में स्थित होने में बड़ा महत्व है क्योंकि क्रोध वाला सदा ही किस न किस व्यक्ति के चिन्तन में रहता है। क्रोध का कारण बाबा ने ईर्ष्या बताया है और उस पर हम विचार करें तो ईर्ष्या का कारण आत्मा में अहंकार या हीनता की भावना है। ये अहंकार-हीनता ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा से ही मिटेगी। विश्व-नाटक की वास्तविकता पर विचार करें तो इस विश्व-नाटक में अहंकार-हीनता का कोई स्थान ही नहीं है। विश्व-नाटक के ज्ञान की धारणा से ही क्रोध पर विजय पायी जा सकती है और अहंकार-हीनता से मुक्त आत्मा ही निराकारी और फरिश्ता स्वरूप का सफल अभ्यास कर सकेगी।

"ऐसा पुरुषार्थ करने के लिए दिन-प्रतिदिन जो शिक्षा मिलती है, उसको स्वरूप बनाते जाओ। शिक्षाओं को शिक्षा की रीति से बुद्धि में नहीं रखो, लेकिन हर शिक्षा को स्वरूप बनाओ ... तो ज्ञान स्वरूप, प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप स्थिति बन जायेगी। प्वाइन्ट की रीति से प्वाइन्ट बुद्धि में नहीं रखो लेकिन प्वाइन्ट को प्रैक्टिकल स्वरूप बनाओ।" अ.बापदादा 22.6.71

Q. परमधाम में निराकारी स्थिति, सूक्ष्मवतन की फरिश्ते स्वरूप की स्थिति और मास्टर सर्वशक्तिवान ब्राह्मण स्वरूप की स्थिति की अनुभूति कैसी होगी, उसके गुण-धर्म क्या होंगे ?
निराकारी परमधाम की स्थिति अर्थात् निर्संकल्प स्थिति, जहाँ मन-बुद्धि सहित देह के सब धर्म और क्रियायें बन्द हो जातीं। सूक्ष्मवतन में फरिश्ते सदा विश्व-कल्याण की सेवा में रहते हैं, उनको और कोई संक्ल्प नहीं रहता है। मास्टर सर्वशक्तिवान ब्राह्मण स्वरूप की स्थिति अर्थात् परमात्मा का हाथ हमारे ऊपर है और उसका साथ है, ज्ञान-गुण-शक्तियों सहित सर्व प्राप्तियों सम्पन्न इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति और विश्व-कल्याण की सेवा में तत्पर हैं तो फरिश्ते स्वरूप की स्थिति अर्थात् डबल लाइट स्वरूप में आत्मा विश्व-कल्याण का कर्तव्य करते परमानन्द की अनुभूति करती है।

Q. बाबा ने यह जो ड्रिल बताई और पहले भी इसके सम्बन्ध में अपने पाँच स्वरूपों की ड्रिल बताई, निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल बताई - इन सबका सफलतापूर्वक अभ्यास कौन कर सकता है और कैसे कर सकता है ?
जिसको तीन बिन्दियों अर्थात् आत्मा, परमात्मा और ड्रामा के गुण-धर्मों का यथार्थ रूप में ज्ञान होगा, उसकी सफल अनुभूति होगी, उसकी धारणा होगी और उस पर पूरा निश्चय और विश्वास होगा, जिससे वह भूत काल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता से मुक्त होगा। जो ऐसा चिन्तन और चिन्ता से मुक्त होगा, वही इसका सफलतापूर्वक अभ्यास कर सकेगा। इसके लिए ही परमात्मा ने ये सारा ज्ञान दिया है। अज्ञानतावश अर्थात् यथार्थ सत्य की धारणा न होने के कारण भूत काल का चिन्तन और भविष्य की चिन्ता के कारण चलने वाले व्यर्थ संकल्प ही इस अभ्यास में मुख्य बाधा हैं।

Q. अव्यक्त बापदादा ने 24.10.10 की मुरली में कहा है - तुमको सर्वात्माओं को किरणें देने की सेवा अवश्य करनी है, तो क्या निराकारी अर्थात् निर्संकल्प स्थिति में आत्मा दूसरी आत्माओं को किरणें दे सकती है या दूसरों से किरणें ले सकती है ?

वास्तव में ये किरणें लेने या किरणें देने की सेवा ब्राह्मण स्वरूप या फरिश्ता स्वरूप में ही होती है। निराकारी स्थिति और निराकारी दुनिया में न आत्मा किसको किरणें दे सकती है और न ले सकती है और वास्तविकता ये है कि वहाँ शक्ति आदि लेने-देने की कोई बात ही नहीं। इसलिए आत्मा इस देह में रहते देह से न्यारी निराकारी स्थिति में स्थित होकर ये कार्य करता है अर्थात् फरिश्ता स्थिति में ही ये कार्य होता है। यथार्थता पर विचार किया जाये तो निर्संकल्प समाधि या निराकारी स्थिति अन्तिम मंजिल है, जहाँ ये देने-लेने का संकल्प भी मर्ज होता है। देह में रहते निर्संकल्प या निराकारी स्थिति आत्मा से स्वभाविक ज्ञान-गुण-शक्तियों का प्रकाश फैलता है। बाबा ने ये भी कहा है - प्रेरणा से कोई काम नहीं होता है। मैं परमधाम में बैठकर प्रेरणा से कोई कार्य नहीं कर सकता हूँ, इसलिए मुझको यहाँ आना होता है। सृष्टि-चक्र के हिसाब से चार स्थितियाँ होती हैं - साकारी, अशरीरी, अव्यक्त, फिर है निराकारी।

नोट - सूक्ष्म वतन भी एक स्पेस है अर्थात् आकाश तत्व और ब्रह्मतत्व का संगम का क्षेत्र है, वहाँ आत्मा सूक्ष्म शरीर के साथ स्वत: उड़ती रहती है या चलती रहती है अर्थात् फरिश्ता स्वरूप कब स्थिर नहीं रहता। सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में भी प्लस होता है। जब तक ये ब्राह्मण जीवन है, तब तक निराकारी स्थिति और फरिश्ता स्थिति में स्थित होते भी सूक्ष्म में बाबा की याद रहती ही है, उसकी अनुभूति होती है परन्तु निराकारी दुनिया में साथ रहते भी साथ की अनुभूति की बात नहीं रहती है अर्थात् स्वभाविक साथ रहते हैं। सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूप में भी निराकार बाप के साथ स्वभाविक रहते हैं और उनके साथ विश्व कल्याण की सेवा करते हैं।

निराकारी और फरिश्ता स्वरूप की ड्रिल और ज्वालामुखी योग और अनुभव की अथॉरिटी के सम्बन्ध में विविध ईश्वरीय महावाक्य

बाबा ने हमको कितना और कितने समय से इस स्थिति के अभ्यास के लिए प्रेरणा दी है, श्रीमत दी है, आज्ञा दी है, वह भी हमारी बुद्धि में होगा तो हमको उसके महत्व का पता रहेगा और इस अभ्यास को दृढ़तापूर्वक करने के लिए उमंग-उत्साह आयेगा, जिससे हम उसमें सफल होंगे।

"अब बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय रहे कि तीव्र पुरुषार्थ करना है और बाप समान फरिश्ता बनना ही है। ... अभी बापदादा ने देखा कि समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है, इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी

बनना है और बनाना है, सम्पन्न बनना है और बनाना है - इस प्वाइन्ट के ऊपर बहुत ध्यान चाहिए।" अ.बापदादा 18.1.12

"आत्मा भी निराकार है, परमात्मा भी निराकार है, इसमें फोटो आदि की भी बात नहीं है। तुमको तो अपने को आत्मा निश्चय कर बाप को याद करना है, देहाभिमान छोड़ना है।... देही-अभिमानी बनो। इसमें ही मेहनत है। जितना याद में रहेंगे, उतना कर्मातीत अवस्था को पाये, ऊंच पद पायेंगे।" सा.बाबा 13.02.10 रिवा.

"सेकण्ड पूरा हुआ और निर्विकल्प स्थिति बन जाये, यह संस्कार इमर्ज करो। निर्विकल्प बनना आता है ना ? अपने श्रेष्ठ भाग्य को स्मृति में लाकर सदा हर्षित रहो। अपनी परमात्म पालना को सदा बार-बार स्मृति में लाओ।" अ.बापदादा 26.11.94

"सोचने की आदत है लेकिन स्मृति स्वरूप के संस्कार कभी इमर्ज और कभी मर्ज हो जाते हैं। स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप है। ... ओरिजनल आदत विस्मृति की नहीं है। आदि में स्मृति स्वरूप प्रालब्ध प्राप्त करने वाली देवात्मायें हो। योग लगाने का पुरुषार्थ नहीं करते लेकिन स्मृति स्वरूप की प्रालब्ध प्राप्त करते हो... और अन्त में संगम पर भी स्मृति स्वरूप बनते हो। अनादि, आदि और अन्त तीनों स्मृति स्वरूप हैं। अन्त में संगम पर भी स्मृति स्वरूप बनते हो। अनादि, आदि और अन्त तीनों स्मृति स्वरूप हैं। विस्मृति तो बीच में आई है।... सोचते हो कि हाँ, मैं आत्मा हूँ लेकिन स्मृति स्वरूप होकर चलना, बोलना, देखना उसमें अन्तर पड़ जाता है।" अ.बापदादा 26.11.94

"पहला विशेष परिवर्तन है स्वरूप का परिवर्तन अर्थात् मैं शरीर नहीं लेकिन आत्मा हूँ। यह आदि परिवर्तन है। इसमें चेक करो कि जब देहभान का फोर्स होता है तो आत्म-अभिमान के स्वरूप में टिक सकते हो या बह जाते हो ? अगर सेकण्ड में परिवर्तन शक्ति काम में आ जाये तो समय-संकल्प कितने बच जाते हैं। वेस्ट से बेस्ट में जमा हो जाते हैं।"

अ.बापदादा 26.11.94

"आज बापदादा सेकण्ड में फुलस्टॉप अर्थात् एकाग्र स्थिति के अभ्यास पर अटेन्शन खिंचवाना चाहता है क्योंकि प्रकृति ने अपने भिन्न-भिन्न रंग दिखाने शुरू कर दिये हैं। ... एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को परमधाम में टिका सकते हो, ... अभी अपने फरिश्ते रूप में टिकाओ ... अभी अपने को मैं ब्राह्मण मास्टर सर्वशक्तिवान स्थिति में हूँ ... उसमें टिक जाओ।"

अ.बापदादा 28.2.10

"तुमको मनुष्य से देवता बनना है। पहले सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ता बनेंगे। अभी तुम फरिश्ता बन रहे हो। सूक्ष्मवतन का राज़ भी बाप ने समझाया है। ... मूलवतन में है साइलेन्स।

सूक्ष्मवतन में फरिश्तों को घोस्ट के मुआफिक सूक्ष्म शरीर होता है।... तुम्हारी बुद्धि में चलते-फिरते यह ज्ञान रहना चाहिए।" सा.बाबा 2.03.10 रिवा.

"उनको घोस्ट कहा जाता है। उनको इन आँखों से भी देख सकते हैं। यह फिर हैं सूक्ष्मवतन वासी फरिश्ते। ये सब बातें बहुत समझने की हैं।

Q. क्या घोस्ट को इन आँखों से देखा जा सकता है? यदि देखा जा सकता है तो किस स्थिति में?)" सा.बाबा 2.03.10 रिवा.

साकार बाबा ने साकार तन से जो तीन महावाक्य निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी अन्तिम वरदान के रूप में उच्चारण किये, उसमें निराकारी शब्द पहले कहा है। इसलिए निराकारी और फरिश्ता स्वरूप के अभ्यास की सफलता के लिए पहले निराकारी स्वरूप का सफल अभ्यास चाहिए, तब ही फरिश्ता स्वरूप में स्थित होना सफल होगा। अव्यक्त बापदादा ने भी कहा है - निराकारी ही निर्विकारी और निरहंकारी बन सकता है।

"चाहे निराकार रूप से संग करो, चाहे साकार रूप में करो लेकिन सत का संग जरूर हो।... बापदादा के संग के सिवाए और कोई भी संग बुद्धि में न हो। फरिश्ता बनने के लिए बाप के साथ जो रिश्ता है, वह पक्का होना चाहिए। अगर अपना रिश्ता पक्का है तो फरिश्ता बन ही जायेंगे। ... अगर एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं।"

अ.बापदादा 4.07.71

"अभी सिर्फ अपने रिश्ते को ठीक करो। अगर एक के साथ सर्व रिश्ते हैं तो सहज और सदा फरिश्ते हैं। और है भी क्या जहाँ बुद्धि जाये। अभी कुछ रहा है क्या? सर्व सम्बन्ध वा सर्व रिश्ते, सर्व रास्ते ब्लॉक हैं? रास्ता खुला हुआ होगा तो बुद्धि भागेगी।... एक ही रास्ता, एक ही रिश्ता है तो फिर फरिश्ता बन ही जायेंगे।" अ.बापदादा 4.07.71

"यहाँ के संस्कार ही वहाँ ले जायेंगे। अगर अन्त तक भी मुश्किल के संस्कार होंगे तो वहाँ सहज राज्य कैसे करेंगे। ... जितना जो सहज पुरुषार्थी होगा, वह मन्सा में भी सरल, वाचा में भी सरल, कर्म में भी सरल होगा, इसको ही फरिश्ता कहते हैं।" अ.बापदादा 4.07.71

"जब कर्मातीत बन जायेंगे फिर यह स्थूलवतन भासेगा नहीं, सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा। सूक्ष्मवतन वासियों को कहा जाता फरिश्ते। वह बहुत थोड़ा समय बनते हो, जब तुम कर्मातीत अवस्था को पाते हो।" सा.बाबा 24.03.10 रिवा.

"सूक्ष्मवतन में सूक्ष्म शरीर होता है। ऐसे नहीं कि निराकार बन जाते हैं। नहीं, सूक्ष्म आकार रहता है। वहाँ की भाषा मूवी चलती है।... सूक्ष्म आवाज़ होता है- वह है मूवी, फिर है

साइलेन्स।... यह ड्रामा का बना-बनाया पार्ट है। वहाँ है साइलेन्स, सूक्ष्मवतन में है मूवी और यहाँ है टॉकी। इन तीन लोकों को यथार्थ रीति याद करने वाले कोई विरले होंगे।"

सा.बाबा 24.03.10 रिवा.

"फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट। लाइट अर्थात् हल्कापन।... अगर स्वभाव-संस्कार में भी हल्कापन नहीं तो फरिश्ता नहीं कहेंगे। ... जो स्वभाव-संस्कार, सम्बन्ध-सम्पर्क में हल्का होगा, उसकी निशानी है - वह सर्व के प्यारे और न्यारे होंगे।... फरिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं।" अ.बापदादा 23.12.94

"ब्रह्मा बाप फरिश्ता किस आधार से बना ? सदा करनकरावनहार की स्मृति से समर्थ बन फरिश्ते बनें। तो फॉलो फादर। ... माया है या बाप है - इसको समय पर परखना है। धोखा खाकर परखना कोई समझदारी नहीं हुई।... ज्ञानी तू आत्मा पहले से ही परखकर स्वयं को बचा लेता है।" अ.बापदादा 23.12.94

"फरिश्ते सदा उड़ते रहते हैं और मैसेज देते रहते हैं। फरिश्ता आया, सन्देश दिया और उड़ा। तो वे फरिश्ते कौन है ? आप ही हो ना! फलक से कहो - हम ही है और हम ही रहेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि विजयी आत्मा।" अ.बापदादा 23.12.94

"फरिश्तेपन की दो मुख्य क्वालीफिकेशन हैं। एक लाइट और दूसरी माइट। दोनों जरूरी हैं।... लाइट और माइट रूप बनने के लिए एक-एक अलग-अलग गुण बताओ। एक है मनन शक्ति और दूसरी है सहन शक्ति (Power to Tolarate)। जितनी सहनशक्ति होती है, उतनी सर्वशक्तिवान की सर्व शक्तियाँ स्वत: प्राप्त होती है।" अ.बापदादा 29.06.71

"अगर संकल्प, वाचा, कर्मणा तीनों अलौकिक होंगे तो फिर अपने को इस लोक के निवासी नहीं समझेंगे। अनुभव करेंगे कि इस पृथ्वी पर हमारे पाँव नहीं हैं अर्थात् बुद्धि का लगाव इस दुनिया में नहीं है। बुद्धि रूपी पाँव देह रूपी धरती से ऊंचा अनुभव होगा। यह खुशी की निशानी है। जितना-जितना देह के भान के तरफ से बुद्धि ऊपर होगी, उतना वह अपने को फरिश्ता महसूस करेगा।" अ.बापदादा 29.6.71

"जितना-जितना देह के भान के तरफ से बुद्धि ऊपर होगी, उतना वह अपने को फरिश्ता महसूस करेगा। हर कर्म करते बाप की याद में उड़ते रहेंगे, वह इस अभ्यास से अनुभव होगा। स्थिति ऐसी हो जैसे कि उड़ रहे हैं।" अ.बापदादा 29.6.71

"मूल बात है पावन बनने की। यह भी कहते हैं - मैं भी पतित हूँ, पावन होंगे तो फरिश्ता बन जायेंगे। तुम भी पवित्र होंगे तो फरिश्ता बन जायेंगे। ... यह कहना कि हम तो शिवबाबा के बच्चे हैं, याद में ही हैं। लेकिन बाबा कहते हैं - यह सब गपोड़े हैं, अलबेलापन है। इसमें तो

बहुत पुरुषार्थ करना है याद का।" सा.बाबा 4.5.10 रिवा.

"जब तक पूरी रीति आत्माभिमानी नहीं बनें हैं तब तक निर्विकारी भी नहीं बन सकते। निर्विकारीपन का निशाना और निराकारीपन का निशाना, जिसको फरिश्ता स्थिति या कर्मातीत स्थिति कहते हैं। लेकिन फरिश्ता भी तब बनेंगे, जब कोई भी इम्प्योरिटी अर्थात् पाँच तत्वों की आकर्षण आकर्षित नहीं करेगी।... अंशमात्र भी अपवित्रता न हो, तब फरिश्तेपन के निशाने में टिक सकेंगे।" अ.बापदादा 20.8.71

"निन्दा-स्तुति ... जय-पराजय में समान स्थिति रहे। बुद्धि में नॉलेज रहेगी कि यह हार है, यह जीत है, यह महिमा है, यह ग्लानि है लेकिन एकरस अवस्था वा स्थिति में डगमग न हो, इसको कहा जाता है समानता। ... यह है सच्ची विजय। इस कड़े बन्धन को क्रास कर लिया अर्थात् सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। इसके लिए मुख्य प्रयत्न कौनसा है?... इसके लिए सदैव यह बात याद रहे कि हम कल्याणकारी बाप की सन्तान हैं। अकल्याण की बात में भी कल्याण की बात को निकाल लेना।" अ.बापदादा 19.8.71

"ये सब इशारे से समझने वाले हैं। ... कहने से करने वाले तो मनुष्य होते हैं। आप लोग तो देवताओं से भी श्रेष्ठ हो। ब्राह्मण कहो वा फरिश्ते कहो। फरिश्ते इशारों से समझते हैं। फर्श निवासी कहने से समझते हैं।" अ.बापदादा 11.9.71

"आजकल जो पुरुषार्थ पुरुषार्थियों का चल रहा है, उसमें मुख्य कमजोरियाँ कौनसी दिखाई देती हैं? एक तो स्मृति में समर्थी नहीं रही है, दूसरा दृष्टि में दिव्यता वा अलौकिकता यथा शक्ति नम्बरवार आई है, तीसरा वृत्ति में विल पॉवर न होने के कारण वृत्ति एकरस न हो, चंचल होती है, चौथा निराकारी अवस्था का अटेन्शन कम होने के कारण मुख्य विकार देहाभिमान, काम और क्रोध इन तीनों का वार समय प्रतिसमय होता रहता है, पाँचवी संगठन में रहते वा सम्पर्क में आते वायुमण्डल, वायब्रेशन अपना इम्प्रेशन डालता है, छटी बात अव्यक्त फरिश्तेपन की स्थिति कम होने के कारण अच्छी वा बुरी बातों की फीलिंग आने से फेल हो जाते हैं और सातवीं बात याद की यात्रा से सन्तुष्ट कम।" अ.बापदादा 15.8.71

"बाप है ज्ञान का सागर, ज्ञान की अथॉरिटी है, तो जरूर आकर ज्ञान सुनाया होगा। ज्ञान से ही सद्गति होती है। ... यह बेहद का नाटक है, तुम सभी एक्टर्स हो। आत्मा एक्टर होकर भी ड्रामा के क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर को न जाने तो वह क्या काम की।"

सा.बाबा 25.05.10 रिवा.

"यह देहाभिमान का "मैं" न्यारा बनाने के बजाये, बाप का प्यारा बनाने के बजाये कोई न कोई आत्मा का वा कोई वस्तु का प्यारा बना देता है। चाहे मान का प्यारा, चाहे नाम का प्यारा, चाहे

शान का प्यारा, चाहे कोई विशेष आत्माओं का प्यारा बना देता है। ... इस धागे को तोड़ने के लिए निराकारी स्थिति में स्थित होकर निरहंकारी बनो तो निर्विकारी ऑटोमेटिकली हो ही जायेंगे।" अ.बापदादा 15.9.71

"निराकारी स्थिति में स्थित होकर निरहंकारी बनो तो निर्विकारी ऑटोमेटिकली हो ही जायेंगे। निरहंकारी बनते जरूर हो लेकिन निराकार होकर निरहंकारी नहीं बनते हो। युक्तियों से अपने को अल्प काल के लिए निरहंकारी बनाते हो लेकिन निरन्तर निराकारी स्थिति में स्थित होकर साकार में आकर यह कार्य कर रहा हूँ - यह स्मृति वा अभ्यास नेचुरल वा नेचर न बनने के कारण निरन्तर निरहंकारी स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हैं।" अ.बापदादा 15.9.71

"मैं निराकार से साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ - कर्म करते बीच-बीच में इस स्थिति का अभ्यास करते रहो तो निराकार हो साकार में आने से निरहंकारी और निर्विकारी जरूर बन जायेंगे। ... यह अभ्यास सदा काल के लिए हो। यूँ वैरागी भी बने हो, वैराग्य वृत्ति है लेकिन सदा के लिए और बेहद के वैरागी बनो, वह स्थिति चाहिए।"

अ.बापदादा 15.9.71

ये विधि-विधान है कि जब तक बाहर से अन्दर आ रहा है, तब तक अन्दर का बाहर जा नहीं सकता। कनरस (गीत आदि) अथवा अन्य इन्द्रियों के रसों का आत्मा सुख अनुभव कर रही है या उसकी इच्छा है, तब तक अन्तर्मुख होकर ईश्वरीय प्राप्तियों का रस आत्मा अनुभव नहीं कर सकती और जब स्वयं अनुभव नहीं कर रही है तो अन्य आत्माओं को कैसे करा सकती है अर्थात् अन्य आत्माओं की सेवा कैसे कर सकती है, अन्य आत्माओं को दुआयें कैसे दे सकती है, फरिश्ता स्वरूप का अनुभव कैसे कर सकती है और कैसे करा सकती है। यह विचारणीय है।

"जितनी वाणी सुनने और सुनाने की जिज्ञासा रहती है, तड़प रहती है, चान्स बनाते भी हो, क्या ऐसे ही वाणी से परे स्थिति में स्थित होने का चान्स बनाने और लेने के जिज्ञासु हो ? यह लगन स्वत: स्वयं में उत्पन्न होती है ? ... ऐसी आत्मा को, इस अनुभूति की स्थिति में मगन रहने के कारण कोई भी विभूति व कोई भी हद की प्राप्ति की आकर्षण उन्हें संकल्प तक भी छू नहीं सकती। अगर कोई विभूति या कोई हद की प्राप्ति संकल्प में भी छू लेती है तो छोटे-मोटे पाप बनते जाते हैं और ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊंच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं क्योंकि पाप अर्थात् बोझ, वह फरिश्ता बनने नहीं देते, बीजरूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते।" अ.बापदादा 23.5.74

"यहाँ बैठे भी बेहद में आप लोगों का सूक्ष्म स्वरूप सर्विस करेगा। अब यही सर्विस रही हुई

है। साकार में सभी एग्जॉम्पुल तो देख लिया, अभी सभी बातें नम्बरवार ड्रामा अनुसार होनी हैं। जितना-जितना स्वयं आकारी फरिश्ते स्वरूप में होंगे, उतना आपका फरिश्ता स्वरूप सर्विस करेगा। ... लेकिन उनके द्वारा जो स्वयं फरिश्ते स्वरूप में स्थित होंगे। अन्त समय जब हंगामा होगा तो साकार शरीर द्वारा तो कुछ कर नहीं सकेंगे, तो प्रभाव इस सर्विस से पड़ेगा। ... तो अभी ऐसे न्यारेपन की प्रैक्टिस बीच-बीच में करनी है। आदत पड़ जाने से फिर बहुत आनन्द फील होगा।... इसलिए अभी इस फरिश्तेपन का बहुत पुरुषार्थ करना है।"

अ.बापदादा 21.1.72

"प्रजापिता ब्रह्मा भी तो यहाँ ही है। ये ही पतित से पावन फरिश्ता बनते हैं, इसलिए फिर ब्रह्मा देवता कहा जाता है। इनसे ही देवी-देवता धर्म स्थापन होता है, यह बाबा फिर देवी-देवता धर्म का पहला प्रिन्स बनता है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश और विष्णु द्वारा पालना गाई हुई है, इसलिए समझाने के लिए ये चित्र देने पड़े ना।" सा.बाबा 12.08.10 रिवा.

"जैसे बाप जो है, जैसा है, वैसा ही उनको जानने वाला ही सर्व प्राप्तियाँ कर सकता है। वैसे ही स्वयं को भी जो हूँ, जैसा हूँ, ऐसा ही जानकर और मानकर सारा दिन चलते-फिरते हो ?... स्वयं को जो हूँ, जैसा हूँ ऐसे मानकर चलेंगे तो क्या स्थिति होगी ? देह में रहते विदेही, व्यक्त होते अव्यक्त, चलते-फिरते फरिश्ता वा कर्म करते हुए कर्मातीत स्थिति होगी।"

अ.बापदादा 3.02.72

"जिन्होंने साकार में बाप की प्राप्ति का अनुभव ही नहीं किया, उन्होंको भी बाप के परिचय से कि हम बाबा के बच्चे हैं (हमारे नैन-चैन से ईश्वरीय नशा अनुभव होगा) तब मानेंगे कि बरोबर बाप आये लेकिन हम लोगों ने कुछ नहीं पाया। तो यह प्रैक्टिकल रुहानी झलक और फरिश्तेपन की फलक चेहरे और चलन से दिखाई दे। ... आपको देखकर अनुभव करेंगे कि बाप ने इनको क्या बनाया और फिर पश्चाताप करेंगे।" अ.बापदादा 5.02.72

"ब्रह्मा के मन्दिर बनाकर पूजते हैं, परन्तु यह शरीरधारी ब्रह्मा पूजा के लायक नहीं है। यही जब सम्पूर्ण बन सूक्ष्मवतनवासी अव्यक्त मूर्त फरिश्ता बनते हैं, तब पूजा लायक बनते हैं। ... ब्रह्मा को दाढ़ी दिखाते हैं, जिससे पता चले कि यह यहाँ का है। देवताओं को दाढ़ी होती नहीं है।" सा.बाबा 20.08.10 रिवा.

"जब ब्राह्मण परिवार में कोई परिस्थिति आती है तो लौकिक सम्बन्धी याद आते हैं।... जब मरजीवा बन गये तो अगले जन्म के सम्बन्धी काका, माँ-बाप... याद हैं ? याद आते हैं ?... जब सम्बन्ध और जन्म बदल गया तो वे क्यों याद आने चाहिए। फरिश्ता अर्थात् पुराने से रिश्ता नहीं।" अ.बापदादा .... पार्टी

अभी ऐसा समय आने वाला है, जो वाणी से सेवा करने का चान्स नहीं मिलेगा। उस समय आप अपने चलन और चेहरे से और मन्सा द्वारा सेवा कर सकेंगे।... मन्सा अगर ठीक है तो वाणी और कर्म ऑटोमेटिक ठीक हो जायेंगे।... एक तो सारे दिन में ब्राह्मण जीवन का नशा रहे, दूसरा चलते-फिरते अशरीरी होकर अपने सम्पूर्ण फरिश्ते रूप में रहना और तीसरा देवता रूप का अनुभव करना। अ.बापदादा का सन्देश 26.09.10 गुल्जार दादी जी

"बाप कहते हैं - मैं इनके बहुत बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में आता हूँ, इनमें प्रवेश कर इनको भी पावन बनाता हूँ, जो फिर यह फरिश्ता बन जाते हैं।... यह बैज अनेकों को जीयदान देने वाला है। इससे तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। इनकी वैल्यु का किसको पता नहीं है। बाबा को हमेशा बड़ी चीज़ पसन्द आती है, जो कोई भी दूर से देख सके और पढ़ सके।"

सा.बाबा 23.11.10 रिवा.

"अभी ब्रह्मा बाप बच्चों को आप समान फरिश्ता स्थिति में रहने के लिए इशारे दे रहे हैं। ... बच्चों का अटेन्शन है कि सदा जैसे ब्रह्मा बाप जीवन में रहते जीवनमुक्त थे, ... इतनी सेवा की जिम्मेवारी सम्भलना, सेवा में बच्चों को आगे बढ़ाना, सब कुछ जिम्मेवारी होते भी जीवनमुक्त के मज़े में रहा। ... जीवनमुक्त बन अभी जीवनमुक्त का मजा लिया और आप सभी बच्चों को भी ऐसा ही बनाया। अभी भी आप बच्चों को फरिश्ता बनने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ बताये आप समान बनाना चाहते हैं।" अ.बापदादा 18.1.11

"बाप सबको पावन बनाकर मुक्तिधाम ले जाते हैं। फिर आत्मा पावन से पतित कोई फट से नहीं बनती है। पार्ट बजाते नम्बरवार उतरते सतो, रजो, तमो में आते हैं।... अभी तुम ज्ञान से इस चक्र को जान गये हो, कि यह चक्र कैसे फिरता है। अभी तुम बच्चों को और सबको भी रास्ता बताना है। तुम पायलट हो, सबको रास्ता बताने वाले। तुम ज्ञान को पाकर जैसे कि लाइट-हाउस हो गये हो।" सा.बाबा 19.01.11 रिवा.

"महिमा एक शिवबाबा की ही है। उस एक को ही याद करना है। इन लक्ष्मी-नारायण को भी ऐसा बनाने वाला शिवबाबा है। ... ऊंच ते ऊंच लक्ष्मी-नारायण ही फिर 84 जन्म लेते नीचे उतरते हैं, तत् त्वम्। ... बाबा कितना अच्छी रीति समझाते हैं। इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में चलते-फिरते रहना चाहिए। तुम हो चैतन्य लाइट-हाउस। सबको रास्ता बताने वाले।" सा.बाबा 26.01.11 रिवा.

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट माना नर्क से स्वर्ग, फिर स्वर्ग से नर्क का यह चक्र फिरता ही रहता है। बाबा ने कहा है - चलते-फिरते, उठते-बैठते स्वदर्शन चक्रधारी होकर रहो। इसी याद में रहो कि हमने कितनी बारी यह चक्र लगाया है, अभी फिर से हम देवता बनते हैं।

दुनिया में कोई भी इस राज़ को नहीं जानते हैं।" सा.बाबा 27.01.11 रिवा.

"वह है अव्यक्त ब्रह्मा और यह है व्यक्त। यह व्यक्त ही सम्पूर्ण बन अव्यक्त फरिश्ता बनते हैं। फरिश्तों को हड्डी-माँस नहीं होता है। यहाँ इस रुहानी सर्विस में हड्डी-माँस सब खलास कर देते हैं, फिर फरिश्ते बन जाते हैं।... तुमको भी स्थूलवतनवासी से सूक्ष्मवतनवासी बनना है। इस सर्विस में सब हड्डी-माँस स्वाहा करना है। याद में रहते-रहते फरिश्ते बन जायेंगे।"

सा.बाबा 29.01.11 रिवा.

"मिरुआ मौत मलूक का शिकार" का भी गायन है। मलूक फरिश्तों को कहा जाता है। तुम मनुष्य से फरिश्ते बनते हो। तुमको अभी देवता नहीं कह सकते हैं।... योग में रह फरिश्ते बनेंगे, फिर फरिश्ते से देवता बनेंगे। अन्त में तुमको सब साक्षात्कार होगा और तुम्हारे में जो अडोल होंगे, वे बहुत खुशी में रहेंगे। विनाश तो होना ही है। ... तुमको स्थापना और विनाश का सब साक्षात्कार हुआ है।" सा.बाबा 29.01.11 रिवा.

"लाइट, माइट, डिवाइन इन्साइट अर्थात् तीसरा नेत्र। अगर ये तीनों चीज़ें हैं तो तीव्र पुरुषार्थी बन बाप के समान सहज बन सकते हो। ... सदा लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन चलने वाले, सर्व आत्मओं को डिवाइन इन्साइट देने वाले बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।"

अ.बापदादा 24.6.72

"लाइट-माइट के साथ डिवाइन इन्साइट अर्थात् तीसरे नेत्र से अपने पास्ट, प्रैजेन्ट और फ्युचर तीनों कालों को जान सकते हो। जब यह तीनों ही चीज़ें प्राप्त होती हैं, तब ही अपना बर्थ-राइट प्राप्त कर सकते हो अर्थात् वर्सा प्राप्त कर सकते हो।... अपने बर्थ-राइट को पा सकते हो और राइट को जान सकते हो। राइट शब्द के दो अर्थ होते हैं।" अ.बापदादा 24.6.72

"बापदादा देख रहे हैं बच्चे बहुत स्नेह से मधुबन में पहुँच गये हैं।... सिर्फ मधुबन तक पहुँचना है वा स्नेह का सबूत दिखाने के लिए फरिश्ता रूप में वतन में पहुँचना है।... सभी चलते-फिरते आप सभी को फरिश्ता देखें। बोल-चाल, रहन-सहन सब में फरिश्ता बन जाओ। फरिश्ते का अर्थ ही है डबल लाइट। तो लाइट बनना आता है या बोझ खींचता है?"

अ.बापदादा 26.1.95

"यह पतित ब्रह्मा है, वही जब पावन बनते हैं तो फरिश्ता बन जाते हैं, जिनका सूक्ष्मवतन में साक्षात्कार होता है। ... आत्मा जब शरीर छोड़ती है, तो जब तक उसको शरीर मिले, तब तक भटकती है। उसको भूत कहते हैं। उनमें कोई अच्छी होती है, कोई बुरी होती है। बाप ज्ञान का सागर है, वह हर एक बात की समझानी देते हैं।" सा.बाबा 8.03.11 रिवा.

बापदादा तो बहुत समय से बच्चों को इशारा दे रहे हैं कि आगे चलकर समय में

अचानक कुछ न कुछ पेपर आने हैं और आप पूर्वज आत्माओं को अपने भक्तों और दुखी आत्माओं को मन्सा द्वारा सेवा का पार्ट बजाना है, वह प्रैक्टिकल में एक दृश्य देख रहे हो। अब हर एक बच्चे को विश्व कल्याणकारी आत्मा बन चलते-फिरते फरिश्तेपन की ड्रेस पहन दुखी आत्माओं की सेवा में बिज़ी रहना है। अव्यक्त सन्देश 13.3.11

शक्तिशाली स्थिति की स्टेज से अशरीरी भव का मन को आर्डर दो और सेकण्ड में अशरीरी बन मन्सा सेवा में बिज़ी हो जाओ। यह तो एक दृश्य ड्रामा में देख रहे हो, लेकिन आने वाले समय में यह बढ़ते रहेंगे। ... अचानक के समय बिन्दु बनना है, बिन्दु रूप में सबको देखना है और व्यर्थ समय-संकल्प को बिन्दु लगाना है। इस स्थिति का अभ्यास अब बढ़ाना है और इसका वायुमण्डल फैलाना है। अव्यक्त सन्देश 13.3.11

"अभी तुम मास्टर बीजरूप बनते हो। बाप की याद के साथ स्वदर्शन चक्र भी फिरता रहता है। तुम भारतवासी लाइट-हाउस हो। स्प्रीचुअल लाइट-हाउस बनकर सबको घर का रास्ता बताते हो। तुमको सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताना है।"

सा.बाबा 14.04.11 रिवा.

"विनाश मुक्ति का गेट है और स्थापना जीवनमुक्ति का गेट है। तो दोनों आँखों से यह दिखाई दे अर्थात् एक आँख में मुक्ति और दूसरी में जीवनमुक्ति। आपके नयन और मस्तक बोले कि यह पुरानी दुनिया जाने वाली है। मस्तक भी बहुत बोलता है। कोई का भाग्य मस्तक दिखाता है। ... तो अब विश्व के आगे एक सेम्पुल बनना है।"

अ.बापदादा 28.07.72 पंजाब पार्टी

"मधुबन निवासी लाइट-हाउस हैं। लाइट-हाउस ऊंचा होता है और रास्ता बताने वाला होता है। मधुबन के डॉयरेक्शन प्रमाण सभी चल रहे हैं, तो लाइट-हाउस हुआ ना! और ऊंच स्टेज भी हुई। ... तो नाम और काम भी ऊंचा होगा ना। नाम ही है मधुबन। मधुबन निवासियों की यह विशेषता है ना - मधुरमूर्त और बेहद के वैराग्यमूर्त।" अ.बापदादा 19.9.72

"जब तक पुरुषार्थ की परसेन्टेज नहीं बढ़ाई है, तब तक प्रभाव फैल नहीं सकता है। ... लाइट तो सभी बल्ब में होती है लेकिन जितनी जिसमें लाइट की परसेन्टेज होगी, उतनी ही उसकी लाइट फैलेगी। ... एक है लाइट, दूसरी है सर्च-लाइट और तीसरा है लाइट-हाउस। लाइट की भिन्न-भिन्न स्टेजज हैं। लाइट तो बने हो लेकिन लाइट-हाउस होकर चारो ओर के अन्धकार को दूर कर लाइट फैलाओ।" अ.बापदादा 9.11.72

"जो पतित से पावन बनते हैं, वे ही पावन दुनिया में जाते हैं, बाकी सब निर्वाणधाम में चले जायेंगे। अभी सबकी क़यामत का समय है, सबका विनाश होना है।... गीता ज्ञान दाता, ज्ञान

का सागर निराकार भगवान है, वह कभी पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। वे अलौकिक दिव्य जन्म लेते हैं। ... यह व्यक्त ब्रह्मा ही पावन बन अव्यक्त फरिश्ता बन जाते हैं। बाप ब्रह्मा द्वारा ही रचना रचते हैं।" सा.बाबा 31.05.11 रिवा.

"जैसे आइने में अपना रूप स्पष्ट दिखाई देता है, वैसे ही इस नॉलेज के दर्पण में अपना अन्तिम स्वरूप (सम्पूर्ण स्वरूप) स्पष्ट दिखाई दे।... वह लाइट का स्वरूप कहो वा चोला कहो, लाइट ही लाइट दिखाई पड़ेगी। फरिश्तों का स्वरूप क्या होता है - लाइट। देखने वाले भी ऐसे अनुभव करेंगे कि ये लाइट के वस्त्रधारी हैं। लाइट ही इन्होंका ताज है।"

अ.बापदादा 22.11.72

"शक्तिरूप का जो पार्ट चलता है, वह प्रसिद्ध किससे होगा ? लाइट रूप के सामने कोई भी आयेगा तो वह सेकेण्ड में अशरीरी हो जायेगा।... ऐसा चलता-फिरता लाइट हाउस हो जायेंगे, जो किसी को भी यह शरीर दिखाई नहीं पड़ेगा। विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिए लाइट-हाउस होना पड़े।"

अ.बापदादा 22.11.72

"चलते-फिरते अपना फरिश्ता स्वरूप अनुभव होना चाहिए। शरीर बिल्कुल भूल जाये, यह प्रैक्टिस करनी है। ... कोई कार्य करना है तो वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण करना है। ... एक सेकण्ड में धारण करेंगे, एक सेकण्ड में न्यारे हो जायेंगे। जब यह प्रैक्टिस पक्की हो जायेगी, फिर यह कर्मभोग भी कर्मयोग का रूप हो जायेगा। कर्मयोग से ही कर्मभोग समाप्त होगा।" अ.बापदादा 22.11.72

"हठयोगी भी शरीर से न्यारा होने का अभ्यास कराते हैं। ऐसे ही यह स्मृति स्वरूप का इन्जेक्शन लगाकर, देह की स्मृति से गायब हो जायें। स्वयं भी अपने को लाइट रूप अनुभव करो, तो दूसरे भी वही अनुभव करेंगे। अन्तिम सर्विस का स्वरूप और अन्तिम स्वरूप यही है। ... ऐसा लाइट रूप बनने से कोई भी कार्य हल्का हो जायेगा, बुद्धि लगाने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी।" अ.बापदादा 22.11.72

"इस लाइट स्वरूप की स्थिति में मास्टर जानीजाननहार वा मास्टर त्रिकालदर्शी के लक्षण भी आ जाते हैं। करें या न करें, यह संकल्प भी नहीं उठेगा। बुद्धि में वही संकल्प होगा, जो यथार्थ में करना है। उस अवस्था के बीच कोई कर्मभोग की भासना नहीं रहेगी। ... जैसे इन्जेक्शन लगाने से कर्मभोग की भासना नहीं रहती है, कर्म करते भी कर्म कर रहे हैं, यह स्मृति नहीं रहती है। वह अपनी तरफ आकर्षित नहीं करता।" अ.बापदादा 22.11.72

"यह है पतित, वह है पावन फरिश्ता। यह भेंट दिखलाते हैं पतित और पावन की। तुमको भी

पतित से ऐसा पावन फरिश्ता बनना है। सतयुग में हैं देवतायें, अभी संगम पर हैं सूक्ष्मवतनवासी फरिश्ते। अभी तुम फरिश्ते बनते हो। ... यहाँ जब आते हो तो कोई भी बाहर वाले मित्र-सम्बन्धी, घरघाट, धन्धाधोरी आदि याद नहीं आना चाहिए। यहाँ तुम बाप के पास आये हो, तो योग से अपनी कमाई में लग जाना चाहिए।" सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

"बाप सबको पावन बनाकर वापस घर ले जाते हैं, फिर सब नम्बरवार पार्ट बजाने आते रहते हैं। पार्ट बजाते-बजाते पतित बनते हैं परन्तु कोई फट से पतित नहीं बन जाते हैं। धीरे-धीरे कलायें उतरती जाती हैं, सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो, फिर तमोप्रधान बनते हैं। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में बैठा है कि यह 84 का चक्र कैसे फिरता है। तुम हो लाइट-हाउस, सबको रास्ता बताने वाले।" सा.बाबा 12.08.11 रिवा.

"तुम जानते हो - आज दुनिया में क्या है और कल क्या होगा। विनाश भी सामने खड़ा है। दुनिया में और किसी मनुष्य की बुद्धि में ये सब बातें नहीं होंगी।... विनाश की तैयारी हो रहीं है। अचानक ही होना है।" सा.बाबा 13.08.11 रिवा.

"बापदादा के पसन्द नहीं लेकिन आराम पसन्द बन जाते, इसलिए जानते हुए भी ऐसी स्थिति बन जाती, जो मेहनत करनी होती है। बाप समान श्रेष्ठ कर्म करने में आराम पसन्दी वाले श्रेष्ठ स्थिति को नहीं पा सकते हैं, इसलिए हर संकल्प और हर कर्म की करेक्शन करो और बापदादा के कर्मों से कनेक्शन जोड़ो, फिर देखो कि बाप-समान हैं?"

अ.बापदादा 16.5.73

"इसलिए दिल को दिया तो दिया। ऐसे दिल देने वाले सदा मस्तक मणि, मणि के समान लाइट-हाउस, माइट-हाउस होते हैं। यहाँ सिर्फ लाइट-हाउस नहीं बनना है, लेकिन लाइट-हाउस के साथ-साथ माइट-हाउस भी बनना है।... जैसे मस्तक स्मृति का स्थान है, वैसे ही मस्तक मणि की निशानी है सदा स्मृति-स्वरूप।" अ.बापदादा 6.06.73

"ऐसे मस्तक मणियों के ऊपर विश्व की सर्वात्माओं की नज़र अर्थात् आकर्षण स्वत: ही होती है। तो ऐसे मस्तक-मणि हो? मणि को अन्धियारे में भी रख दो तो क्या दिखाई देगा। लाइट देने का ही कार्य करेगी। तो इस विश्व की अन्धियारी रात में चारो ओर अन्धकर के बीच ऐसी मस्तक-मणियाँ क्या कर्तव्य करेंगी? मार्ग दिखाने का, मंजिल पर पहुँचाने का ही कर्तव्य करेंगी।" अ.बापदादा 6.06.73

"याद में भी बैठते हो तो संकल्प के आधार से ही स्थिति बनाते हो। संकल्प करते हो मैं बिन्दु हूँ, मैं फरिश्ता हूँ... ज्ञान का आधार भी संकल्प ही है।... धारणा का आधार भी संकल्प है... सेवा का आधार भी संकल्प ही है।... संकल्प का खज़ाना ब्राह्मण जीवन का विशेष खज़ाना है।

अगर आप संकल्प के खज़ाने को सफल करते हो आपकी स्थिति और कर्म सारा दिन बहुत अच्छा रहता है।" अ.बापदादा 25.3.95

"आपने स्थापना का कार्य ऐसे कर लिया है, जिससे विनाशकारियों को इशारा मिले तो वे अपना कार्य आरम्भ कर सकें? ... ऐसे पाण्डव सेना एक सेकण्ड के डायरेक्शन प्रमाण लाइट-हाउस व माइट-हाउस बन सर्व आत्माओं को लाइट-माइट का वरदान दे सकती है? ... एक सेकण्ड न सिर्फ भारत लेकिन सारे विश्व की आत्माओं को नज़र से निहाल कर सकते हो?" अ.बापदादा 15.7.73

"जो स्वयं इच्छामात्रम् अविद्या की स्थिति में स्थित होगा, वही किसी की भी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। अगर स्वयं में ही कोई इच्छा रही होगी, तो वह दूसरे की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर सकते। इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज तब रह सकती है, जब स्वयं युक्ति-युक्त सम्पन्न, नॉलेजफुल और सदा सक्सेसफुल अर्थात् सफलतामूर्त होंगे।" अ.बापदादा 21.7.73

"जो सम्पन्न नहीं है, उसकी इच्छायें जरूर होंगी क्योंकि सम्पन्न होने के बाद ही इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज आती है।...ऐसी स्टेज को ही कर्मातीत अथवा फरिश्तेपन की स्टेज कहा जाता है। ऐसी स्थिति वाला ही हर आत्मा को यथार्थ परख सकता है और दूसरों को यथार्थ प्राप्ति करा सकता है। ऐसी स्टेज ऐसी समीप है, जो विनाश की ताली व सीटी बजे और आप अपनी स्टेज पर स्थित हो जाओ।" अ.बापदादा 21.7.73

"जो लाइट-हाउस बनें होंगे, वे ही दूसरों को भी रास्ता बताते रहेंगे। उनका काम ही है सबको रास्ता बताना। ... तुमको कदम-कदम पर बाप से राय लेते रहना है। बाप से पूरा वर्सा लेने की तुमको तमन्ना रखनी चाहिए। ... पाप-कर्म करेंगे तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाना चाहिए।" सा.बाबा 3.11.11 रिवा.

"जब मन्सा शक्ति जमा होगी तो चलते-फिरते लाइट हाउस, माइट-हाउस अनुभव होंगे। ... आप सब चमकते हुए डॉयमण्डस लाइट-हाउस, माइट-हाउस हो जायेंगे तो विश्व में अन्धकार रहेगा क्या?... जो स्वयं करके फिर कहता है, उसका प्रभाव अलग होता है।... जो रियल डॉयमण्ड होता है, उसकी निशानी है कि उसकी चमक जरूर फैलती है। तो आप रियल डॉयमण्ड्स की चमक आपके वायब्रेशन द्वारा फैले। जैसे देखो मधुबन में बाप के कमरे में जाते हो तो विशेष अनुभव होता है ना। चाहे जाने, न जाने, निश्चय हो या नहीं हो लेकिन साइलेन्स के वायब्रेशन तो लगते हैं ना।" अ.बापदादा 25.3.95

"सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा दिखाते हैं, वह तो पावन है। सूक्ष्मवतन में प्रजापिता तो हो नहीं सकता। बाप समझाते हैं - यह व्यक्त ब्रह्मा, जो झाड़ के पिछाड़ी में खड़ा है, यहाँ बच्चों के साथ योग

में बैठे हैं, यही पवित्र बन फरिश्ता बनते हैं। तो सूक्ष्मवतन में दिखाना पड़े। ... तुम भी फरिश्ता बनने आये हो। इसमें ही मनुष्य मूँझते हैं क्योंकि यह बिल्कुल नया ज्ञान है, जो कोई शास्त्र में नहीं है।" सा.बाबा 16.11.11 रिवा.

"वह रूप कौनसा है, जिससे सहज ही विश्व की सेवा कर सको ? वह है डबल लाइट और माइट हाउस का। डबल क्यों कहा ? क्योंकि आपको दो कार्य करने हैं। किसी को मुक्ति का रास्ता बताना है और किसी को जीवनमुक्ति का रास्ता बताना है।... एक स्थान पर होते हुए भी चारो ओर अपनी लाइट और माइट के आधार से भटकी हुई आत्माओं को ठिकाना दे देवें।"

अ.बापदादा 23.9.73

"सिर्फ लाइट से भी काम नहीं चलेगा और सिर्फ माइट से भी काम नहीं होगा, जब दोनों का बैलेन्स ठीक होगा, तब ... सब अन्धों को अपनी लाइट और माइट के द्वारा डिवाइन इन्साइट अर्थात् तीसरे नेत्र का वरदान दो। जैसे नेत्र दान सबसे श्रेष्ठ दान कहा जाता है।... अगर वे मुक्ति-जीवनमुक्ति के ठिकाने को देखेंगे नहीं तो पहुँचेंगे कैसे ?" अ.बापदादा 23.9.73

"ऐसे ही बापदादा आर्डर करे कि अभी एक सेकण्ड में वापस घर जाने की तैयारी करो तो कर सकते हो ? ... ऐसी प्रैक्टिस करो कि एक सेकण्ड में आत्मा शरीर से परे होने के लिए एवर-रेडी बन जाये क्योंकि वायदा है कि साथ चलेंगे। ... गोल्डन, सिलवर, कॉपर रस्सियाँ तो नहीं हैं, जो आप उड़ने की कोशिश करो और रस्सी आपको नीचे ले आये ? तो चेक करो और अभ्यास करो कि सेकण्ड में अशरीरी बन सकते हैं।" अ.बापदादा 31.3.95

"बापदादा की हर बच्चे प्रति यह शुभ भावना है कि जो भी आपके चेहरे में देखे, तो आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे।... फरिश्ता अनुभव में आये। इसके लिए चाहिए ज्वालामुखी योग, कोई व्यर्थ नहीं रहे। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ और समर्थ फरिश्ता नजर आओ।... लक्ष्य रखो - मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ।"

अ.बापदादा 31.12.11

"अपनी दिनचर्या में यह याद रखना कि मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। चलते-फिरते फरिश्ता स्वरूप।... ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना, तो फॉलो फादर। इस वर्ष का जो वरदान दिया - तीव्र पुरुषार्थी, साधारण पुरुषार्थ नहीं।... बाप यही चाहता है कि जितने भी गॉडली स्टूडेण्ट बापदादा की मुरली अध्ययन करने वाले हैं, वे सब फरिश्ता बनें। फरिश्ता बनने से कोई भी संस्कार का बोझ समाप्त हो जायेगा।" अ.बापदादा 31.12.11

"इस वर्ष का होम वर्क रहा - फरिश्ता स्वरूप में रहना है। ... अगर किसके जीवन में कोई बात आई, तो उसके सहयोगी बनकर, स्नेह से उसको हिम्मत देकर अपने सेन्टर को और

स्टूडेण्ट्स को तीव्र पुरुषार्थी बनाना क्योंकि समय हलचल का होना ही है। ... तो चारो ओर के बच्चों को बापदादा विशेष वरदान दे रहे हैं कि सदा सन्तुष्टमणि भव। सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है।" अ.बापदादा 31.12.11

"एक-एक बच्चा बाप समान दिखाई दे, फॉलो ब्रह्मा बाप। सरकमस्टाँसेस, बातें सब कुछ ब्रह्मा बाप के आगे आई लेकिन फरिश्ता बन गये। तो फरिश्ता बनना ही है, यह दृढ़ संकल्प हर एक अपने आपसे करे क्योंकि अपने आपसे करेंगे तो अटेन्शन रहेगा। मुझे बनना है बस, और आपके बनने से नेचुरल वायब्रेशन फैलेगा। फरिश्ता बनना ही है। बोलो - पक्का है ना। ... बापदादा का सभी को बहुत-बहुत दिल का प्यार और मुबारक हो।"

अ.बापदादा 31.12.11

"मैं फरिश्ता हूँ, मैं फरिश्ता हूँ, मैं फरिश्ता हूँ, यही चेहरा और चलन बाप के सामने, विश्व के सामने दिखाना है। ... अमृतवेले योग करने के बाद फिर से याद करना - मैं फरिश्ता हूँ और फरिश्ता रूप से बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनूँगा ही। पक्का। तो सभी को पदम पदमगुणा मुबारक हो, मुबारक हो।" अ.बापदादा 11-12.11

"अब बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय रहे कि तीव्र पुरुषार्थ करना है और बाप समान फरिश्ता बनना ही है।... अभी बापदादा ने देखा कि समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है, इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना है और बनाना है, सम्पन्न बनना है और बनाना है - इस प्वाइन्ट के ऊपर बहुत ध्यान चाहिए।" अ.बापदादा 18.1.12

"ब्राह्मण स्वरूप अर्थात् सदा ताज, तख्त और तिलकधारी। विश्व-कल्याण की जिम्मेवारी का ताज, स्व-स्मृति का तिलक और बाप के दिल तख्तनशीन।... ब्राह्मण सो फरिश्ता। फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट, फरिश्ता का यथार्थ स्वरूप है देहभान, देह के सम्बन्ध और देहाभिमान से न्यारा। ... तीसरा फरिश्ता सो देवता। देवता अर्थात् सर्व गुणों से सजे-सजाये। ये दिव्य गुण ही संगम के देवता जीवन के श्रृंगार हैं।" अ.बापदादा 23.12.94

यह अटल सत्य है कि जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियाँ, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है; सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है; ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है; राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभा-शुभ की आशंका, व्यर्थ चिन्तन का नाम-निशान नहीं होता है; मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, सुख-दुख, प्राप्ति-अप्राप्ति, हार-जीत, यश-अपयश, अपने-पराये में समान दृष्टि और स्थिति होती है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

विश्व एक नाटक है, जिसमें सभी आत्मायें पार्टधारी हैं, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया है। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। पार्ट अनुसार जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न हमारा कोई कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं। इस विश्व-नाटक में जो कुछ मिला है, वह केवल पार्ट बजाने के लिए मिला है, उसको अपना समझ लेना भ्रान्ति है।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो; बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और विश्व-नाटक की यथार्थता को जान साक्षी होकर विश्व-नाटक को देखते, ट्रस्टी होकर पार्ट

बजाते हुए ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण कर परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

जब इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास द्वारा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

“जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।”

अ.बापदादा 14.11.87

“ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर आत्मा कहाँ तक निश्चयबुद्धि और कहाँ तक विजयी बनें हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।”

अ.बापदादा 15.4.92

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

सतयुग में आत्मा सतोप्रधान स्थिति में सतोप्रधान प्रकृति के सतोप्रधान सुख भोगती है, उससे भी आत्मिक शक्ति और आत्मा का संगम पर जमा किया हुआ पुण्य का खाता घटता है, फिर द्वापर से जब आत्मा देहाभिमान के वश रजो-तमो स्थिति में आती है तो रजो-तमो प्रकृति का रजो-तमो सुख भोगती है और विषय-सुख में प्रवृत्त होती है तो आत्मिक शक्ति और जमा का खाता तीव्रता से घटता है। फिर जब आत्मा विकारों के वशीभूत प्रकृति के साधन-सम्पत्ति का दुरुपयोग करता है या अनावश्यक और अनाधिकृत रूप से उपभोग करता है, विकारों के वशीभूत आत्माओं से साथ दुर्व्यवहार करता है तो आत्मा पर पाप का बोझ चढ़ता है, जो आत्मा को दुखी-अशान्त बना देता है।

फिर जब कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग पर आत्मा को परमपिता परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है और आत्मा परमात्मा के साथ योगयुक्त होकर ईश्वरीय प्राप्तियों और अनुभूतियों में रमण कर अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव में रहती है तो पापों का बोझ कम होता जाता है और उस स्थिति में आत्मा जो सेवा करती है, उससे पुण्य का खाता जमा होता जाता है, जिससे आत्मा सम्पन्नता और सम्पूर्णता को प्राप्त करती है। अतीन्द्रिय सुख अर्थात् परमानन्द के अनुभव की स्थिति में आत्मा से जो वृत्ति और वायब्रेशन पैदा होता है, उससे जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनकर अपने सतोप्रधान सम्पन्न स्वरूप को प्राप्त करती है, जिससे आत्मा का पुण्य का खाता जमा होता है, जिसके आधार पर ही सतयुग-त्रेता में आत्मा को जड़-जंगम-चेतन प्रकृति से सुख प्राप्त होता है।

अभी हमारा परम कर्तव्य है कि हम प्रकृति प्रदत्त साधन-सम्पत्ति का कम से कम उपभोग करें अर्थात् उतना ही उपभोग करें, जिससे हमारी उपयोगिता या कार्य-क्षमता बढ़ती रहे अथवा स्थिर रहे और संगम पर परमात्मा से प्राप्त साधनों अर्थात् ज्ञान-गुण-शक्तियों के द्वारा परम-शक्ति, परम-शान्ति, परमानन्द अनुभव करते रहें और सर्वात्माओं को कराते रहें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org